बेटीक पैरुख

बेटीक पैरुख

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BETIK PAIRUKH

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-4-5

दाम: 251/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2017)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथाक सत्तैर

अपन गारि अपन दुआरि

फगुआक प्रात। ओना छल फगुआक पराते मुदा जहिना मासक अन्त तहिना सालोक अन्त तँ छेलैहे। माने ई जे फागुन सालक अन्तिम मास छी आ चैत सालक पहिल मास। फगुओ एहेन पाबैन छी जे मासक अन्तिम दिन पुरनिमा-कैँ होइए। ओना, सालमे बहुतो पाबैन होइए मुदा फगुआ सन धमगज्जर दोसरमे नहियेँ होइए।

आन साल जहिना केते गोरेक कुरसी-ब्रेंच, आगिमे–माने सम्मत जरैमे–स्वाहा होइ छल तहिना केते गोरेक टाटो-फरक होइते छल। तँए मनमे जिज्ञासा रहबे करए जे ऐ बेर की सभ भेल से तँ बुझबे अछि, तँए सबेरे-सकाल चौकपर पहुँचलौं।

ओना, चौकक रोहानी आन साल जकाँ नहियेँ छल, तेकर कारण भेल जे आन साल जेना लोक भाँग-गाँजा, ताड़ी-दारू पीब झुमबो करै छल, फगुओ-जोगिरा गबै छल आ लोकक कुरसियो-ब्रेंच जरबै छल से ऐ बेर नइ भेल।

चाह पीब पान खा घरमुहाँ भेलौं। मनमे उठल- ऐ बेरक फगुआ रीब-रीबेमे चलि गेल, मुदा नीक भेल कि अधला, से तैंये ने कऽ पबै छेलौं। जँ नीक भेल तँ पुश्तैनी परम्परामे ठेंस पहुँचै छल, जँ अधला भेल तखन तँ धीरे-धीरे पाबनियेँ मेटा जाएत..! ओना फगुआ रंग-अबीरक पाबैनक संग ढोलक-डम्फापर नाचो-गानक तँ छीहे। ...दरबज्जापर अबिते सुनलौं जे आँगनमे पत्नीक संग जेठकी पुतोहु कहा-कही कऽ रहली

अछि।

अढ़ दबि कऽ चौकीपर बैस अँगने दिस कान पाथि देलौं। ओना, फगुआक खुमारि मनसँ नइ हटल छल। खुमारि ई जे फगुआ तँ रंग-अबीरक उत्साह छी। माने जीवनक रंगक उत्साहक पाबैन...।

दरबज्जापर अबैसँ पहिने दुनू गोरे–पत्नी आ पुतोहु–मे की सभ कहा-कही भेलैन से तँ हल्लामे ने नीक जकाँ सुनि पेलौं आ ने बुझिये पेलौं, मुदा जखन कान ठाढ़ केलौं तखन सुनलौं, पुतोहु सासुकेँ कहैत रहथिन-

“सासुसँ कोनो सुख नहि भेल।”

‘सासुसँ कोनो सुख नहि भेल’ सुनि पत्नी निरुत्तर छेली तँए बकार बन्न रहैन। ओना, कोन एहेन प्रश्न अछि जेकर नीक कि अधला उत्तर नइ अछि। मुदा किछु एहनो उत्तर तँ ऐछे जे रहितो तत्काल मनमे एबे ने करैए। भरिसक सएह पत्नियोंकेँ भेलैन।

निरुत्तर सासुकेँ देखि पुतोहुकेँ आरो सह भेटलैन तँए रंग-बिरंगक प्रश्न उठा-उठा मुहेँ-काने तोपि रहल छेली...।

पुतोहुक एकभग्गु आवाज सुनि मनमे भेल जे भरिसक पत्नी पछैर रहली अछि। परिवार छी, जखने एक दिन पुतोहु सासुकेँ दाबि देती तँ दोसरो-तेसरो दिन की जे जिनगी भरि दाबिते रहती। जखने सासु दबि जेती आ पुतोहु उठि जेती तखने परिवारमे अराजकताक स्थिति बनि जाएत..!

दरबज्जापर सँ उठि आँगन दिस विदा भेलौं। पुतोहु पुवारि भागमे रहैथ आ पत्नी पछवारि भागमे। दरबज्जाक ओसारसँ जखने आगू बढ़लौं कि पत्नीक नजैर हमरापर पड़लैन। नजैर पड़िते पत्नी दरबज्जा दिस अपन बात कहए आगू बढ़ली। पत्नीकेँ दरबज्जा दिस बढ़ैत देखि अपने ओसारक निच्चेँमे अँटैक गेलौं। अँटकैक कारण भेल जे भने बेरा-बेरी दुनू

गोरे अपन-अपन बात कहती जइसँ सभ बात नीक जकाँ बुझैमे आबि जाएत।

लग अबिते पत्नी कहली-

"एना जे पुतोहु कहै छैथ जे 'सासुसँ कोनो सुख नहि भेल' से एहेन होइ?"

पत्नीक बात सुनि मनमे भेल 'एहेन होइ' आकि 'ओहन होइ' ई तँ भेल विचारक दुनियाँक बात, मुदा जैठाम झगड़ा होइए तैठाम जँ मुँह बन्न भऽ गेल तँ वएह ने हारब छी, से तँ सासु हारिये रहल छेली। होइते छै किने जे बुधिक पेंच-पाँच बुधियारीक होइए मुदा कुश्तीक पेंच-पाँच तँ तइसँ भिन्न होइए किने। कुश्तीकाल तँ जमीनपर खसाएबे ने हार-जीतक फैसला करैए...। पत्नीकेँ कहलयैन-

"अहाँ सासु भेलौं आ ओ पुतोहु भेली। जहिना ओ कहलैन जे सासुसँ कोनो सुख नहि भेल, तहिना अहूँ ने उनटा कऽ कहितिऐन जे पुतोहुओसँ कोनो सुख नइ भेल।"

प्रश्नक जवाब प्रश्ने जकाँ सुनि पत्नी झुझुएली, तँए ठमैक कऽ चुपचाप ठाढ़े रहली। ओना, बाजैथ किछु ने मुदा मनमे ई जरूर होइत रहैन जे एहेन कटगर जवाब भेटै जे पुतोहुक विचारकेँ काट करैत हुअए...।

पत्नीकेँ ठमकल देखि अपना मनमे भेल जे जनु रूचिगर उत्तर नहि भेटलैन तँए अकबकाएल छैथ। अपना जनैत तँ कटगरे जवाब सिखौलयैन मुदा भरिसक ओ जवाबक रहस्य बुझिये ने पेली। जाबे कोनो विचारक रंग-रहस्य बुझिमे नहि औत ताबे रंग-रभस केना हएत। आँखिक इशारासँ पत्नीकेँ लगमे शोर पाड़लयैन आ अपने ओसारक चौकी दिस बढ़लौं।

ओना, पुतोहु हमरा नहि देखने छेली मुदा सासुकेँ तँ देखनहि छेली

जे हारि कऽ हँसेरी आनए गाम दिस भगली, आँगनक जीत तँ भइये गेल छेलैन। जीतक खुशीमे पुतोहु दम कसलैन। ओना, दम विचारे नइ कसलैन, तेसर कियो ऑगनमे नहि छल तँए केकरा कहितथिन तँए मुँह बन्न कऽ लेलैन। खाएर जे जेना भेल मुदा शान्त तँ भइये गेली।

चौकीपर बैसते मनमे भेल जे पत्नीकेँ बुझा दिऐन जे परिवारमे सासुक अपन सीमा अछि आ पुतोहुक अपन, यएह सीमालांघन अतिक्रमण भेल, जइसँ विचारसँ बेवहार धरिक अतिक्रमण हएत। अही अतिक्रमणक रक्षा करब परिवारक सिरजनक काज भेल। मुदा अखन तँ डंकाक अखड़ाहा छी, विचारक अखड़ाहा नहि, तँए विचारक कल-पुरजासँ थोड़े काज चलत। अखन तँ कुश्तीक कल-पुरजासँ ने काज चलत, तँए कहलयैन-

“देखू, जहिना पुतोहुकेँ डेढ़ साल एना नहि भेलैन कि सासुसँ हिस्सा पुछए लगली जे ‘अहाँसँ की सुख भेल?’ -जिनका एतबो होश नइ छैन जे जे हाथ पकैड़ जीवनक भार उठा अनला, ओकर जन्मसँ अखन धरिक जे बीस बरख सेवा केलिऐ तेकर बदला पुतोहु-लग हिसाब छैन।”

हमर बात सुनिते पत्नीक देहमे फुनफुनी जागए लगलैन। भरिसक नअ मासक पेटक सेवा मोन पड़लैन। जेकरा चिड़ैक अण्डा जकाँ रूप गढ़ि ओते सुन्दर बना धरतीपर उतारि आइ धरि सेवा केलिऐ, जिनगीक पचास बर्ख जइ धरतीकेँ जन्मभूमि बुझि रंग-रंगक घर-दुआर, माल-जाल, गाछ-बिरीछ रोपि शोभा सुन्दर बढ़बैत रहलिऐ तैठाम डेढ़ बर्ख पूर्व एनिहारि भगा देत, ईहो तँ लाजिमी नहियेँ हएत।

पत्नीक मन खनहन बुझि पड़ल मुदा पुन: दोहरा कऽ पुतोहुक प्रश्नक उत्तर दइतथिन से साहसे ने होइन। अपना मनमे भेल जे सासु-पुतोहुक झगड़ा छी, समाजो ओते बेकूफ नहियेँ छैथ जे केकरो सासु-पुतोहुक रक्का-टोकीक पनचैती करए चलि औता मुदा सुनलापर किछु ने

बजता, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। एते तँ बजैक अधिकार छैन्हे जे समाजमे सबहक अपन-अपन दायित्व बनैए जे अपन-अपन परिवारकेँ एकमुहरी समेट अपन प्रदर्शनो करैथ आ सामाजिक दायित्व सेहो निमाहैथ। जँ परिवार-परिवारमे समाज ओझराएत तँ सामाजिक क्रिया-कलापमे बाधा पहुँचबे करत। मुदा ऐठाम तँ साँप-छुछुनैरक प्रश्न अछि जे जँ गीर जाएत तँ मरि जाएत आ जँ उगैल देत तँ आन्हर भऽ जाएत..!

किछु फुरबे ने करए। एक दिस पत्नीकेँ तिले-तिले तिलमिलाइत देखिऐन तँ मन थरथराए लगए आ दोसर दिस शान्त भेल झगड़ामे खोरनी चला भुमहुरक आगिकेँ फेर जगाबी सेहो नीक नहि बुझि पड़ए।

ओना, हारल सिपाही जकाँ पत्नीकेँ डेग आगू-मुहेँ नहि उठैन मुदा मनमे ई जरूर रहैन जे जहिना बोलक पटका हमरा मारलैन तहिना तेहेन कट्टुगर जवाब दिऐन जे धरतीपर खसि मुँह रगड़ती।

अपनो मनमे हुअए जे जे देशक सत्ताधारी छैथ, जइमे ऐमला-फैमला, सर-सिपाही, कोट-कचहरीक संग जहलो अछि तैठाम तँ सदिकाल एकभग्गुए पनचैती होइए आ हमरा तँ किछु ने अछि। तहूमे जे जिनगीक संगी छैथ, आगि-पानि सभमे जाइले तैयारक जिम्मा नेने छैथ, ओहो पटकाइये गेल छैथ, तैठाम जँ धड़फड़ा कऽ आगू बढ़ब आ पुतोहुक दसटा सोखर सुनि लेब सेहो केहेन हएत।

मुदा दुनूक बीच सामंजस करब सेहो नान्हिटा बात नहियेँ अछि। नान्हिटा बात ई जे जखने परिवार सासुक संग पुतोहुओक छिऐन तखने सबहक सझिया परिवार छीहे। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे जैठाम एकटा पटकनिहार आ दोसर पटकाएल रहत तैठाम उचित बातक मानि थोड़े हएत..!

किछु केने किछु बनिते ने रहए। अन्तो-अन्त यएह विचार भेल जे जे पत्नी अपने बात नइ बुझि पेब रहली अछि तिनका मनमाफित बात

बुझा दिऐन जइसँ ओ झगड़ाक मुहरी पकड़ती आ पछाइत बीचमे पड़ि दुनूकेँ अपन-अपन बात बुझा देबैन। मानती सेहो बढ़ियाँ नइ मानती सेहो बढ़ियाँ। ओना, लोकक एहेन धारणाक परिवेश बनियेँ गेल अछि जे जेरमे रहइ ने चाहि रहल छैथ, कि जानि सोचि रहल छैथ से तँ ओ जानैथ, मुदा मनुक्ख जँ मनुक्खक संग नहि रहत, तँ ओकरामे मनुक्खपन केना औत आ जँ मनुक्खपन नइ औत तखन ओ केते मनुक्ख भेल?

जे बुधिक आर अपने आड़ि-धूर सीमा-सरहद बना दुनियाँमे नइ चलत ओ केते दूर इचना माछ जकाँ चलिये सकैए आकि नोनी साग जकाँ चतड़िये सकैए। ओ तँ सोलहन्नी ताड़क गाछ जकाँ बिनु डारि-पातक गाछे ने बनल रहत। जइसँ ने चिड़ैयेकेँ छाँह भेटत आ ने लोकेकेँ फल। पत्नीक रूप तहिना बुझि पड़ैत रहए, तहूमे आगूमे ठाढ़ भेल छेली। मन पसीज गेल। बुझबैत बजलौं-

“जहिना पुतोहु कहली जे ‘सासुसँ कोनो सुख नइ भेल’, तहिना जँ अहूँ उनटा कऽ कहबैन तखन ने ओ बुझती जे अपन गारि अपना दुआरि केना गड़ल अछि।”

जहिना ओसमे ओसाएल वा पानिमे नहाएल चिड़ै अपन पाँखि झाड़ि फड़फड़ाइए तहिना पत्नी बुझि पड़ली। मुँह झाड़ि बजली-

“जँ पुतोहु किछु पुछि दैथ तखन दोहरा कऽ की बाजब?”

पत्नीक बात सुनि मन ममताए लगल, आखिर किछु छैथ तैयो ऊपरक सीढ़ीक तँ छथिए। जइसँ किछु बेसी हक-हिस्सा बनिते छैन। जँ परिवारमे परिवारजनकेँ उचित स्थान नइ भेटौ तँ अराजकताक स्थिति लाजिमीए। बजलौं-

“देखू पहिने बेटा तखन पुतोहु। पुतोहुओकेँ जँ कोनो समस्या छैन तँ ओ परिवारमे पतिक माध्यमसँ राखैथ, ओइ समस्यापर विचारब सबहक दायित्व अछि, मुदा ओ विचारधाराक रूपमे।”

हमर बात सुनिते पत्नीकेँ जेना मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते मनसुआइत उनैट कऽ आँगन दिस बढ़ली। तही बीच पुतोहुओ सासुकेँ पछुअबैत, कनसोह लैत बढ़ली।

तीन कोण जकाँ तीनू गोरे भऽ गेलौं। ओना ओ दुनू गोरे ठाढ़ छेली आ अपने बैसल छेलौं मुदा छेलौं, तीन कोण जकाँ। तीनूक मनमे अपन-अपन विचार नचिते छल। ओना, पुतोहुकेँ देखि सासु थोड़े सहमली। मुदा आगूमे बैसल देखि हूबा बढ़िते रहलैन। होइतो अहिना छै जे जँ गलती काज केलाक पछाइत कियो केकरो हाथे मारि खा नेने रहैए, तेकरा देखिते नजैर कनी निच्चाँ भइये जाइ छइ। ओना, केकरो हाथे मारि खाएब दुनू रंगक अछि। उचितोपर अछि आ गरउचितोपर अछि। उचितपर गलती काज भेला पछाइत होइए आ गरउचित ओ भेल जे बलउमकी वा बलधकेल होइए। मुदा ऐठाम तँ मात्र वैचारिक अछि, जे तेसर तरहक समस्या भेल। मुदा विचारोक तँ अपन उठा-पटक अछिए। किछु एहेन अछि जे पटकाइ-जोकर अछि आ किछु उठै-जोकर अछिए। ओहीमे कल्याण-अकल्याण केतौ नुकाएल अछि मुदा ओकरा के देखत। मनमे अबिते उत्कंठा जगल। जगिते मुस्की दैत पत्नी दिस तकलौं। हमरा मुस्कीसँ पत्नीकेँ की भेटलैन, से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे पत्नीक मनक हूबा हूबघटूसँ हूबबढ़ू भऽ रहल छैन।

ओना गहुमनक पोआ जकाँ पुतोहु लहलहाइत रहैथ मुदा विचार एते मनमे रहबे करैन जे बुढ़ी परोछमे बुड़हाकेँ की सभ कान भरने छैथ से पहिने बुझि लेब, तखन उत्तर देब नीक हएत।

अपना विचार उठैत रहए जे जखन आगू भऽ पुतोहु बजती, तँ पत्नीकेँ बुझा-सुझा देबैन जे जहिना अपन बेटी तहिना परायाक बेटी, जँ अपन बेटी एहेन गलती केने रहैत तखन की करितिऐ। तहिना पुतोहुओ अखन किछु अछि तँ डेढ़े सालसँ ने ऐ घर-दुआरिमे, सासु-ससुरक बीच अछि। ई तँ सभकेँ ने बुझए पड़त जे माए-बापक घर सिरिफ माइये-बाप

तक समतल नइ अछि, ओइ गामक समाजक लोक, पाबैन-तिहार, आचार-विचार, खान-पान, काज उद्यम सभ किछु ने समाज बदलने (गाम बदलने) प्रभावित होइए। तैठाम नव गामक बास, नव लोकक चास आ नव-नव सभ किछु भेने किछु-ने-किछु कोनो-ने-कोनो रूपमे भेटबे करै छै, तैबीच सामंजस करब बाल-पोथीसँ काज नइ ने चलत। पोथी तँ पोथी छी, लोक बुझैए- लुक्खी आ पोथी बुझैए- गिलहरी। तैठाम ने बाल-बोधकेँ बुझाएब अछि जे बौआ दुनियाँ देखैमे भाषे तेतेक अछि, जेकरो बुझब जिनगीसँ फाजिल अछि, तैठाम दुनियाँकेँ देखब ओते असान अछि।

ओना पुतोहुक मनक तहमे जे रहल होनि मुदा अपन मन कहैत रहए जे परिवारक रोच पुतोहुक विचारमे जरूर छैन। तँए मुँह बन्न कए किछु सुनए चाहि रहली अछि।

मुदा अपनो की बाजब से फुरबे ने करए। किएक तँ मन टघैर कऽ झगड़ाक जड़ि दिस घुसैक गेल छेलए, जइसँ विचारक सभ मुँह एकमुहरी जकाँ भऽ गेल, तँए मनमे किछु रहबे ने करए। फेर हुअए जे कनियेँ पहिने अँगनामे आगि धधकै छल आ लगले एना पनिया केना गेल। खढ़ो-नारक छारक घरमे आगि लगै छै तैयो ओकर खुट्टा-खाम्ही सात दिन तक आगि जोगौने रहैए आ ऐठाम तँ मनुक्खक विचारक आगि छी। जेकर आदिये अन्त ने अछि। तखन तँ लोक हारि कऽ यएह ने करत जे जेते दिन जीबै छी तेते दिनक अपन भार अछि, तँए ओकरा भारी बना नहि, भारपन बुझि निमाहैत चलैक अछि। मुदा लगले एकटा जुक्ति फुरल। फुरिते पुतोहुकेँ कहलयैन-

“चौक पर तेहेन ने चाहबला चाह पिऔलक जे मन अखनो भभाइते अछि, तँए पहिने चाह पिआउ। परिवारे छी भरि दिन लागल रहब तैयो ने अन्त लेत।”

खग जानए खगक भाषा, पुतोहु बुझि गेली जे फगुआ दुआरे दूधबला आएल नइ हेतइ, तँए बिनु दूधेक चाह भेल हेतैन। जँ दूधबला पीने रहितैथ तखन ने फोकराइन कहितैथ। जखन मने भभाएल छैन तखन विचारो ने तेहने हेतैन।

दरबज्जापर सँ ससैर पुतोहु आँगन दिस चाह बनबए गेली।

पुतोहुकेँ हटिते पत्नीकेँ कहलयैन-

"पहिने पानि पिआउ जे मन शान्त रहत तँ चाहो पीबैमे नीक लागत।"

हमर बात सुनिते पत्नी आगू बढ़ि हिया कऽ चापाकल दिस देखली जे पुतोहु केतली-गिलास धोइ अनली की नहि। मुदा चुल्हि पजारि पुतोहु चाह बनबै छेली, तँए पत्नियोँ अपन देहमे पानि आनि पानि आनए कल दिस बढ़ली।

दूटा गिलासमे पुतोहु चाह नेने दरबज्जापर एली। चाह देखि अपन मन हरिया गेल। हरियाइक कारण भेल जे पुतोहु सासुकेँ सासु जकाँ आदर कैये रहली अछि। मुदा पत्नीक मन घुर-बहूर करए लगलैन। घुर-बहुर ई जे बिनु झगड़ा फरिछेने माने बिनु कहा-कही भेने पुतोहु हाथक चाह नहि पीब। मुदा लगले ईहो होनि जे पुतोहु तँ चौकीपर चाह पतिक आगूमे रखि देलैन। जँ अपना विचारे नइ उठाएब आ जँ पति कहैथ, तखन हारल नटुआक झुटका बीछब हएत। तँए नीक हएत जे जखने चाहक गिलास, चाह पीबैले पति उठेता तखने हमहूँ उठा लेब। यएह भेल। दू घोंट चाह पिबते बजलौं-

"बड़ निम्मन चाह बनल अछि। चाह-चिन्नी आ दूध-पानि मिला लोक चाह बनैबते अछि, मुदा जे जेहेन तकतियान केनिहारि अछि ओ ओहेन ताककेँ पकैड़ बनबै छैथ आ जे तकतियान केनिहारि नहि अछि ओ किछुसँ किछु कए चाहक सेखिये उतारि दइए।"

बाजि पुतोहु दिस नजैर उठेलौं तँ पुतोहुक मनमे खुशी बुझि पड़ल। ओना, पत्नीक मन सुक-पाक करैत बुझि पड़ल। सुक-पाकक कारण पत्नीक जे रहल हौनु मुदा अपना बुझि पड़ल जे ओ चाहि रहली अछि जे पति चाहकेँ दुसि देथुन। ओना, अपना मनमे ईहो होइत रहए जे आने भनसिया जकाँ जँ पुतोहुओ चाह चीख नेने होथि आकि पछातिये पीबैथ, तँ की ओ नै बुझती? बुझबे करती। हुनका कि मुँह-कान नइ छैन जे नीक आकि अधला की भेल से बुझती।

चाह पीब पुतोहुक हाथमे गिलास थमा देलिऐन। गिलास नेने पुतोहु आँगन दिस बढ़ली। तैबीच अपने हाँइ-हाँइ कऽ पान लगा खेलौं। मुँहमे पान फुलाएलो ने छल, कोढ़ियाएले छल, कि पुतोहु सेहो आँगनसँ पहुँच गेली। ओना, तीन कोण जकाँ तीनू गोरे रही मुदा तीनूमे कियो किछु बजैत नइ रही। सभ सबहक बात सुनैले सबहक मुहेँ तकैत रही...।

समगम वातावरण देखि मनमे उठल जे जइ बात-ले दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भेल तेकरा छोड़ि अपनो आ परिवारोजनक सीमा-सरहद अपने जे बुझै छी से हिनको सभकेँ बुझा दिऐन। केते दूर तक विचार मनमे गड़ै छैन आ कि नइ गड़ै छैन से तँ पछाइत ने बुझब, तेकर पछाइत बुझल जाएत।

पुतोहु दिस तकैत बजलौं-

“देखू, अखन परिवारक नीक-बेजा बजैक सोल्होअना भार हमरा ऊपर अछि, जँ समाजोकेँ कहबैन तँ ओहो कहता जे घरक जे गार्जन छैथ पहिने ओ ने अपन भार निमाहता, जखन अपना बुते नइ हेतैन तखन दर-दियाद आ अड़ोसिया-पड़ोसियाक पछाइत ने समाज अबै छैथ, तँए परिवारक बात छी सभ अपन-अपन अधिकार आ कर्तव्य बुझब तखने ने परिवार चैनसँ चलत।”

ओना, पत्नीक मनमे कनी कछमछी बुझि पड़िते छल मुदा पुतोहु

शान्तचित्त जकाँ बुझि पड़ली। अपन नजैर पुतोहुक नजैरपर अँटैक गेल जे पुतोहुओ बुझि गेली। बजली-

"हम कहाँ चाहै छी जे परिवारमे अट्ठा-बज्जर खसए..?"

पुतोहुक बात सुनि मन शान्त भऽ गेल। शान्त होइते बजलौं-

"देखू दुनियाँमे जेते मनुक्ख ऐ धरतीपर अबैए, सभकेँ अपन-अपन कालबद्ध सीमा छइ। बच्चामे जन्म लइए, माता-पिताक आश्रयमे ओ ठाढ़ होइए, पछाइत बिआह-दान भेलापर परिवारक जवाबदेह लोक बनैए।

जवाबदेह लोक बनला पछाइत एक दिस वृद्ध माए-बापक सेवा आ दोसर दिस बाल-बच्चाक सेवाक भार उठा चलैए। पछाइत माता-पिताकेँ अन्त भेने परिवारक सभसँ ऊपर पहुँच परिवारकेँ नीकसँ नीक दिस बढ़बैक परियास करैए।"

बिच्चेमे पत्नी टोकि देली-

"से अखुनका लोक थोड़े बुझैए।"

ओना, पत्नीक इशारासँ बुझि पड़ल जे पुतोहुपर झटहा फेक रहली अछि। मुदा तैबीच पुतोहु किछु बाजल नइ छेली। बजलौं-

"अखुनका लोक–माने नवतुरिये नहि–जे अखन धरतीपर छैथ से सभ भेला। तँए सभकेँ अपन-अपन परिवारक प्रति अधिकार आ कर्तव्य दुनूकेँ निमाहैत चलैक छैन। जैठाम चारिटा बरतन एकठाम रहैए तैठाम विचारक भिन्नताक कारणे कनी-मनी टोना-टोनी होइते अछि।"

❑

शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017

बेटीक पैरुख

पचहत्तैर बर्खक फुलकुमारीक देहक पानि अखनो ओहिना जलजलाउ छैन जेना ढेरबामे रहैन, माने ढेरबामे जे चढ़लैन ओ अखनो चढ़ले छैन।

बैशाख मासक एगारह बजेमे मारन बाधसँ पुतोहुक संग घास नेने फुलकुमारी आँगन नहि जा सोझे मालक थैरक छाहैरमे आबि बैसली। छाहैरमे बैस अपन देहक थकानो हेट करए लगली आ गाइयो-बच्चाकेँ हिया-हिया देखए लगली। देखैत-देखैत जेना-जेना देहक थाकैन कमैत गेलैन तेना-तेना गाइक सिनेह मनमे उठैत गेलैन। उठैत सिनेहसँ सिनेहासिक्त होइत फुलकुमारी अपन दुनू हाथ जोड़ि आठ किलो दूधवाली गाएकेँ प्रणाम करैत पुतोहुकेँ कहलखिन-

“छोटकी, एक लोटा पानि नेने आबह।”

‘छोटकी’ माने भेल ‘छोटकी पुतोहु’, नाओं छिऐन जलेसरी। नि:सन्तान एवं बैधव्य जीवन-यापन करैत जलेसरी करीब चालीस बर्खक अछि। दुइए सासु-पुतोहुक परिवार छैन।

बच्चेसँ फुलकुमारी नैहरेमे रहल जइसँ सासुर बसैवाली औरतसँ बेसी बजैक संस्कार रहबे केलइ। ओना समाजमे बेटी-जातिक विचारकेँ कम आँकल जाइए जइसँ ओकर कटाहो बातकेँ तन्नुक बुझले जाइए। तन्नुक आँक रहने ने गड़ैक सम्भावना आ ने गड़ला पछाइत विसविसाइयेक।

फुलकुमारीकेँ दू सन्तान भेलैन, दुनू बेटे। जेठ जीबछ आ छोट राधेश्याम। जीबछ नोकरी करए बम्बइ गेल। कपड़ाक एकटा कारखानामे नोकरी भेलै, तैबीच बिआहो भेलइ। बिआहक दू सालक पछाइत पत्नियोकेँ बम्बइये लऽ गेल। अखन जीबछकेँ चारिटा सन्तान–तीनटा बेटा आ एकटा बेटी–छइ। चारू हाइ स्कूल-सँ-कौलेज धरि पढ़ैए।

बम्बइ गेला पछाइत जीबछ चारि-पाँच साल तक गामकेँ बिसरल नहि। मासे-मास रुपैओ पठबै आ साले-साल एबो करइ। जीबछेक लाटमे राधेश्यामो बम्बइ गेल। ओकरो ओही कारखानामे नोकरी भेलइ। ओना, राधेश्यामकेँ बम्बइक पानि नइ पचलै, रसे-रसे रोगाए लगल। छह मास बम्बइमे इलाजो करौलक मुदा रोग कमलै नहि जे बढ़िते गेलइ। ओना, सेवो जइ रूपेँ हेबा चाही से नै भेने निराश भऽ राधेश्याम गाम चलि आएल। जेहेन इलाजक आ पथ्य-पानिक जरूरत छेलै से गामोमे नइ भेने थोड़बे दिनक पछाइत रोधेश्याम मरि गेल।

राधेश्यामकेँ तीन साल पहिने बिआह भेले छेलइ। सन्तान-शखा एकोटा ने भेलै, तइ बिच्चेमे ई दुनियाँ छुटि गेलै, छुटि कि गेलै जे छोड़ि कऽ जाए पड़लै।

पतिकेँ मुइला पछाइत जलेसरी मनमे रोपि लेलक जे दोसर घर नइ जाएब। माने दोसर बिआह नइ करब। ओना समाजो तँ समाजे छी, जइमे सबहक अँटावेशो होइए आ सभ रंगक नियमो-बेवहार चलिते अछि। सभ नियम ई जे एहनो नियम ऐछे जे बिआहक पछाइत जँ पति मरि जाए तँ पत्नीकेँ दोसर बिआह वर्जित अछि। माने ई जे जीवन भरि विधवा बनि जीबह। ई भेल लड़की लेल नियम, मुदा ओहीठाम लड़का लेल एहेन नियम नहि अछि। ओ दोसर-तेसर कि जे दर्जनो बिआह कए सकैए।

तहिना समाजमे किछु जाति एहेन अछि जइमे लड़का-लड़की–

माने बिआहक पछाइत पति-पत्नी–मे कियो मरौ, माने ‘पत्नी’ मरौ आकि ‘पति’, दुनूकेँ दोसर-तेसर बिआह करैक अधिकार अछिए। तैसंग ईहो होइते अछि जे जइ जातिमे दुनूकेँ माने जहिना लड़काकेँ तहिना लड़कीकेँ दोसर-तेसर बिआह करैक अधिकार रहितो जँ दोसर-तेसर नइ करए चाहैए तँ सेहो बड़बढ़ियाँ–माने नहियोँ कए सकैए। ओना चोरा-नुकी दुनूक संग चलिते अछि, माने जइ जातिमे लड़कीकेँ दोसर बिआह करैक अधिकार नइ छै, चोरा-छिपा कऽ ओहूमे कैये सकैए, मुदा से भेल समाजसँ छीप कऽ करब। हलाँकि समाजो तैपर सँ अपन नजैर छीपिये लइए आ छीपिते नहि अछि बल्कि छिपाएल धन जहिना लोक धीरे-धीरे बिसैर जाइए तहिना रसे-रसे बिसरियो जाइते अछि। मुदा तँए ई कहब जे नियम ढील भऽ बदैल गेल, सेहो नहियेँ भेल अछि। अखनो जीवित अछि आ कहिया तक जीवित रहत सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

घास झाड़ब छोड़ि छोटकी पहिने सासुक आदेश पूरबए विदा भेली। कलपर पहुँच हाथ-पएर धोइ कऽ पहिने अपने भरि छाँक पानि पीब लेली। पछाइत, बैशाख मासक गरमाएल लोटा जे आँगनमे बैसल-बैसल तबि गेल छल, तेकरा कलपर आनि चिक्कनि माटि नहि छौरसँ मजली।

चिक्कनि माटिसँ नइ माजैक कारण भेलैन जे माटिक राखल ढेरी लग जलेसरी नइ गेली, कलक बगलमे राखल छौरक ढेरीपर नजैर पड़ि गेलैन, ओहीमे सँ एक मुट्ठी छौर लऽ लेली।

छौर-पानिसँ भीतर-बाहर रगैड़ते लोटाकेँ ताउ शान्त होइत-होइत सभ तामस मिझा गेल। तामस मिझाइते धुआइओ गेल। धुएला पछाइत कण्ठ लगतक पानि भरि छोटकी सासुकेँ दइले बढ़ली, तैबीच शान्त भेल लोटा मने-मन छोटकीकेँ असिरवाद देलकैन जे ओ हमरा फुलकुमारी लग पहुँचबैत-पहुँचबैत कंचन बना देलक जइमे अमृत रूपी जल अछि। अमृतो तँ वएह ने छी जे जिनगी दइए। जखने मुहसँ प्रवेश करैत अमृत

रूपी पानि नाभिकुण्ड लग पहुँचैए तखने ने शान्त-चित्तक किछु अवधि बढ़ि जाइ छै, जइसँ ऐगलो काजक मुहरी जागि-जागि जिनगीक संग चलैत रहैत अछि। सएह फुलकुमारियोक संग भेल। गाएपर नजैर अँटकौने फुलकुमारी मने-मन प्रणाम करैत बजली-

"हे लछमी माता! अहीं एहेन दाता छी जे अपने बच्चा जकाँ हमरो दुनू सासु-पुतोहुक रछिया करै छी।"

गाइक लक्ष्मी रूपकेँ देखिते फुलकुमारी आराधना करए लगली, माने अपन कतर्व्य-कर्मकेँ अराधए लगली। तैबीच छोटकी पानि भरल लोटा नेने आबि लगमे ठाढ़ भऽ गेली। जेकरा फुलकुमारी नइ देखि रहल छेली, किएक तँ आराधनामे नजैर तेना अँटैक गेल छेलैन जेना जीवन भेटला पछाइत एक संग मन-मस्तिष्क दुनू अँटैक जाइत अछि।

फुलकुमारीक बन्न आँखि देखि छोटकीकेँ बुझि पड़लैन सासु ओंघा रहली अछि, सिनेह भरल स्वरमे बजली-

"माए, लगले आँखि लागि गेलैन?"

होइतो अहिना छै जे किछु भेटला पछाइत खुशीसँ आनन्दक ओंघी सेहो अबिते छइ।

निमग्न फुलकुमारी पुतोहुक बात सुनिते अकचका कऽ बजली-

"नहि! ओंघाइ नइ छी कनियाँ, गाइक रूइयाँपर नजैर पड़ि गेल छेलए।"

रूइयाँ देखब, माने दुधारू गाइक प्रमुख लक्षणकेँ देखब छी, ई बात छोटकीकेँ बुझले रहैन। बजली-

"घासो झाड़ब पछुआएले अछि।"

आशा भरल शब्दमे फुलकुमारी बजली-

"ऐठाम लोटा रखि दहक आ घास झाड़ए चलि जा।"

छोटकी सएह केलक।

पानि पीला पछाइत फुलकुमारीक नजैर फेर गाइयेपर जा कऽ अँटैक गेलैन। अँटैकते मन विस्मित हुअ लगलैन। विस्मित ई जे जहिना अपन जिनगी अछि तहिना ने गाइयोक अछि। ओना, दुनूमे ई अन्तर ऐछे जे धनक भण्डार रहितो गाएकेँ अपन जिनगीक रक्षा करैक लूरि-बुधि नइ छै तँए, ने अपने रक्षा कऽ सकैए आ ने बच्चेक आ ने अपन दूधेक उपयोग अपनासँ कऽ सकैए। मुदा मनुक्ख तँ से नहि छी। सभ किछु कऽ सकैए। तँए जँ दुनूक सम्बन्ध बनल रहत तँ एक-दोसरक आशापर असानीसँ जीवन-यापन कऽ सकै छी।

गामक बेटी फुलकुमारी। दू कट्ठा घराड़ी पिताकेँ रहैन। पिता–सिंहेश्वर–किसानी जिनगीसँ जुड़ल छला। खेत-बोनिहारक रूपमे जे सोल्हे बर्खक अवस्थामे सिंहेश्वर जीवन धारण केलैन ओ ता-जिनगी धारण केनहि रहला। किसानी जिनगीक अधिकांश लूरि सिंहेश्वरकेँ रहबे करैन। हर जोतब, रोपैन करब आ कमठौन करबक संग घर बन्हैक सभ लूरिसँ सम्पन्न छला।

सिंहेश्वरक पहिल पत्नी पहिल सन्ताने होनिहारिक समय मरि गेली, आ बच्चो माइये संग मरि गेल। परिवारमे दोसर-तेसर नइ रहने, असगरे सिंहेश्वर पेटक ओरियान करितैथ कि पत्नीक सेवा-टहल।

अपना आँखिसँ सिंहेश्वर पत्नीयोँ आ बच्चोकेँ मरैत देखने छला, मुदा जिनगियो तँ जिनगी छी, सभकेँ जीबैक आशा रहिते अछि। ओना, सामाजिक नियमो आ अपन टुटल मनोक चलैत सिंहेश्वर साल भरि तक उपारजनक संग अपने हाथे भानसो-भात करैत रहला। मुदा साल भरिक पछाइत समाजो दवाब दैत सिंहेश्वरकेँ कहलकैन-

“दुनियाँमे अहींटा केँ एहेन गति नहि भेल, बहुतोकेँ भेलैन। तँए जखन मनुक्खक जिनगी भेटल तखन मनुक्ख जकाँ ने परिवार बना

पारिवारिक जिनगी जीब।"

समाजोक विचार आ अपनो जिनगीक खगता देखि सिंहेश्वर दोसर बिआह केलैन। दू सालक पछाइत दोसर पत्नीसँ फुलकुमारीक जन्म भेल। तीन सालक जखन फुलकुमारी छल तखने मइटुग्गर भऽ गेल। माने सिंहेश्वरक दोसर पत्नी सेहो ऐ दुनियासँ चलि गेली।

दोसर पत्नीकेँ मुइला पछाइत सिंहेश्वर तेसर बिआह नहि केलैन। केतबो समाजक लोक रंग-रंगक तर्क दऽ बुझबैत रहलैन मुदा किनको बात नहि सुनला।

सिंहेश्वर दू-दूटा पत्नीक मृत्युक संग पहिल सन्तानक मृत्यु देखि चुकल छला। दुनूक कष्ट-पीड़ा आँखिक सोझमे नचिते रहै छेलैन, तैसंग ईहो आशा मनमे जागिये गेल छेलैन जे जखन तीन बर्खक सन्तान ऐछे तखन वंशो तँ आगू बढ़बे करत। एकरे नीक जकाँ पोसब-पालब। पोसै-पालैमे चारि-पाँच बर्ख धरि किछु बेसी परेशानी हएत, सएह ने। हएत तँ हएत। जखन मनुक्ख बनि धरतीपर जन्म लेलौं तखन जँ अपन भार अपने नइ उठा चलब, तँ जेकर आशा हम करब ओकरो तँ अपन जिनगी छै, अपन बाल-बच्चा छै, अपन परिवार छइ। सभ ने अपन-अपन परिवार चलबैमे लागल रहैए। आब तँ फुलकुमारी तीन बर्खक भेल, छहमसिया बच्चा जकाँ तँ नहि अछि जे भरि दिन देह धरा राखए पड़त आ माइक दूधो दिऐ पड़त। अन्नो-पानिपर फुलकुमारी जीविये सकैए।

पाँच बर्ख टपला पछाइत फुलकुमारी आँगन-घरक किछु-किछु काज करए लगल। आठ बर्ख अबैत-अबैत भानसो-भात आ घरक आनो-आनो काज सम्हारए लगल। तैसंग सिंहेश्वर असगरूआ जिनगी जीबैक लूरिक अभ्यस्त सेहो होइत-होइत भइये गेला।

बाल-विवाहक चलैन समाजमे सभ दिनसँ आबि रहल अछि। ओना, बाल-विवाहक प्रश्नपर समाजमे सभ दिनसँ विभाजन रहल आ

अखनो अछि। बालो-विवाहक अपन उत्तर अछिए। उत्तर ई जे बेटा-बेटीक बिआह-दान करब माता-पिताक धार्मिक काजसँ जोड़ल अछि। धार्मिक काज भेल ओहन काज जे जिनगीसँ जुड़ल अनिवार्य काजक श्रेणीमे अबैत अछि। अनिवार्य तँ ऐछे जे वंशकेँ आगू बढ़ैक सीढ़ी छी। मुदा ओहन काज रहितो जँ माता-पिता बेटा-बेटीकेँ बीस-पच्चीस बर्खक जुआन बनबए चाहता आ बिच्चेमे अपने चलि जेता तखन जिनगीक काजक पूर्ति केना हेतैन। जँ पूर्ति नहि हेतैन तखन अधरमी तँ भेबे केलाह किने। जखन अधरमीक विचार मन मानि लेतैन तखन तँ नर्कक भागी भऽ गेला किने। एक तँ ओहुना कियो नर्क नहि जाए चाहैए, मुदा जँ कियो धोखा-धोखीमे चलि जाएत से आ बुझलमे जाएत से, दुनू एक रंग थोड़े हएत। जानि कऽ नर्क जाएब बेसी कष्टकर होइ छइ। तँए केकरो अपन मन जानि कऽ एहेन विचार देत? नहि देत।

ओना, समाजोक बन्धित चलैन आ आँखिक देखल अपन परिवारो तँ सिंहेश्वरकेँ छेलैन्हे, तँए सातमे बर्खमे बेटी–फुलकुमारी–क बिआह कऽ देलखिन।

आइये नहि पहिनौं लोक परदेश खटिते छला। कलकत्ताक पटुआक कारखानामे लड़काक पिता नोकरी करै छला आ बाल-बच्चाक संग पत्नी गामेमे रहै छेलैन। तँए ओहन परिवारकेँ परदेशी परिवार नहियेँ कहल जा सकै छल, तँए भीतर-बाहरक विचार नइ रहने सिंहेश्वरक कुटुमैती माने बेटीक बिआह ओइ परिवारमे भेलैन। ओना समाजक किछु विचारवानक विचार स्पष्ट रहैन जे ग्रामीण परिवेश आ शहरी परिवेशमे जिनगीक सभ कथुमे अन्तर आबिये जाइ छै, जइसँ केतौ-ने-केतौ जिनगीमे बेवधान उपस्थित होइते छइ।

ओना, आन कारण जे लड़काक पिताक रहल होनि मुदा मूल कारण छेलैन जे बारह घन्टा चटकलमे काज केलाक पछाइत पान-सात गोरेक परिवार शहरमे चलब कठिन भऽ जाइन। मुदा गाम तँ गाम छी,

गाममे लोक नोनियोँ साग खा साए बर्खक जिनगी हँसैत-खेलैत काटिये लइए। मुदा जे हौउ, कलकतिया लोक तँ बरागत छेलाहे तँए आगू-पाछू किछु-ने-किछु जनिते छला।

फगुआमे लड़काक पिता–मोतीलाल–गाम एला। सिंहेश्वरक पिसियौत बहिन ओही गाममे बसैत, तँए हुनके अगुआइमे बिआहक गप-सप्प शुरू भेल। ओना, बहिनकेँ घटक नहियेँ कहि सकै छिऐन आ ने बिआह-दानक दलाल। ओ तँ घटकैतीक रस्ताक राही भेली। तहूमे ओहन राही जे राहगीर बनबैमे सहयोगी होइथ। ओना, एहेन सूत्र सूत जकाँ गाम-गाममे पसरल ऐछे आ कथा-कुटुमैतीमे सक्रिय रूपमे चलितो अछिए।

फुलकुमारीक बिआह नअ बर्खक विनाशक संग भऽ गेल। टुकधुम करैत विनाश गामक स्कूल धेने छल तँए नाम-गामसँ लऽ कऽ परगना तक बुझल रहइ।

सिंहेश्वर अपन बेटीक बिआह ओहन लड़कासँ करैक विचार मनमे रखने छला जेकर चमड़ी काज करै-जोकर होइ।

पाँच गोरेक संग सिंहेश्वर अपनो घर-वर देखए अन्तिम विचारक दिन मोतीलालक ऐठाम गेला। अखन तक पिसियौते बहिनक माध्यमसँ गप-सप्प होइत रहल छल। जइमे सहमतक झलकी तँ छेलैहे।

एक तँ ओहुना गामक ओहन बच्चा जेकर पारिवारिक आमदनी कम छै, ओकर जिनगियो तेहने–माने बगे-बाणि आ रहन-सहन–रहल अछि। तहूमे कलकतिया परिवार तँ भइये गेल छल तँए मनसँ सिंहेश्वर मानि लेलैन। ओना, ई प्रश्न पहिने उठि गेल छल जे लड़काकेँ जँ अपन नाम-गाम लिखल हेतै तँ कुटुमैती कैये लेब।

एक गोरे पितेक सोझमे लड़काकेँ नाओं-गाँओं लिखैले कहलैन, जे विनाशकेँ लिखल भऽ गेलैन। तैपर लड़काक पीठ ठोकैत हुनकर पिता

ईहो आश्‍वासन दैत सभकेँ सुना देलखिन-

“बिआहक पराते लड़काकेँ कलकत्ता लऽ जाएब। ओतै पढ़ेबो-लिखेबो करबै आ चटकलमे काजो सिखेबै।”

विह्वल सिंहेश्वर आश्वासन दैत बजला-

“बैशाखमे काज सम्हारि लेब।”

ओना मोतीलालक गीध-दृष्टि सिंहेश्वरक अढ़ाइ कट्ठा घराड़ी-बाड़ीपर अँटकल छेलैन, जेकरा ओ खुलि कऽ नहि बजै छला, तेकर कारणो छल जे चारि भाँइक भैयारीमे सतरह धूर घराड़ी अपना छेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ीकेँ घराड़ियो बास हएब कठिन छेलैन्हे। ओ समैयो नहियेँ छेलैन जे कलकत्तामे बासक चर्च-बिचर्च मनमे उठितैन। तँए सोलहन्नी गामेक आशा मनमे रहैन। ओना कखनोकाल खास कऽ जाड़क मासमे जखन चटकलसँ भरि देह पटुआक रूसी लगले डेरा अबैथ आ नहाइक समय रहै छेलैन, तखन मने-मन तामसो उठबे करै छेलैन जे जइ गाममे बसैयो-जोकर–ओना बसबक विराट रूप अछि, मुदा अखन से नहि, अखन एतबे जे रहै-जोकर जमीन घरक लेल–जमीन नहि अछि तइ गाममे रहिये केना सकै छी। ओना, तामस उठला पछाइत मोतीलालक मनमे ईहो एबे करै छेलैन जे जे भोज नइ खाइ ओइमे पारा मरौ आ जइ गाममे बसैयो-जोकर खेत नहि तइ गाममे साँझ-भोर नढ़िया-कुकुर भुकौ...। मुदा बेवस मनक बेवसी विचार कैये की सकैए। ओना करैले दुनियाँ बड़ीटा अछि, मुदा केनिहारो बड़ीटा हुअए तखन ने, से तँ बुझले बात अछि जे जँ कमेने होइत तँ गरिबोहोकेँ होइत जे भरि दिन कोदारि तमैए...।

बैशाख मास, फुलकुमारीक बिआह भेल। ओना गाम-घरमे–माने जैठाम फुइसिक घर अछि–बैशाखक लगन माने बैशाखमे बिआहक दिन खतरनाक अछिए। कखन हवा-बिहाड़ि उठि जाएत आ भानसेक आगिसँ

घरो जरि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहियेँ अछि। मुदा फुलकुमारीक बिआहमे से नहि भेल। तीन दिन पहिने तेहेन निराउ बरखा भऽ गेल जे फागुनोक लगनक दिनसँ बेसी सोहनगर बना देलक।

एक तँ शहरी वातावरण दोसर पढ़ै-लिखैक सुविधा रहने मोतीलाल अपन बेटाकेँ मैट्रिक तक पढ़ा लेलैन। किछु-किछु अपन काजो, देखा-देखी सिखेबे केने छला तँए मनमे ईहो आशा रहबे करैन जे जखन चटकलक बिसवासू नोकर छीहे तखन धियो-पुताकेँ काज किए ने चटकलक मालिक देता। मुदा मनमे ईहो खरोंच उठबे करैन जे जखन अपने छेहा अनपढ़ छी तखन जँ लेबरक काज करै छी तँ बड़बढ़ियाँ, मुदा बेटा तँ पढ़ल-लिखल मैट्रिक पास अछि, ओकरा किए ने ऑफिसमे बाबूक काज हएत..?

विचार तँ मोतीलालक अनुकूले रहैन मुदा ई बात मनमे उठबे ने करैन जे जहिना घोंदा-घोंदे लेबरकेँ धिया-पुता सुतपुतिया भँट्टा जकाँ फड़ैए, तहिना जँ कररवनो फड़ै तखन ने अँटावेश हएत, जँ से नइ फड़त तँ अपन मनक सपना सुतली रातिक सपना जकाँ फूसि हएत की नहि।

ओना, पेंशनक बेवस्था सेहो मोतीलालक मनकेँ भरने रहै छेलैन जे सेवा निवृत्तिक पछाइत जँ बेटा खाइयो-पीबैले नइ देत तैयो दुनू परानी ठाठसँ जिनगी काटि लेब। तहूमे साठि बर्खक पछाइत ने रिटायर हएब। मुदा ई बात मोतीलाल बुझबे ने करैथ जे सेवा-निवृत्तिक पछाइत अदहा जिनगी आरो जीब, मुदा तइले ओहन काजो करैत देहक रक्षा केने रहब तखन ने, से तँ पटुआक रूस्सी रसे-रसे फेफड़ेमे बसि रहल अछि, तखन केतेटा औरुदा लऽ लऽ नाचब, से बुझबे ने वेचारा केलैन।

पचासे बर्खक अवस्थामे मोतीलाल मरि गेला, पेंशनसँ वंचित भइये गेला। आजुक समय नहि छल जे अनुकंपासँ दोसरो समांगकेँ नोकरी भेट जइतैन।

मुदा रच्छ रहलैन जे काजुल घरवाली रहैन जे अपन भार अपने उठौने छेली।

ओना विनाश सेहो उट्ठा काज शुरू कऽ नेने छल, जइसँ पिताक मृत्युक पछाइतो कलकत्तेमे रहल। मोतीलालकेँ मुइलाक साल भरिक पछाइत विनाशक दुरागमन भेल।

सासुरक पारिवारिक स्थिति देखि-बुझि विनाश अपने दिससँ दुरागमनक खर्च केलक। दुरागमनक पछाइत फुलकुमारी सासुर गेली, मुदा से वीध पुरबैले, मात्र सात दिन सासुरमे रहली।

सात दिनक पछाइत फुलकुमारी अपन पैत्रिक गाम चल एली। विनाश सेहो कलकत्ता गेला। खाली विनाशक माए–माने फुलकुमारीक सासु–अपन गाम धेने रहली।

सालमे एक मासक छुट्टीमे विनाश गाम अबै छला, जइमे दू-चारि दिन अपना गाममे रहै छला बाँकी समय सासुरेमे। कबैया-डोर रहने दू सालक पछाइत विनाश अपन गामक घराड़ी दियादक हाथे बेचि, माइयोकेँ सासुरे लऽ अनलैन।

दूटा बेटा विनाश-फुलकुमारीकेँ भेलैन। दुनूकेँ गामेक स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। दू सालक पछाइत विनाशक माए सेहो मरि गेली, जे सुख-सराध सासुरेमे विनाश केलकैन।

बाबन बर्खक अवस्थामे विनाशकेँ दमा रोग पकैड़ लेलकैन। एक तँ कलकत्ताक पानि जबदाह, दोसर दमा रोग, बेमारी बढ़िते गेलैन। अन्तो-अन्त चटकलक मालिक एक मासक दरमाहाक अतिरिक्त तीन हजार रुपैआ मिला अरतीस साए दऽ विनाशकेँ ताधरिक छुट्टी दऽ देलकैन जाधैर रोगमुक्त नहि भऽ जेता।

विनाशक रोग जड़ियाइते गेल, जइसँ कलकत्ता छोड़ि गामे आबि इलाज-बात करए लगला आ आमदनी लेल एकटा लटखेनाक दोकान

केलैन। मुदा से नइ चला सकला। नइ चलबैक कारण रहैन जे एक तँ शहरी वातावरणक अभ्यस्त, दोसर वेपार करैक लूरि नहि। ओना विनाश मैट्रिक पास रहबे करैथ, तँए मनमे भेलैन जे भलेँ कलकत्ता जकाँ कमाइ नइ हुअए मुदा ट्यूशन पढ़ा किछु कमा तँ लेबे करब।

दोकानक संग-संग विनाश आठ-दसटा बच्चाकेँ ट्यूशन सेहो पढ़बए लगला। वएह आधार आमदनीक अपन रहलैन, जइमे बेमारीक दवाइयो आ पथो-पानि चलब कठिन भइये गेल रहैन। मुदा फुलकुमारी तँ मेहनती रहबे करैथ।

एकटा निम्मन गाए सेहो पोसने छेली आ दू कट्ठा घरसँ बँचल जे वाड़ी रहैन तइमे तीमन-तरकारीक खेती तेना भऽ कऽ कऽ लइ छेली जइसँ खेनाइ-पीनाइक संग किछु-ने-किछु आमदनियोँ भइये जाइत रहैन, जइसँ गुजर-बसरमे बेसी दिक्कत नहियेँ होइन।

गाममे रहलाक चारि सालक पछाइत विनाश मरि गेला। ओना फुलकुमारीकेँ सासुरक जे सुख होइ छै–माने परिवारसँ दियाद-वाद आ सर-समाजक–से नहियेँ भेटलैन। माने कहियो केकरो मुहेँ 'भौजी', 'काकी', 'दादी' नहि सुनि सकली। भौजी-काकी-दादी सासुर बसैवाली ने होइ छैथ, से तँ फुलकुमारी सासुरमे रहबे ने केलीह। ओना, परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिमे फुलकुमारी 'बहिन', 'दीदी' सभ दिन बनल रहबे केलीह।

जहिना जीवन चिन्हनिहार जिनगीक श्रमकेँ चिन्ह अपनाकेँ श्रमशील जिनगीमे पएर रोपि ठाढ़ होइत चलब सिखैए आ चलैत-चलैत डेगा-डेगी दौड़ए लगैए तहिना फुलकुमारी अपन जीवन-श्रमकेँ चिन्ह तहियेसँ दौड़ए लगली जहिया पति मरि गेलैन, एकटा बेटा मरि गेलैन आ दोसर बेटा अपन परिवार बम्बइये लऽ कऽ चलि गेलैन।

ओना, फुलकुमारीक परिवार अखनो ओहिना भरल-पूरल छैन

जेना पैछला पीढ़ीमे छेलैन। माने जहिना विनाशो भैयारीमे असगरे छला आ फुलकुमारियो असगरे...।

आइ भलेँ फुलकुमारी अपन विधवा पुतोहुक संग असगरे किएक ने जीवन-बसर कऽ रहली-हेँ मुदा बाप-पुरखाक घराड़ीपर तँ छैथे, तैसंग बम्बैयेमे किएन ने बसि गेलैन मुदा चारिगो पोता-पोतीक दादियो आ बेटा-पुतोहुक माइयो तँ वएह ने छैथ।



शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017

बेटीक कुभेला

नीनसँ सुतले रही मुदा भोर भऽ गेल रहइ। चिड़ैयो सभ अपन हाजरी दऽ दऽ पेटक जोगारमे लगि गेल छल। जिनगी-ले तँ पहिने पेटे-पूजाक ओरियान ने करए पड़ै छै, तँए चिड़ैयो सभ अपन पेट-पूजाक जोगारमे लागि गेल छल। ओना अपने सेबेरे उठै छी मुदा काल्हि देहक धौजैन तेते ने भेल जे रातिमे सुतैकाल नीने ने अबै छल, मुदा जेना-जेना ओछाइनपर कर लगैत गेल तेना-तेना नीनक आगमन हुअ लगल। नीक जकाँ नीन कखन पड़लौं से मन नइ अछि किए तँ घड़ी देखि नीन नइ पड़ल रही। मुदा भोरमे करीब डेढ़ घन्टा बेसी नीन रहल से तँ घड़ीसँ थाह लगिये गेल।

नीन टुटिते अँगनोमे आ पछुआर दिस–रस्तापर सेहो लोकक गलगुल सुनि पड़ल। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल अनुमान लगबए लगलौं जे केतौ किछु भेल अछि। आरो कान पाथि सुनए लगलौं जे कनी नीक जकाँ बुझिऐ। मुदा से भेल नहि, दुखिया कक्काक नामटा नीक जकाँ बुझलौं, बाँकी बात बाँकीए रहि गेल।

ओना पत्नियोँ ई सोचि नहि उठबैथ जे काल्हि भरि दिन मेहनतिया काजमे लगल रहला, तँए जँ कनी बेसी अराम भऽ जेतैन तँ देह बेसी फुहराम भऽ जेतैन जइसँ मनो फुहराम भइये जेतैन। आइ कोनो तेहेन काजो अखन नहियेँ अछि जे कोनो नोकसान हेतैन। ओना पत्नी अपना विचारे बुझली मुदा से अछि नहि, जिनगीक तँ एक-एक क्षण एक-एक

पल जीवन क्रियासँ जुड़ल अछि तँए नोकसान नहि हएत, एहनो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

समाचार बुझैक खियालसँ ओछाइन छोड़लौं। ओना आन दिनक ओछाइन छोड़ब माने ओछाइनपर सँ उठब आ औझुकामे किछु अन्तर भइये गेल छल। अन्तर ई जे आन दिन अपन दैनंदिनक काजकेँ नजैरमे रखि उठै छेलौं से आइ नइ भेल। अपन काज विचारक तर पड़ि गेल आ समाजक काज अगुआ गेल जइसँ अपन नित्य-क्रिया दिससँ मने बहैट गेल।

ओछाइनपर सँ उठिते मनमे भेल जे धाँइ-दे केबाड़ खोलि केकरोसँ पुछैसँ बेसी नीक हएत जे ओरिया कऽ केबाड़क एकटा पट्टा घुसका पत्नीकेँ इशारासँ बजा हुनके पुछि लिऐन। मुदा से गरे कुगर छल। कुगर ई छल जे पत्नी विपरीत दिसामे घुमल छेली आ आन-आन लोक, दोसर आँगनक स्त्रीगण, सोझमे पड़ै छेली।

ओना अपनो पत्नी करवनोकाल बजैमे तिलकेँ ताड़ बनबै छैथ आ ताड़केँ तिल, मुदा भाँज बुझल अछि, तँए कोनो विचार वा बातकेँ नीक जकाँ बुझि जाइ छी।

केबाड़ खोलि ओसारपर ठाढ़ भऽ हिया कऽ देखलौं तँ एक गोरे भौजी-तुल्य आ दू गोरे भावो-तुल्य छैथ, अरवन गप-सप्पक क्रममे एकबट्ट छैथ तँए नजैर पड़िते ओहो सभ साकांछ भऽ जेती। मुदा से भेल नहि। होइतो अहिना छै जे सम-तुल्य समयक बात-विचार वा लाज-विचार आ बेर-बिपैतिक समयक लाज-धाकमे कनी अन्तर आबिए जाइ छै। बिनु मुँह झँपने भावो गप बजैले–माने समाचार सुनबै-ले–उताहुल रहबे करैथ, मुदा एते होशियारी सभ करबे केलैन जे भौजी-तुल्य जे रहैथ हुनके समर्थनमे सभ मुँह उघारने ठाढ़ रहली। भौजी बजली-

“बौआ, बड़ अनर्थ भेल!”

‘बड़ अनर्थ भेल’ से तँ भौजीक मुहेँ सुनलौं मुदा की अनर्थ भेल बुझबे ने केलौं। दोहरा कऽ आँखि उठा भौजीपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे अस्सी मनक भार जेना हुनका मनपर पड़ल होइन। मनमे उठल जे नीक ई हएत जे किए ने अपने मात्र खोंरनी चलाबी आ भौजीए मुहेँ सभ बात सुनी। काटि-छाँटि अपन विचारकेँ रखैत बजलौं-

“से की?”

विह्वल होइत भौजी बजली-

“दुखिया कक्काक परिवारमे बज्र खसि पड़लैन।”

ओना तैयो भौजी सोझ-साझ नइ बजली, मुदा अपन मन मानि लेलक जे दुखिया कक्काक परिवारक किछु अंग-भंग जरूर भेलैन अछि।

आगूक बात भौजीसँ नहि पुछि पत्नीकेँ इशारा दैत बजलौं-

“कनी एमहर सुनू।”

बजैत-बजैत मन जेना क्षीण हुअ लगल, देहमे कोनो लज्जतिये ने बुझि पड़ए। हुअए जे खसि पड़ब। मुदा कहुना कऽ हाथ-पएर बँचबैत ओछाइनपर आबि चारूनाल चीत भऽ ओंघरा गेलौं।

लगमे आबि पत्नी बजली-

“बुधनी काकी मरि गेली।”

पत्नियोंक बातपर जेते बिसवास हेबा चाही से नइ भेल, मुदा लगले मन गवाही दैत कहलक- घटना-घटनाक अपन-अपन मोल होइ छइ। एहेन घटनाक चर्च करैमे जेते इमनदारी लोकमे रहै छै तेते आन घटनामे थोड़े रहै छइ। इमनदारी रहबो केना करत। घटनो-घटनोमे अन्तर अछि किने, कोनो इज्जत-आबरूसँ जुड़ल रहैए तँ कोनो शासन-सत्तासँ, तहिना कोनो धन-सम्पैतसँ तँ कोनो अपन चालिसँ सेहो जुड़ल रहैए। मुदा किछु हौउ, एते तँ इमानदारी लोकमे ऐछे जे केकरो घरमे आगि लगौ कि कियो

गाछपर सँ खसि पड़ैए आकि केकरो साँपे-छुछुनैर काटि लइ छै, तँ एहेन बात बजैमे लोक इमानदार अछिए।

पत्नीक बात सुनि भादवक ओइ अन्हार जकाँ मन अन्हरा गेल जइमे तरतर अन्हार करैत तरतर मेघ तरतराइत ठनको खसबैए आ तरतराइत बरखो होइए, मुदा उपाय?

एकाएक मनमे नव उत्साह जगल। उत्साह जगिते शक्तिक संचार भेल। संचार होइते मनमे उठल- एहेन अन्याय दुखिये काकाकेँ भेलैन से तँ नइ अछि, एहेन-एहेन अन्याय बहुतोक संग भेल अछि आ आगूओ हएत...।

मुँह-कानमे बिना पानि नेनहि दुखिया काका-ऐठाम विदा भेलौं। पहुँचते देखलौं जे कक्काक आँखिसँ नोर टघैर रहल छैन, मुदा तैयो मुइल पत्नीकेँ जरबैक ओरियानमे लागल छैथ।

दुखिया कक्काक दशा देखि अपनो मनक ओहने दशा भेल। दशा होइते दुनियाँ मनमे नाचल। यएह छी दुनियाँ जे जइ बुधनी काकीक संग दुखिया काका जिनगी-ले खेत-पथारक काज संगे करै छला, जारैन-काठी गाछी-बिरछीसँ संगे अनै छला, से आब केकरा संगे करता? मुदा दुखिया कक्काक मनक विचार हमरा विचारसँ बिलकुल भिन्न छेलैन। हुनकर जे क्रिया-कलाप छेलैन तइसँ बुझि पड़ै छल जे होइ छैन केते जल्दी लहाश अँगनासँ निकैल आगिमे जरि जाइक। जेना सिनेह नामक कोनो विचार मनमे छैन्हे नहि। ओना, मृत्युक पछाइतो सिनेह रहिते अछि, मुदा ओ कम-बेसी। किएक तँ जैठाम असगरूआ जिनगी अछि तैठाम मृत्युक पछातिक जे क्रिया-कर्म अछि ओ सिनेहकेँ धकेल अपना दिस खिंच लइए मुदा जैठाम भरल-पूरल परिवार अछि तैठाम तँ एहेन घटना भेलापर सिनेही पतिकेँ घरक केबाड़ बन्न कऽ रखले जाइए। ओना ओहूठाम दू रंगक हिसाब होइए। पहिल होइए जे जैठाम पति-पत्नीक बीच आत्मीय

प्रेम रहल से आ दोसर भेल जैठाम जिनगीक विचारधारा एते दूरी बना दइए जे एक-दोसरकेँ देखैये ने चाहैए।

दुखिया कक्काक काज देखि मनमे उठल- जँ किछु मृत्युक विषयमे पुछबैन से समय तँ निकैल गेल अछि। माने ई जे मरैक कारण नीक रहल होनि कि अधला, ई तँ मृत्युक पूर्वक क्रियाक विचारक समय छी। ऐठाम तँ बुधनी काकी मरि चुकल छैथ। अखन तँ मृत्युक पछातिक जे उपचार अछि सएह ने कएल जा सकैए।

ओना, मृत्युक पछातिक सूत्र–माने कि सभ कएल जाइत अछि–देखलो पछाइत बिसैर गेल रही तँए पुछब तँ जरूरी अछिए। ओना सूत्रधार–आँगनसँ असमसान तकक काज केनिहार–दुखिया कक्काक पितियौत जेठ भाय रहैथ, मुदा मनमे उठल- काज तँ दुखिया कक्काक परिवारक छी, तँए पुछबो अनुचित नहियेँ हएत, तैसंग ईहो तँ भइये सकैए जे अपन उपस्थितिक मोजर भऽ जाएत आ जँ कहीं दुखक धारमे दुखिया काका बहि गेला तँ मृत्युक कारणोक भाँज लगि जाएत। यएह सोचि पुछैक विचार भेल।

मुदा लगले आँखि माए लग–बुधनी काकी लग–बैसल पाँच बर्खक बेटी सबुरियापर पड़ल। दुनू आँखिसँ बेटीकेँ नोरक टघारो चलैत रहै आ चिचिया-चिचिया कनबो करै छल, मुदा तैयो माइक मुँह लग बैसल माछियो दहिना हाथसँ रोमैत रहै आ कियो जँ देखए चाहैथ तँ वस्त्रसँ झाँपल माइयक मुँह उघारि देखा कऽ पुन: झाँपि सेहो दइ छल।

सबुरियाकेँ किछु कहैक साहस नहि भेल। साहस ऐ दुआरे नहि भेल जे जहिना दुखिया काका ऐगला ओरियानमे लगल छैथ तहिना सबुरिया सेहो लगले अछि तैठाम बीचमे अनेरे किछु बाजि बाधा उपस्थित करी से नीक नहि बुझि पड़ए तँए बजैक साहस नहि हुअए। ओना, समाजक बहुतो जिज्ञासु जिज्ञासा करए आएल छैथ, कियो बाँस काटए

गेल छैथ, तँ कियो हाँइ-हाँइ जौड़ बाँटि रहला अछि। तैसंग किछु गोरे एहनो तँ छथिये जे बैस कऽ किछु स्मरण कऽ रहला अछि। हमहूँ ओही पाँतिमे बैस गेलौं।

ओना, दुखिया कक्काक ऐगला-पैछला गप-सप्प चलि रहल छल, माने ई जे दुखिया कक्काक की परिवार छल आ आगू की हएत से दुनू गप-सप्प चलि रहल छल।

बुधनी काकीक मृत्युक चारि दिनक पछाइत ऐगला क्रियाक जिज्ञासा करए दुखिया काका ऐठाम गेलौं। काल्हि छौरझँप्पी छल। बुधनी काकीक सारा बनि तुलसी गाछ रोपा गेल छेलैन।

हमरा जाइसँ पहिने जीवन काका आ सिंहेश्वर भाय सेहो पहुँच चुकल छला। तीनू गोरे ऐगला क्रिया-कर्मक चर्च कऽ रहल छला। ओना, अपना मनमे एकटा विचार नाचि रहल छल, ओ विचार छल जे दुखिया काका अपने जे पत्नीकेँ आगि देलैन से ओते नीक नहि भेल जेते बेटी–सबुरिया–केँ देने होइत।

ओना आन बात धियानमे नहि छल मुदा ई तँ रहबे करए जे असगरूआ दुखिया काका जे गरदैनमे उतरी लेलैन तइसँ ई तँ भेबे केलैन जे ऐगला काज करैसँ घेरा गेला। किएक तँ कर्ताकेँ–जे आगि देने रहल हुनका–अपन विहीतोक काज आ सोगो-पीड़ा रहिते अछि जइसँ ऐगला काज बाधित होइत अछि...।

..अपन मनमे कोनो जवाब उठबे ने करए जे मन असथिर होइत। बजा गेल-

“जीवन काका, अपने तँ उमरदार भेने अनुभवी सेहो छीहे, दुखिया काकासँ नीक होएत जे सबुरिया आगि दइतैन।”

ओना हम ऊपरे-ऊपर हल्के-फुलके ढंगसँ सराध-कर्मक काजकेँ नजैरमे रखि बाजल रही। परम्परा की अछि, बेवहार की अछि, से सभ

मनमे नइ छल। मुदा जीवन काका गंभीरतासँ प्रश्नकेँ लैत किछु समय मने-मन तर्क-वितर्क करैत बजला-

"नीक जरूर होएत, मुदा लोकोक विचार मानब तँ जरूरी भइये जाइए।"

जीवन कक्काक सह पेब आरो मनमे अपन विचारपर बिसवास जगल, जइसँ बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल, बजलौं-

"से की काका?"

जीवन काका बजला-

"पोथी-पतराक बात तँ नइ बुझल अछि मुदा समाजमे दुनू विचारधारा तँ बहिये रहल अछि। किछु गोरे एहनो छैथ जे पक्षमे छैथ आ किछु गोरे विपक्षमे सेहो छथिये। एक तँ ओहिना सराध-कर्म सीमित दिनक भीतरक काज छी, तैसंग समाजसँ जुड़ल सेहो अछिए। तैबीच जँ समाजमे विचारक विवाद उठत तँ काज ढंस होइक संभावना बनियेँ जाएत।"

जीवन कक्काक विचार मनमे जँचल मुदा लगले दोसर प्रश्न उठि गेल। उठि ई गेल जे समाजे छी, सदिकाल एहेन-एहेन क्रिया अबिते रहत, तरखन किए ने समाज एकरा एकठाम बैस विचार करैए..?

बजलौं-

"काका, एहेन काजकेँ समाज पछुआ कऽ किए रखने अछि?"

जेना जीवन काकाकेँ एहेन घटनासँ भेँट भऽ चुकल होनि तहिना मनमे खुशी एलैन।

मुस्की दैत बजला-

"जे नि:सन्तान छैथ हुनकर उपाय की अछि?"

जहिना बाढ़ि एलापर माने पानिक धारमे खढ़ो-पात प्रवाहित होइए

तहिना अपनो मनमे भेल। बजलौं-

“काका, जिनका ने धिया-पुता छैन आ ने पति, तिनकर उपाय की हेतैन?”

ओना जीवन काका ठमकला मुदा हमरा सन-सन लोक-ले हुनका लग घटना-घुटनी आकि खिस्सा-पिहानीक कमी थोड़े छैन जे जवाब नइ दइतैथ। मुदा बीचमे सँ दुखिया काका उठि कऽ अँगना कोनो काजे गेला। हम तीनियेँ गोरे दरबज्जाक बिछानपर बैसल रहि गेलौं।

गर पेब सिंहेश्वर भाय बजला-

“दुखिया काकाकेँ बड़ परेशानी हेतैन, अखन बेटी भानस-भात करै-जोकर नइ भेलैन अछि, अपने हर जोति दुपहरमे औता तखन भानस-भात करता!”

हमरा गर भेटल, बजलौं-

“तेतबे नहि ने अपने समरथ हड्डी छैन तँ कनी बरदासो कऽ लेता मुदा पाँच बर्खक सबुरिया भूखे छटपटाएत की नहि?”

हमर बात जेना जीवन कक्काक मनमे गड़लैन तहिना मुँहक विसविसीसँ बुझि पड़ल। मुदा देखल-सुनल विचारक काज जेना मनमे नाचि उठलैन तहिना बजला-

“ई स्थान अखन एहेन गप्पक नहि अछि, तँए अखन मुँह बन्ने राखह।”

बजा गेल-

“से किए काका?”

जीवन काका-

“तूँ जे बाजऽ चाहै छह से मृत्युक साल भरि बरजित अछि तँए साल भरि मुँह बन्ने राखह।”

सिंहेश्वर भाय बजला- “सालक सीमा किए अछि ओ तँ भरि जीवनोक भऽ सकैए?”

साल भरिक सीमा सोझमे अबिते जीवन कक्काक मनमे साल भरिक क्रिया-कर्म उपैक गेलैन। बजला-

“आइ चारिम दिन छी माने बुधनी काकीककेँ जरौला, नअ दिनमे सराध कर्म सम्पन्न हएत, तेकर पछाइत बारहो मास मासे-मासे छाया हएत जे साल लगलापर पूरत, तेकर पछाइत बरखी हएत, जे साले-साल होइत रहत, तैबीचमे मातृनवमी सेहो होइत चलैत रहत।”

जीवन कक्काक बात सुनि सिंहेश्वर भाय टोकलकैन-

“जखन साले-साल बरखी आ मातृनवमी चलिते रहत तखन बीचमे दुखिया काकाकेँ दोसर बिआह करैक समय कहिया भेटतैन?”

तैबीच दुखिया काका आँगनसँ दरबज्जापर चलि एला। हुनका देखिते तीनू गोरे अपन-अपन मुँह बन्न कऽ लेलौं।

लगमे अबिते दुखिया काका बजला-

“अपने लोकैन समाज भेलिऐ, केना गरदैनसँ उतरी हेट हएत से तँ अपने लोकैन ने विचार करबै।”

दुखिया कक्काक बात सुनि जीवन काका बजला-

“केकरा गरदैनमे उतरी लटकल रहल अछि जे अहाँक नहि उतरत। तखन तँ रंग-बिरंगक चलैन उतरी उतरैक ऐछे तइमे जे सकरता हएत तइ हिसाबसँ उतरी उतारि लेब।”

अपना जनैत जीवन काका दुखिया काकाकेँ जवाब दऽ देलखिन, मुदा की कहलखिन से अपने बुझबे ने केलौं। बिनु बुझने किछु बाजबो नीक नहियेँ बुझि पड़ए। मुदा दुखिया काका जखन समाज बना समस्या रखलैन तखन चुप्पो रहब केहेन हएत? फेर हुअए जे कहि दिऐन जे

बड़बढ़ियाँ विचार जीवन कक्काक छैन। मुदा लगले ईहो हुअए जे बड़बढ़ियाँ आकि बड़खराप से तँ बुझला पछाइत ने बुझब, बिनु बुझने नीक की अधला की से केना बेराएब?

अगदिगमे मोन पड़ि गेल। कोनो गरे ने देखिऐ जे दुखिया काकाकेँ की जवाब दिऐन। फेर मनमे भेल जे जीवने काकासँ किए ने पुछिऐन। बजलौं- "की कहलिऐ काका जे रंग-बिरंगक चलैन अछि?"

जीवन काका बजला-

"अपना समाजमे रंग-रंगक चलैन अछि। पहिल भेल बिरखौ, दोसर भेल पंचदान आ तेसर भेल कुरसी।"

जेना नव चीज सुनने होइ तहिना मनमे भेल, जइसँ आरो बुझैक जिज्ञासा जगल। बजलौं-

"कनी तीनूकेँ फुटका कऽ कहियौ।"

हमर बात सुनिते जीवन काका हमरा निहारए लगला। मनमे की भेलैन से तँ ओ जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे मने-मन विचारि रहला अछि जे केहेन ढहलेल जकाँ बाजल। ओना जीवन काका किछु अधला बात मुहसँ नहि निकालि असथिरसँ बजला-

"बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह तँए समाजक तरी-घटी नइ बुझै छहक। हमरा तँ देखैत-देखैत केश-दाढ़ी पकि गेल।"

किछु बुझब छल तँए ललचाइत मने कहलयैन-

"काका, एकरा के काटत। खेलहा-पीलहा देह अछि तँए ने, नहि तँ मरि गेल रहितौं। अहीं कहू जे अहाँ उमेरक केते गोरे समाजमे छैथ।"

हमर बात जेना जीवन कक्काक मनकेँ भरलकैन तहिना बुझि पड़ल। बजला-

"बौआ, पहिल जे बिरखौ अछि ओइमे लोक हाथी-घोड़ा, गाए-

बरद, गहना-जेबरक संग जर-जबारमे भोजो करैए आ सभ किछु दान सेहो करैए।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हाथीबला ने हाथी दान करता आ जिनका से नइ छैन ओ की करता?"

हमर बात जेना जीवन काकाकेँ कठाइन लगलैन तहिना मुँहक रूपसँ बुझि पड़ल। बजला-

"एते धड़फड़ेने समाजक पेनी पौबह। पहिल ने कहलियह आ दोसर रंगक अछि पंचदान, जइमे लोक कमसँ कम एगारह गोरेकेँ खाइयो-ले दइए आ जे विभव रहलै तइ हिसाबे दानो करैए।"

जीवन कक्काक बात सुनि मन कनी थितगर भेल। तइ बिच्चेमे सिंहेश्वर भाय पुछलकैन-

"कुरसी की भेल?"

जीवन काका बजला-

"जेना बिरखौ आ पंचदान नमगर-चौड़गर अछि तेना कुरसी नइ अछि। 'कुरसी'मे जएह भेल सएह दानो केलौं आ खाइयो-ले देलिऐ।"

दुखिया काका सेहो सभ बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। तैबीच एकभुक्तक समय सेहो लगिचा गेल छल। तँए आँगन दिस विदा होइत दुखिया काका बजला-

"ओना, अखन सराध दिनगर अछि। जेना जे अपने लोकैन कहब, तेना से करैले हाजिर तँ छीहे।"

सभ कियो उठि कऽ विदा भेलौं।

साल भरिक पछाइत पहिल बरखी भऽ गेल। बरखी भेलाक तीन दिनक पछाइत दुखिया काका ऐठाम गेलौं। दुखिया कक्काक रंग-रूप बहुत

बदलल बुझि पड़ल। जेना पत्नीक सभ सोग-पीड़ा बिसैर नव जिनगीक परिवार बना नेने होथि तहिना। सबुरिया सेहो छह बर्खक भऽ गेल। दुनू बाप-बेटी भानसक काजमे लगल रहैथ। डेढ़ियापर पहुँचते सोर पाड़लयैन-

"काका यौ?"

अँगनेसँ दुखिया काका बजला-

"हँ, अँगनेमे छी। एम्हरे आबह।"

अँगनेमे पीढ़िया बैसैले देलैन आ दुखिया काका-अपने भुँइयेमे चुक्कीमाली बैसला। गामेपर सँ विचार केने गेल रही जे दुखिया काकाकेँ बड़ परेशानी पत्नीक अभावमे होइ छैन। से नइ तँ दोसर बिआह कऽ लैथ।

मनमे अगुआएल विचार छल तँए बजैक उत्सुकता तँ छेलएहे। मुदा बिना कुशल-समाचार बुझने बजबो केना करितौं तँए कुशले-समाचारसँ गप शुरू करैत पुछलयैन- "काका, जिनगी अहाँकेँ बड़ परीछा लऽ रहल अछि।"

हमर प्रश्नक उत्तर जेना दुखिया काकाकेँ ठोरेपर रहैन तहिना धाँइ-दे बजला-

"जिनगीमे जे जेते परीछा देत, वएह ने ओते जिनगीकेँ चिन्हबो करत।"

दुखिया कक्काक जवाबसँ बुझि पड़ल जे गप-सप्प करैक मूड बनल छैन। बजलौं-

"काका, बिआह कऽ लिअ। सबुरियो चेष्टगर भेल, बिआह-दान हेतइ सासुर जाएत। अहाँ आरो परेशानीमे पड़ि जाएब। असगर रही कि दस गोरेक परिवारमे रही, जिनगी तँ जिनगी छी ओकर तँ सभ काज पुरबै पड़त।"

बजला-

“से तँ अछिए, मुदा समस्यो तँ अपने-अपनेटाक ने अछि।”

बजलौं-

“हँ, से तँ अछिए, मुदा पारिवारिक जिनगीक अपन महत् छइ किने।”

हमर बात सुनिते दुखिया काकाकेँ पहिल पत्नी मोन पड़लैन। केना हथियाक झाँटमे प्रसव पीड़ा भेलैन आ लाख परियास केलो पछाइत बँचा नइ पौलिऐन। पछाइत दोसरो बिआह केलौं सेहो मरि गेली, साल भरि पहिने सराधसँ उरीन भेलौं। बर्ख दिन भऽ गेल। केना बर्ख दिन बीतल सेहो कहाँ बुझि पेलौं। अपन जिनगीमे जहिना रमैत एलौं तहिना रमैत आगूओक जिनगी काटि लेब। तइले एक नइ दू-दूटा सन्ताप भोगि रहल छी। सबुरिया भानसो-भात आ अँगनो-घरक काजमे सम्हारिये रहल अछि। बजला-

“परिवार केतौ हेराएल अछि, दू बाप-बेटीक परिवार अखनो अछि। यएह ने हएत जे बिआहक पछाइत बेटी सासुर जाएत। जँ ओकर मन हेतइ तँ हमहूँ ओतै चलि जाएब नइ जँ बेटियेक मन हेतै तँ ओहो सभ एतै रहत।”

ओना दुखिया कक्काक उत्तर मनोनुकूल नइ भेल, मुदा उत्तरकेँ काटबो तँ असान नहियेँ अछि। आँखिक सोझमे एहेन अनेको जिनगी अछिए। बजलौं-

“काका, बेटाक वंश आ बेटीक वंशक अन्तर तँ भइये जाइत अछि किने?”

दुखिया काका बजला-

“हँ, लोको तँ सएह बुझैए, मुदा मूल प्रश्न जिनगीकेँ चैनसँ जीब अछि। जखने दोसर बिआह करब तखने अपन पत्नी रहितो सबुरियाक तँ

सतमाइये हेतै किने। जेकरा वंशक फूल बुझि सेवा करै छी ओकरा आगू एहेन बगुरक गाछ रोपि दिऐ, ई अपन मन नइ कहैए। किछु भेल तँ सतमाइये भेल। ओकरा कुभेला करबे करतै।”

बजलौं-

“की कुभेला?”

काका बजला-

“सभ रंगक कुभेला। ओ अपन बेटी सबुरियाकेँ बुझबे ने करत। मुदा हमर तँ बेटी छी, हम केना अपना सोझामे कुभेला होइत देखब। तइसँ नीक ने जे ओहन गाछे ने रोपब जेकर काँट बाल-बच्चाकेँ गड़त।”



शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017

अपन रोपल गाछी भुताहि

रामनवमी दिनक बेरुका उखड़ाहाक पाँच बजेक समय। अनेको लॉडस्पीकरसँ सूर भरल गीत-नाद गाममे अनघोल केने...। कोनोसँ आवाज निकलै- 'रामराजमे सभ बरबैर..!' तँ कोनोसँ निकलै- 'दैहिक-दैविक भौतिक ताप रामराजमे नहि रहि पबैत..!' तँ कोनोसँ आवाज निकलै- 'रघु कुल रीत सभ दिनसँ आएल, प्राण जाएत तँ जाएत मुदा वचन नहि जाएत..!'

अनघोल वातावरण रहने रघुवीर कक्काक मन सेहो घोर-घोर होइत रहैन।

अपन साठि बर्खक बीतल जिनगी दिस नजैर देलैन। पाछू घुमिते अपन बाल-बोधक जिनगीक मिलल रूप–विद्यार्थी जीवन–होइत अपन चालीस बर्खक समाज सेवाक बीच जखन एलैन तँ मन ओझराए लगलैन।

केतेको प्रश्न मनमे उठए लगलैन जे जखन अपना जनैत केकरो ने अधला सोचलिऐ आ ने अखनो सोचै छी आ ने केकरो अधला केलिऐ आ ने अखनो करै छिऐ, तखन लोक किए अधला करैपर उताहुल भेल अछि? माने ई जे समाजेक लोक समाजोक लोककेँ आ तैसंग अपनो आ हमरो किए अधले नजरिये देखबो करैए आ करबो करैए..?

रघुवीर कक्काक मनमे एकाएक ठनका जकाँ ठनक जगलैन। जगिते बकार फुटलैन- "अपन रोपल गाछी भुताहि! जइ समाज रूपी

गाछीकेँ रोपि समाजरूपक माली बनि सेवा करैत अखन तक आबि रहल छी ओ एना भुताहि किए बनि रहल अछि..!”

रघुवीर कक्काक ठनकल मन रहबे करैन, चोटे पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे केतौ-ने-केतौ एहेन रोगक प्रकोप भीतरे-भीतर भेल अछि, जे चाहे बाँकी रूपमे हुअए आकि आने-आन कोनो रोगसँ गरसित भेल हुअए, मुदा भेल तँ जरूर अछि..!

रघुवीर काका जेते विचारकेँ सोझराबए चाहैथ तेते ओझरी लगि-लगि जाइत रहैन। कोनो एहेन उत्तर मनमे जगबे ने करैत रहैन जे पेब मन हल्लुक होइतैन।

गुम-सुम भेल रघुवीर काका अपन मनक घोड़ाकेँ चारूदिस दौड़ा-दौड़ा ताकए लगला मुदा आँखि देखबे ने करैन! भाय आँखि देखब ओते असान थोड़े अछि जे लगले देखि जाएब..? तही बीच चाह नेने पत्नी पहुँच कहलकैन-

“चाह पीब लिअ, पान खा लिअ आ रामनवमी दिन छीहे रामराज देखए चलू।”

ओना तैबीच रघुवीर काका चारि-पाँच घोंट चाह पीब नेने छला तँए मनक ओझराएल विचार पतराए लगल छेलैन, ओना सोलहन्नी नइ पतराएल रहैन तँए पत्नीक बात सुनि तामस तँ नइ उठलैन मुदा झड़क जरूर उठलैन। झड़कवाहि उठिते मन नचलैन। नचैत मनमे एलैन जे एक दिस पत्नी कहि रहली अछि- ‘रामनवमीक मेला छी, देखैले चलू।’ आ दोसर दिस अपन मन रूपी पति लोकक लीला देखि-देखि घोर-घोर भेल अछि! तैठाम की मेला देखब आ कोन मेला देखब..? मुदा लगले होनि जे पति-पत्नीक बीच तँ एहेन पार्टनरशीप ऐछे जे अदहा-अदहा बँटवारा अछि। अपने किछु छी तैयो अदहे छी आ पत्नियेँ किछु छैथ तँ अदहाक मालिक छथिए...।

रघुवीर काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन जे की केने की हएत। थोड़ेकालक पछाइत, चाह जखन अदहापर एलैन–माने अदहा गिलास जखन पीब लेला–तखन एकटा जुकती मनमे औनाइत खसलैन। खसलैन ई जे केतबो अदहाक मालिक पत्नी किए ने होथि मुदा छैथ तँ पत्नियेँ। बहला-फुसला अधिक हिस्सा लाइए सकै छी। कक्काक मन कनी सुगबुगेलैन।

सुगबुगाइते बजला-

“जखन मेला देखए जाएब, तहूमे जुड़शीतलक धुर-खेल तँ छी नहि जे ‘जय-शिव, जय-शिव’ करैत मेला घुमि लेब। रामनवमी छी। रामक जनम दिनक उछाही जेकरा छै ओ तँ आइ की-की ने लूटाएत मुदा हमरा बुते तँ अहूँकेँ खुशी-खुशी मेला देखौल नइ हएत।”

ओना, रघुवीर कक्काक बात सुनि काकीक मन मधुआ गेल छेलैन मुदा तैयो लाड़-झाड़ करैत बजली-

“जइ दिनसँ बाप-माइक घर छोड़ि एहेन जरल घर एलौं जे कोनो मनोरथ पूर नइ भेल।”

एक तँ पहिनहिसँ रघुवीर कक्काक मन भुतियाएल रहबे करैन, जेकरा समेट समाज-परिवारसँ हटि पत्नी लग पहुँचल छला, तैठाम तेहेन बज्जर सन कथा भेटलैन जे मन आरो चुरम-चुर भऽ गेलैन। चुरम-चुर होइत मनकेँ कहुना-कहुना बीछि-बीछि कऽ समटलैन।

समेटते मन बिहुसलैन, बिहुसिते बकार फुटलैन-

“हम तँ चाह अदहा पीब नेने छी अहाँ पीलौं?”

पतिक बात सुनिते सितियोकाकी सभ लाड़-झाड़ समटैत बजली-

“नइ कहाँ पीलौं हेन। हम कि कोनो औझुका लोक छी जे पतिकेँ बिना खुऔनहि-पीऔने अनजल कऽ लेब! अखुनका लोक ने टेस्ट करैत अपनो टेस्ट करैए जे नीक-बेजाए-क विचार पति करता कि पत्नी। हँ,

जैठाम सूर्यक उदय अछि तैठाम पतिक की दशा छैन सेहो तँ सबहक सोझहे अछि।"

सितिया काकीक सिताएल विचार सुनि रघुवीरो कक्काक मन सिता गेलैन। सिताइते बजला-

"अदहे गिलास चाह पीलौं हेन अखन अदहा बाँकीए अछि तँए जँ आँगनमे कोशलौने होइ तँ जा कऽ पीब लिअ, नहि तँ अदहा रखने छी लीअ पीबू।"

पतिक बात सुनि सितिया काकी लजा गेली। लजा ई गेली जे खाइ-पीबैक कारोबारी तँ अपने छी किने तैठाम जँ मौगियाही चालि पकैड़ जे परिवार रहत, माने परिवार रहत दस गोरेक आ सिदहा लगाएब सात गोरेक जे खाइत-पीबैत रस्तेमे सठि जाएत! ओइ परिवारमे विवाद हएत की नहि? हेबे करत, जखने खाइक भोजन रस्तामे सठत तखने ने किछु गोरे खा कऽ सुखे ढेकार करत आ किछु गोरेकेँ भुख ढकार करए पड़तैन। जखने दुनू ढकार हएत तखने दू रंग हवा चलबे करत, तैठाम के दोखी हएत? हँ! एहेन संभव अछि जे उपार्जनकर्ता भरपूर उपारजन, कोनो कारणे नइ कए पबैत होथि मुदा ई तँ हमरे ने बुझए पड़त। भरि थारी नहि, हिस्से भरि।

हँ! एहनो संभव ऐछे जे दस गोरेक भोज्य-विन्यासमे, वस्तुक वाहुल्य देख, दस गोरेक जगह पनरह गोरेक बना रस्ता-पेरापर फेक गन्दा करबै सेहो केहेन हएत? मन कहलकैन- तखन? तखन तँ यएह ने हएत जे जहिना छबे-छबे खेत बढ़ैए, कौरे-कौरे पेट बढ़ैए तहिना रसे-रसे बुधियो-बेवहार ने सिखैत-सिखैत सीखि चलैए।

सितिया काकी अपन लड़-झड़क चालि-प्रकृति पकैड़ बजली-

"जहिना हमर अदहा गिलास तहिना ने अहूँक अदहा भेल, तैठाम अपन-अपन दायित्व तँ निमाहए पड़त किने।"

पत्नीक बात सुनिते रघुवीर काका बजला- “शुभ काजमे अपने ने देरी करै छी, दसटा हॉर्नक आवाज जे कानक ठेकीकेँ केतबो ठेलत तइसँ की हेतइ। नीक जकाँ बनि-ठनि कऽ मेला देखए चलू, अहीं संगे हमहूँ जाएब।”

‘अहीं संगे हमहूँ जाएब’ सुनि माने पतिक बिसवासू विचार सुनि सितिया काकी विस्मित हुअ लगली।

पत्नीकेँ विस्मित होइत देखि रघुवीर काका बजला- “तेते ने लॉडस्पीकरक आवाज आबि रहल अछि जे अहाँकेँ सुनैमे रामनौमीए-टा अबैए मुदा चैती नवरात्राक नौमी सेहो छी। तँए दुनूक बीच छी, कोन मेला देखए जाएब से पहिने विचारि लेब तखन ने घरसँ डेग उठाएब।”

रघुवीर कक्काक बात सुनि सितिया काकी औनेली नहि, ऐ दुआरे नै औनेली जे भगवतीक आराधना–नवमीक मेला–आ रामनवमीक मेला–तहूमे केते सालक पछातिक राम जन्मोत्सव छी–दुनूमे अन्तर तँ अछिए। ओना, ओइ दिस सितिया काकीक नजैर नइ गेलैन। रस्तेमे अँटैक रामनवमीए दिस बढ़ि गेलैन।

पतिक विचारकेँ सोल्होअना अनदेखी करी, सेहो केहेन हएत। सितिया काकीक मन उमुर-घुमुर करए लगलैन। कोनो रस्ते ने देखैथ जे आगू की केने दुनू बेकती मिलानसँ मेला देखए जइतैथ। मुदा लगले जुकती फुरलैन। जुकती ई जे रामनौमियो मेला छी आ नवरात्रियोक मेला छी, मुदा छी तँ दूनू मेले, तँए किए ने दुनू मीलि मेल-मिलान-मिलाप करैत मेला जाइ...।

सितिया काकीक मन मानि गेलैन जे पतियेपर किए ने जहिना सीता रामकेँ माता-पिता बोन जाइले छोड़ि देलखिन तहिना हमहूँ आश्रित भऽ मेला देखए जाय।

ओना, सितिया काकी धड़फड़मे अपने भरिक विचार कऽ लेली,

जइसँ नजैरमे ई एबे ने केलैन जे नारियोक रूप अरूप अछि। केतौ नारी अपन इज्जत-आवरू-ले अपने बलिक बकरा बनि रक्तसँ धरती सींचै छैथ तँ केतौ दर्जन भरि बाल-बच्चावाली दूधमुहाँ बच्चाकेँ पतिक सिर मेढ़ि दोसर घरक बरक पूजा नइ करै छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

सितिया काकी नजैर उठा रघुवीर काकापर देलैन, मुदा बजैक जे विचार रहैन ओ मनेमे घोंटाइत रहलैन जे रघुवीर काका बुझि गेलखिन। मुस्कुराइत रघुवीर काका बजला-

"जखन मेला जाइक विचार मनमे उठल, तखन नहियोँ जाएब मनकेँ मारब हएत किने। से नहि तँ झब-दे चाह पीब बनि-ठनि कऽ आँगनसँ तैयार भेल आउ।"

पतिक बात सुनि सितिया काकी ठमकली। ने आँगन दिस डेग उठैन आ ने मेला जाइ दिस विचार उठैन।

मेला तँ मेला छी दुनियाँक मेला। जे दुनियाँक कोण-कोणमे पसरल अछि। अयोध्या जे रामक जन्मभूमि छिऐन, ओइठामक सोहान आ जनकपुरक सोहान, जे सासुर छिऐन, दुनू एक्केरंग थोड़े हएत। तैसंग गाम-गाम आ परिवार-परिवारक आराध्य देव रहने गाम-परिवारक संग बेकतीगत सेहो पूज्य छथिए, तैठाम केते दूर तक देखल जाए ई तँ नजैर-नजैरिक खेल छी किने?

ठमकल पत्नीक रूप देखि रघुवीर कक्काक मनमे परिवारक ओइ अभिभावक (रक्षक) जकाँ विचार उठलैन जिनका लेल एक दिस घर-परिवारक गाड़ीकेँ आगू ससरब कठिन अछि आ दोसर दिस पाछूसँ कोनो सहारो नहियेँ अछि, माने हाथ सोलहन्नी खाली...। तैठाम पत्नीक रूप बदैल सियाही सन सियाह बनियेँ रहल छेलैन, तँए विचारकेँ आगू करैत रघुवीर काका बजला-

"मेला देखए नइ जाएब तँ नहि जाउ, मुदा दुनू परानी एकठाम रहैत

जे चुपा-चुपी केने छी से हमरा नीक नहि लगैए।”

जहिना कोनो पशु आँखिक इशारा मात्र पेब फुरफुरा उठैए आ कोनो अँड़पेन देला पछाइतो नहि उठए चाहैए तेना सितिया काकीकेँ नहि भेलैन, ओ अपनो बले उठैत बजली-

“मेला देखी वा नइ देखी, जहिना छी तहिना तैयार भऽ टहैल आबए चलू।”

पत्नीक विचार सुनि रघुवीर कक्काक मनमे खुशी उपकलैन- जे पत्नियेँ ने लक्ष्मियो आ लक्ष्मीपात्रो छैथ जे अपन विभव देखि अपन शक्ति अजमा घरसँ बाहर दुनियाँक मेला देखए चाहै छैथ। बजला-

“बड़बढ़ियाँ कहलौं। मुदा गामो तँ गामे छी किने, कोनो कि शहर-बजार छी जे पतियानी लगा बनत। जेकरा जेतए अँटावेश होइ छै से तेतए बसि जाइए तँए शहर जकाँ एकपेरिया तँ नहि अछि, अछि तँ बहुपेरिया तखन कोन रस्ते जाएब शुरू करब, ई विचार तँ अखने ने कऽ लेब।”

ओना सितिया काकीक नजैर (मन) अखन धरि आन-आनकेँ जे देखने छेली तेही हिसाबक छेलैन, तँए आगू दिस तकैक ने खगते पड़लैन आ ने तकबे केलीह। जखन खगते नहि तखन कियो ओरियाने कथीक करत। अनेरे दुनियाँक बोनमे जे असगरे वौआएत, से कथीले? मुदा रघुवीर कक्काक विचार ठनका जकाँ सितिया काकीक मनमे खसले छेलैन। तैपर तेहाला (तेसर बेकती) कियो अछियो तँ नहियेँ जे कनी-मनी टपो-टोइया आकि संगो-साथ दइत। असगरमे दुसगर होइते छइ। मुदा लगले मन कलशलैन।

कलैशते चैती गाछक नवटुस्सा जकाँ मन काकीक टुसियेलैन, टुसियाइते बजली-

“जखन दुनू परानी अदहा-अदहा घरसँ बाहर धरिक दुनियाँ बाँटि

नेने छी तखन अपन विचारक विचार अपने ने पहिने ओइ मुहसँ देबै जइ मुहसँ विचार निकलल, पछाइत ने हमर पार औत?”

सितिया काकीक ‘पत्नी रूप’केँ पति–रघुवीरकाका–देखलैन। देखिते मन गवाही देलकैन जे अपन विचार पत्नी पूर केने बजली अछि, ओकरा पुराएब तँ अपने दायित्व छी किने। मुदा मुहसँ तँ वएह ने निकालब जे ओकर मुँह केमहर छइ? जाबे मुँह नइ देखब ताबे मुँह मिलानी केना करब आकि मुँह मिलान हएत केना..?

जहिना सम्पन्न फड़ल आमक गाछपर अनठेकानियोँ गोला फेकलासँ गोटे पाकल आम खसिये पड़ैए, मुदा की ओकरा ठेकानल कहब आकि ओ बेठेकानले भेल। मुदा बेठेकानलो तँ ठेकानल भइये गेल जे तोड़ि के अनलक।

ओना ठेकानल तँ ओ ने भेल जे ठेकना कऽ–माने लक्ष्य करि कऽ–गोला ओइ आमपर फेकलौं जइ आमपर मन गड़ल छल। गाछमे तँ सोहरी लागल आम ऐछे मुदा जेते अछि तेते खगतो नहियेँ ने अछि। आकि सभटा हमरे-ले अछि जे गोट-गोट कऽ तोड़ि लेब..! रघुवीर काका बजला-

“जहिना देश सेवा, मानव सेवा देश भक्ति छी तहिना भक्तिक बीच अभक्ति आ सभक्ति केहेन अछि ओ बिना बुझने भक्तियो केना करब..?”

ओना अपना जनैत रघुवीर काका सोझराएले बात बजला मुदा सितिया काकी नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ने ई बुझि पेली जे पतिक विचारक आगू अपने अदहे छी। तँए पिपाशु पक्षी जकाँ सितिया काकी रघुवीर काका दिस मुँहक दोसर बोल सुनैले आँखि उठौली।

मने-मन रघुवीर काका सितिया काकीक विचारकेँ तारि रहल छला। तारिते भारैत बजला- “जहिना दुनियाँक बोनमे सभ हेराएल अछि तहिना अपनो दुनू परानी तँ छीहे, तँए मेला देखैसँ पहिने मेलाक रस्ताक प्रण मनमे रोपए पड़त तखन ने मेलाक रस पीब, नहि तँ लोकेक भीड़

देखैत चलि आएब!”

ओना अखन धरि सितिया काकी मेलाक वएह रूप बुझै छेली, मुदा पतिक अनमोल विचार सुनि थकमकेली। मन कहलकैन अपने की बुझि रहल छी आ पतिक मुहेँ की सुनि रहल छी..! ओना सितिया काकी जिद्दयाहि स्त्रीगणक श्रेणीमे अबिते छैथ मुदा ने जिद्द धरैक विचार सक्कत छैन आ ने जिद्द पकड़ैक मन मजगूत छैन। मुदा आइ तँ रामनवमीक मेलाक संग नवरात्राक नवमी मेला सेहो छी..! सितिया काकी बजली-

“एना जे झाँपल-तोपल श्लोक बचै छी तइसँ नइ हएत, हमरा मुरकुट्टियेमे कहू जइसँ मन मानि जाए।”

पत्नीक सिनेह भरल पिपाशु मनकेँ जँ रघुवीर काका नहि थतमारि सकैथ, ई केहेन होएत। तहूमे ओ पत्नी जे जहियासँ माता-पितासँ उत्सर्जित भऽ हाथ पकड़ने एलैन, ओ केना हाथ पकड़ने आगूओ चलतैन ई तँ विचारणीय प्रश्न रघुवीर कक्काक मनमे रहबे करैन...।

जहिना कोनो विचार चितासन्न भेला पछातिये नव विचारक संग नव जीवन दइए तहिना काकाकेँ भेलैन। ओना जहिना सितिया काकी मने-मन विचारकेँ घोंटि रहल छेली तहिना मने-मन घोंटैत रघुवीरो काका अपन जिनगी पढ़ए लगला।

चालीस बर्ख पूर्वसँ जइ गाम-समाजमे साइयो रंगक छुआ-छूत पसरल अछि–माने जातियेटा मे नहि आनो-आनोमे–तँए ओइ समाजमे एकरूपता आनब तँ ओइ समाजक प्रमुख क्रिया भेबे कएल। जँ से नहि भेल तँ सदिकाल करवनो किछु-ले तँ करवनो किछु-ले हल्ला-फसाद, झगड़ा-झंझट होइते रहत आ समाजो टुटिते रहत। तँए जाबे कोनो बेवहारिक बन्धन–माने बेवहारिक चलैन–केँ एकसूत्रमे नहि आनि चलब ताबे समाजमे एकसूत्रताक जड़ि केना जड़ियाएत..?

यएह सभ विचार मथन करैत रघुवीर काका समाजक बीच अपन विचार रखलैन जे जखन सभ मनुक्खे छी तखन सभ एकठाम बैस किए ने खाएब-पीब। अनेरे, छुत-अछुतक बीच बँटल छी..!

रघुवीर कक्काक विचार संजीवनी जकाँ समाजकेँ जीवनदात्री बुझि पड़लैन, समाजक सभकेँ विचार नीक लगलैन। ओना रंग-रंगक अरचन बीचमे उठैक संभावना सेहो बुझिये पड़लैन, जइसँ विचारक संग बाटो टुटैक संभावना अछिए। मुदा गामक अधिकांश परिवारक एकमुँहरी विचार भऽ गेलैन।

समाजो तँ समुद्रे जकाँ अछि। जहिना समुद्रमे हरण, मरण आ जरन सदिकाल चलिते रहैए तहिना समाजोमे तँ होइते अछि। सएह भेल। एक गोरेक वृद्ध बाबाक मृत्यु भेलैन। जहिना सभ एकठाम बैस खाइ-पीबैक विचार केने छला तहिना सभ लोरिक बरियात जकाँ जरबैयो-ले गेला। जइसँ सबहक भेँट सभकेँ असमसान घाटमे भेबे केलैन। असमसाने घाटपर ने असमानक मन्दिर सेहो अछि। जे कखनो बरफवारी करैए तँ कखनो जलवारी आ कखनो अगवारियो तँ करिते अछि...। ओना जइ रोगक निदानक बाट पकैड़ समाजक कर्णधार उठि कऽ ठाढ़ हुअ चाहै छला ओइ दिस ओइसँ पहिने–माने वृद्धक मृत्युक पूर्व–सेहो कनी-कनी डेग उठा नेने छला जइसँ समाजमे आड़िक माने बन्धनक टुट-फाट सेहो शुरू भऽ गेल छल। जइसँ जाति-जातिक बीच विचार संघर्षक संग बेवहारमे सेहो उतैर रहल छल। मुदा आगि लगलेपर ने कुकराहा सेहो उड़ैए जे दोस्त-दुश्मनक भेद खतम करैत केकरो घरमे लगि जाइए। सेहो भइये रहल छल। जइसँ समाजक कोढ़-करेज खोखैर खाइबला बेवहार जरिये रहल छल।

ओना समाजमे सामाजिक बन्धन हौउ आकि देशमे देशक बन्धन, मुदा सभ–सामाजिक संगठनो आ राजनीतिक दलो–मंचपर एकरा अधला

कहिते छैथ, भलेँ परोछमे एकरे बले–माने छुआ-छुतेक बले–नचबो-गेबो किए ने करैत होथि।

ओना जहिना समाजो तहिना राजनीतिक दल सेहो अछिए। जे कियो हाथीक नाँगैर पकैड़ हाथीक परिचय दइ छैथ तँ कियो हाथीक सूढ़ पकैड़ आ कियो हाथीक टाँग पकैड़, मुदा सभकेँ तँ देखैक अपन-अपन दाबी छैन्हे जे असल हाथीक परिचय हमरे अछि।

भलेँ सभ अपन-अपन दाबी अपने-अपने घरमे किए ने रखैत होथि मुदा समस्यो तँ समस्या छी। जहिना समाजकेँ समाजक मंचपर आबि संकल्पक संग अंगीकार करैत बेवहारिक धरातलपर आबए पड़तैन तहिना राजनीतिक दलकेँ सामाजिक मंचपर चढ़ि समाजकेँ राजनीतीकरण करैक संकल्पक संग जमीनी सच्चाइकेँ प्रतिपादित करए पड़तैन। जा से नइ हएत ता दिल्लीक लड्डु बनैत रहत, रामनवमीक संग नवरात्राक नवमीक मेला अबैत-जाइत रहत।

रघुवीर कक्काक मनमे सेहो नव विचार जगलैन जइसँ मन मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत मन रघुवीर कक्काक विचारकेँ टुस्कियौलकैन। टुस्कियाइते विचार चैती कलश जकाँ भकरार हुअ लगलैन। भकरार होइते मुहसँ निकललैन-

“चलू जे राम से राम, रस्ते-रस्ते चलबो करब आ गपो-सप्प करब, भलेँ मेला देखी आकि नहि देखी।”

रघुवीर कक्काक विचारकेँ केते दूर तक सितिया काकीक सिताएल मन बुझलकैन से तँ ओ अपने जानैथ आ जानैथ सुनयना दादी मुदा रघुवीर कक्काक मनमे बिसवास जगबे केलैन। विस्मित होइत सितिया काकीकेँ जहिना माइयक गोदमे बैसल बच्चा अपन जिनगीक सोग-पीड़ा बिसैर चैनक साँस लइत अरामसँ जीवन मुक्त भऽ सुतैए तहिना पतिक खलियाएल गोद देखि मनमे जगलैन।

जगिते मनमे उठलैन- चालीस बर्खसँ आइ माने पूबसँ पच्छिम, की देखि रहल छी? की अपन रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल..?

ओना, टुटैत-बँटैत समाजकेँ देखि जेते चिन्तित रघुवीर काकाकेँ हेबा चाहिऐन से नइ छैथ, मुदा चिन्ता नइ छैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

कम चिन्तित हेबाक कारण छैन जे जेतए-जेतए एहेन बान्हक बन्धन अछि तइ बन्धनकेँ या तँ तोड़ि लेलैन वा छोड़ि-छाड़ि देलखिन। जइसँ हिमालयक तराइक सघन बोनमे जहिना ने केतौ रस्ता रहै छै आ ने बिनु रस्तेक कोनो जगह खाली छै, गाछक बोन छै अपन-अपन अँगना-घर सभ बनौनहि अछि।

सूर्यास्त होइते एक दिस घड़ी-घन्टक आवाज भेल तँ दोसर दिस आरती गायन। सितिया काकी बजली-

"गपे-सप्पमे रहि गेलौं, चाहक बेर सेहो भेल। अहूँ तैयार हौउ आ हमहूँ चाह बनौने अबै छी।"

पत्नीक पत्नीत्व देखि रघुवीर कक्काक मनमे सामक समत्व विचार जगलैन मुदा बजला किछु ने..!



शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017

बलधकेल कटौज

चाहक दोकानपर अबिते सुवोध नाथ बजला-

“हऽऽ जान बचल!”

सुवोध भाइक बात सुनिते भकचका गेलौं। ओना मुँहक हँफनीसँ बुझि पड़ैत रहए जे कमसँ कम तीन किलोमीटरक रबाड़क हँफनी छिऐन। घामे-पसीने तर-बेतर, ठाम-ठीम कुरतो भीजल आ अदहासँ बेसी पैरक चप्पल सेहो गरदा-धुरा चटने छैन..! किछु फुरबे ने करए जे सुवोध भाइकेँ प्रवोधियैन आकि वाह-वाही दिऐन, से तँ किछु बुझले ने छल तँ की बजितौं। मुदा मनमे प्रश्न तँ नाचिये रहल छल जे सुवोध भाइ सन बेकतीत्व बला बेकतीक मुहसँ ‘जान बँचब’ निकलल..!

साधारण लोक नहियेँ छैथ, साहित्यिक मंच हौउ आकि पंथाइक, सभठामक प्रवचनकर्ता छथिए। छेबे नहि करैथ सभ मानितो छैन्हे। तेकर कारण अछि जे शब्दक पतियानी आ मिलानी तेहेन छैन जे पाँति सुनि अनेरो धड़िया जेबे करब।

नअ बजेक समय, हरिपुर कार्यक्रममे जेबाक छल तँए चाहक दोकान अड्डा बनल जैठाम सभकेँ आठ बजे सम्मिलित होइक विचार सभ कियो कऽ लेलौं। सबा आठ बजे टेम्पू पकैड़ हरिपुर जाएब। अदहा घन्टाक रस्ता अछि, पौने नअ बजे तक पहुँच जाएब। पौने आठ बजे सुधीरक संग चाहक दोकानपर पहुँच गेल छेलौं। श्यामाचरण आ सोहन चाहक दोकानसँ दस लग्गा पाछू आबिये रहल छला, मनोहर आगू बढ़ता

तँए सबहक सभ विचार मिलले छल।

ओना सुवोधनाथकेँ सेहो बुझले रहैन जे आठ बजे तक टेम्पू पकड़ैले चाहक अड्डापर पहुँच जाएब अछि। मुदा सुतिहार लोक तँ सुवोधनाथ छथिये। तीन बजे भोरे उठबे करै छैथ, चारि बजैत-बजैत घरसँ निकैल केतौ-ने-केतौ अपन पंथक अड्डावाजी कैये अबै छैथ। मानो-प्रतिष्ठा आ द्रवो-जातक उर्पाजन भइये जाइ छैन। ओना, जे चला-चलती दस बर्ख पूर्व छेलैन तइमे कमी एबे केलैन अछि, मुदा तैयो तेते जजमनिका बना नेने छैथ जे ने काजक कमी भेलैन अछि आ ने आमदनीक। यएह ने छी जिनगी जे सुवोध मंचोपर बजिते छैथ जे हँसैत-खेलैत जिनगी जीब लेबे मनुक्खक जिनगीक सफलता छी।

एक संग सुवोध भाय हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ, होमियोपैथी इलाज सेहो करै छैथ, तैसंग साहित्यिक मंचक सम्मानित बेकती आ तैसंग अपन पंथक जिलाध्यक्ष सेहो छथिए।

दोकानक देवालमे टँगल घड़ीपर नजैर दिऐ तँ बुझि पड़ए जे क्षणे-क्षण, पले-पल कार्यक्रममे बाधा उपस्थित भइये रहल अछि। पजेबाक घर जकाँ काजपर जोड़ल जिनगीक घर सेहो अछिए, जेकर जोड़ दैनंदिनक काजसँ अछि। श्यामाचरण आ सोहन सेहो बिलंम होइत देखि मने-मन कुड़बुड़ाइत रहैथ मुदा सुवोध भाइक स्थिति देखि कियो बजैक साहस नहि करै छला। हँफनी कम होइते सुवोध भाय दोहरा कऽ बजला-

"हऽऽ जान बँचल तँ लाख उपाय हएत।"

सुवोध भाइक बातक कोनो अरथे ने लगए आ ने आगू बजैक कोनो विचार मनमे रहए जे किछु पुछबो करितिऐन। मुदा जेहेन रूपमे सुवोध भायकेँ देखि रहल छेलिऐन तइमे रूपे अरूप बुझि पड़ै छल। तँए मनमे ईहो हुअए जे ओहन बात ने बजा जाए जे सुवोध भाय कहैथ काटलपर नोन छिटै छी। तँए किछु बजबो केना करितौं मुदा जँ बजबे ने

करब तँ सुवोध भाइक मनक थरथरी कमितैन केना? ओना, पहिने जे बाजल छला जे 'जान-बँचल' आ पाछू जे बजला 'जान बँचल तँ लाख उपाय' तइमे किछु अन्तर बुझिये पड़ल। तँए पैछला गपक नाँगैर पकैड़ बजलौं- "सुवोध भाय, आगूक की उपाय अछि?"

ओना, हमर प्रश्न सुवोध भाइक प्रति छल मुदा सुवोध भाय बुझला ऐगला कार्यक्रमक, तँए बजला-

"जे समय गेल से गेल, आबो साकांछ भऽ चलै चलू।"

श्यामाचरण ऐ ताकमे छला जे सुवोध भाय पहिने अपन दर्द-पीड़ा मेटबैक बात बजता, मुदा से भइये ने रहल छल। ओना ई विचार मनमे उठि गेल छल जे ऊपरसँ सबहक जिनगी एकरंग लगितो भीतरे-भीतर छिड़ियाएल अछि, मुदा से तेना भऽ कऽ नइ बुझल छल। एते जरूर बुझल छल जे हाइ स्कूलमे अपन धाराक अनुकूल पढ़बै छैथ। ऐठाम एकटा प्रश्न तँ उठिते अछि जे 'अपन धारा' कोनो शास्त्रीय विचारधारामे केना मिलत? मुदा स्कूल-कौलेजक जे विषय वार पढ़ाइ अछि तइमे किछु विषय एहेन अछि जइमे अपन विचारधाराक प्रवेशक गुंजाइश कम रहैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जइमे धड़ धड़ा धारा बनि विचारधारा चलैए। जँ से नइ अछि तँ किए कियो 'अहिंसा परमो धर्मः' बुझै छैथ तँ कियो 'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' बुझै छैथ? खाएर जे अछि.., सुवोध भाइक अप्पन धारा छैन। जहिना अपन पंथ पच्चीसे प्रतिशत (चौथाइ) मीठ दवाइमे मरचाइ मिलबै छैथ तहिना अपनो पच्चीसे प्रतिशत पढ़बैमे बदलै छैथ। ओना सुवोध भाय जखन होमियोपैथीक इलाजक क्रममे रहै छैथ तखन विद्यालयक खोराकसँ दोसर रंगक खोराक चलै छैन तहिना पंथाइक जे मधुरधारा छैन तेकरा तेना तौल कऽ खोराक बनबै छैथ जे दवाइ खेनिहारकेँ ने सुआदेमे लगै छैन आ ने विचारेमे। विचारमे तँ तखन लगैए जखन सभ रंगक सुआद बुझि कियो निर्णय करए से तँ अछि नहि, नीपल-पोतल, केतौ-केतौ बाढ़िमे दहाएल जकाँ खेत भेटै छैन, तँ केतौ

ओहन पुरान परती जकाँ भेटै छैन जेकर उपजाउ शक्तिये पथरा कऽ माटि बनैत-बनैत तेते पथरा गेल अछि जे राड़ी-डबहारी छोड़ि दोसर घासो-पातकेँ जनमबैक शक्तिये क्षीण भऽ गेल छइ।

ओना सुवोध भाय जखन पंथक जिलाध्यक्षक रूपमे मंचपर बजै छैथ, तखन विलक्षण भाषाक प्रयोग तेना करै छैथ जे पुरना इतिहासक विचार कहै छैथ आकि आधुनिक इतिहासक, से बुझिये ने पाएब। अहाँ कहब जे जइ हवाइ जहाजकेँ उड़ैत देखै छी ओ आधुनिक छी मुदा एकरा केना झूठ कहबै जे भगवान राम लंकासँ अयोध्या पएरे आएल छला। ओहो तँ हवाइये जहाजसँ ने आएल छला?

ओना, सुवोध भाइक आमदनी गिनतीमे ठीके-ठाक छैन, आकि किछु-ने-किछु बढ़ोत्तरियो भेबे केलैन अछि। भलेँ पहिने लोकक जिनगीए पाइ-पाइक हिसाबमे छल आ आइ ओइ पाइकेँ महत्ते समाप्त कऽ देल गेल अछि। जइसँ अनेरे भरि जेबी किए रखि माल-जालक घन्टी जकाँ टनटनबैत रहत...।

सुवोध भाय आ सुवोध भाइक जे पंथ छैन ओइ पंथोक एहेन विचारधारो आ क्रियाशीलो रहलैन जे प्रेमसँ प्रेमी पकैड़ प्रेमास्पद होइत चलै छैन। जइसँ नव जजमान सँ किछु-ने-किछु गुरु-दछिना प्राप्त करिते आबि रहल छैथ, मुदा आइ तेहेन विर्ड़ो उठि गेल अछि जे गुरुए-जी ढौआ दऽ दऽ बौआ बनबै लगल छैथ, जइसँ सुवोधो भाय आ सुवोध भाइक पंथोकेँ नीक धक्का लगबे केलैन अछि। तइमे एकटा बाधा तँ बीचमे भइये गेल अछि।

ओना नवका जजमान लग एहेन समस्या नइ अछि, किएक तँ बेकतीगत स्वतंत्रता तँ उत्तम कोटिक जीवन अधिकार छीहे। मुदा जे पहिनेसँ सुवोध भाइक पंथसँ जुड़ल रहला जे रौदियाहा बबाजी जकाँ भेष-धारी आकि कतिका मछखौक जकाँ भेष-उतारी छैथ जे मौसमी नहि

बरखाउ छिआ, माने समैया नहि सभदिना छैथ। ओना फेर बरखा-बाढ़ि ऐबे करत आ पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ खेत-पथारमे माछो फड़बो करत आ जनमबो करबे करत तखन फेर बुझल जाएत। हुनका संग बलधकेल कटौज भीतरे-भीतर भइये गेल अछि। तेतबे नहि, नवयुगक जे विचारक छैथ ओ पुरान विचारक रस्तापर खाधि खुनि रोड़ा-पाथर गाड़िये रहल छैन। तेकर कारणो अछिए...।

सुवोध भाइक हँफनियोँ छुटलैन, दू बेर चप्पलकेँ पटैक गरदो-धूरा झाड़लैन आ दोकानक पंखाक हवासँ कुरतो सुखिये गेलैन। पानि-चाह पीब जखन भाइक कण्ठ सर्रास भेलैन आ मुँहमे पान देलखिन तखन बजला-

“बलधकेल कटौजमे जान फँसि गेल छल!”

ओना, सुवोध भाय अपन मनक बेथाक कथा बजै छला मुदा ने हमहीं बुझि पबै छेलौं आ ने तीनू संगीए–सुधीर, श्यामाचरण आ सोहन–मे कियो बुझि पबै छला, तँए सभ सबहक मुहोँ देखी आ मने-मन विचारबो करी। चारू गोरे बलधकेल शब्दमे वौआएल रही। केतबो गर लगबी तैयो बलधकेलक माने बलउमकी लागि जाए...। बलउमकी उठै छै तँ लोक आगू बढ़ैए मुदा सुवोध भाय डरे थरथर कपै छला तँए दुनूक गर मिलबे ने करए। चारू गोरे बजैसँ परहेज ऐ दुआरे करैत रही जे सुवोध भाय शिकारी छैथ, जँ एकोरत्ती कलछपन हएत तँ कुन्ज गली जकाँ सुवोध भाय केमहर ससैर जेता, तेकरो ठीक नहियेँ छल।

ओना, श्यामाचरण मने-मन सुवोध भायपर आगि बबुल होइत रहैथ, तेकर कारण रहैन जे ई कि कोनो साहित्यिक मंच छी आकि पंथक जे विद्वताक प्रदर्शन कऽ रहला अछि, ई तँ मात्र चाहक दोकान छी जैठाम दोकानदारो पढ़ै-लिखैक अभावमे उधार लेनिहारक नाम मने-मन मोन रखै छैथ आ गिलास वा कपक हिसाब कोयलासँ डाँरि खींच-खींच रखै

छैथ, हम सभ संगीए छिऐन, तरवन अनेरे किए पण्डिताइ करै छैथ। ओना ई शंका होइत रहए जे जँ कहीं सुवोध भाय आ श्यामाचरण दुनू अपनामे ओझरेला आ ओझराइत-ओझराइत ओझरीमे फँसि खिशिया कऽ घरमुहेँ ने भऽ जाथि। जखने चारि गोरेमे दू गोरे घरमुहाँ भेला तखने अपनो ओकाइत तँ अधिआइये जाएत, सेहो डर हुअए।

सभ विचारकेँ समेट बजलौं- "आगूक की विचार सुवोध भाय?"

ओना सुवोध भाय मुँह नहि खोलने छला, मुदा खोलैक उपक्रम जरूर करै छला, तइ बिच्चेमे श्यामाचरण बजला-

"एहेन जे बुड़िवान सुवोध छैथ जे अपनो मनकेँ अनेरे परेशान कऽ रहला अछि आ हमरो सबहक मनकेँ..!"

श्यामाचरणक विचारक वान जेना सुवोध भाइक मनमे लगलैन तहिना बजला-

"भाय, अहाँ सभ तँ एक मंचक संगी छी तँए अहाँ सभसँ केतेकाल छीप कऽ रहब?"

ओना–हमहूँ, श्यामाचरणो आ सोहनो–तीनू गोरे कान ठाढ़ केने रही जे सुवोध भाय अपन वेथावान छोड़ता मुदा चिक्कनि माटिक वा संगमरमरक पीछराह घाट परहक घटवार सुवोध भाय छथिए, फेर पीछराहे बात बाजि सभकेँ पीछरबए लगला...।

तरे-तर श्यामाचरण उमड़बो करै छला आ गुम्हरबो करिते छला, मुदा बाता-बातीमे समय बेसी खटियेने ऐगला काजो छुटिये रहल छल तँए थोड़ेक परहेज श्यामाचरण जरूर कऽ रहल छला।

बजलौं-

"जखन गामसँ निकैल सभ कियो हरिपुर जाइक विचार केने छी तखन गामक काज पहिने सम्हारि लेब किने, जँ से नइ सम्हरल रहत तँ अनेरे ने मनमे एकटा मोटरी लाधल रहिये जाएत।"

हमर बात सुनिते सुवोध भायकेँ डरियाएल साँस छुटलैन। मन हल्लुक भेलैन, बजला-

“भोरे मनमे उठल जे जाबे हरिपुर जाइबेर हएत, तइसँ पहिने एकटा जजमनिकाक काज सम्हारि आबी। भाय समय तँ काल छी किने, एको क्षण जँ हूसि जाएत तँ ओते ओ जिनगीकेँ हूसा दैते अछि!”

सुवोध भाइक घटना फेर चौपेतलक चौपेतले रहि गेलैन। ओना मनमे ईहो भेल जे सुवोध भाय जखन गैंची माछ जकाँ हाथोसँ छिछैल माटिमे गड़ि कऽ नुका जाइ छैथ तखन अनेरे ऐगला काजकेँ रोकने छी। मुदा तेहेन रूप सुवोध भाय चाहक दोकानपर आबि देखौने छला जे मनसँ हटिते ने छल। बिनु बुझने हटबो केना करत। बुझला पछातिये ने समधान होइत सम्हार करब। से तँ भइये ने रहल छल। दू-चारि मिनट जँ ऐगला कार्यक्रममे बिलंम हेबे करत तँ कहबैन जे चारि गोरेक जमात जमैमे किछु फेर-फार भइये जाइ छइ। मुदा से तँ पहुँचला पछाइत हएत। अखन तँ गामसँ विदाहे ने भेल छी। तँए जरूरियो ऐछे जे पहिने घर-गाम सोझरा ली। जँ घरे ओझराएल रहत तँ बाहरक काज मनसँ कैयो तँ नहियेँ सकै छी। अनेरे जीह सिकपर टाँगल रहत...।

तइ बिच्चेमे सोहन कहलकैन-

“सुवोध भैया, अहाँकेँ ई ने तँ होइए जे सासुरमे सारि-सरहोजिक दिलक संग दिल्लगी करै छी आ दिलहोरि खेलाइ छी।”

ओना सोहनक बात सुनि हँसियो लगल, मुदा जइ जगहपर छी तैठाम जँ हँसि देब तखन अनेरे मीठहा-माहुर परसा जाएत तँए अपने चुपे रही। मुदा सोहनक बात जेना सुवोध भाइकेँ सहवान जकाँ बुझि पड़लैन। बजला-

“सोहन बौआ, कहुना भेलह तँ तूँ छोटे भाए ने भेलह, तोरे सबहक बल-बुत्तापर ने हमहूँ सभ ठाढ़ो छी आ आगुओ रहब।”

श्यामाचरण मने-मन गुम्हरै छला, मुदा सोझराएल विचारकेँ–माने रस्तापर आएल विचारकेँ–पुन: ओझराबऽ नहि चाहैथ। तँए सह दैत श्यामाचरण कहलखिन-

“सुवोध भाय, केहेन बढ़ियाँ बात तँ सोहन कहलक। जवाब तँ अहीं ने देबइ।”

‘अपन हारल आ केकर दिनक मारल’ के बजैए जे सुवोध भाय बजता। तहूमे मंच परहक मचवान छैथ। मुदा समय केकरा छोड़लक जे सुवोध भायकेँ छोड़ि देतैन। खसल मने सुवोध भाय अपन विचारकेँ नुकबैत बजला-

“बौआ सोहन, जेना कियो कनसोह नेने छल कि की, जखने भरत ऐठाम पहुँचलौं कि चारि गोरे दम-दम कऽ पहुँच गेल!”

‘पहुँच गेल’ कहि सुवोध भाय चुप भऽ गेला। ओना साँससँ बुझि पड़ल जे तेज भऽ रहल छैन, मुदा बीचमे किछु बाजब उचित नहि बुझि चुपे रहलौं।

तैबीच श्यामाचरण सुवोध भायकेँ चरियबैत पुछलखिन-

“तब की भेल?”

श्यामाचरणक चरियाएब सुवोध भायकेँ जेना थरथरी पैसा देलकैन तहिना थरथराए लगला, मुदा तैयो जी-जाँति कऽ बजला-

“चारू गोरेकेँ पहुँचलापर देखलौं जे एकरंग वस्त्रो पहिरने अछि आ एकरंगा रूपो बनौने अछि।”

श्यामाचरण पुछि देलखिन-

“किए, घरवारी सभ नइ रहैथ?”

तैपर सुवोध भाय बजला-

“नइ, घरवारी असगरे रहैथ।”

श्यामाचरण पुछलखिन-

“अहाँ, हुनका सभकेँ चिन्है छिऐन?”

सुवोध भाय-

“किए ने चिन्हबैन। दू गोरे तँ वएह छल जेकरा हाथमे भट्ठा पकड़ा ‘अ-आ–सँ–ओना-मासी’ सिखौने छी, काल्हि तक संगे-संग छल, मुदा राता-राती की भेलै से बुझबे ने केलौं। जँ से बुझितौं जे एना गामक लोकक चालि बदैल रहल अछि तखन तँ गाम छोड़ि दैतिऐ, नइ जइतौं!”

श्यामाचरण-

“गप-सप्प की भेल?”

सुवोध भाय-

“गप-सप्प करैले तँ तैयारे रही, जाबे पहिने गप-सप्पमे रक्का-टोकी नइ हएत ताबे काजक संग विचार केना बदलत, ओ तँ जरूरीए अछि। मुदा से भेल नहि। हो-हो कऽ कऽ एक्केबेर रेबाड़लक।”

श्यामाचरण-

“अहाँ किछु ने बजलिऐ?”

सुवोध भाय-

“डरे पथरी चमैक गेल। तहूमे असगरे छेलौं, ओइठामसँ कहुना-कहुना कऽ जान बँचबैत भगलौं।”

खसल-पड़ल सुवोध भाइक विचार सुनि सोहन बाजल-

“भैया, अहूँ बड़ लोभी छी, अधला-सँ-अधला जगहक पाइ समटैक पाछू लगल रहै छी। जाबे दुनियासँ निकैल दुनियाँ नइ देखबै ताबे अहिना दुनियाँमे दीनिया बनल रहब।”

समगम होइत देखि बजलौं-

“अच्छा, जे भेल से भेल दिनक दोख छल। आब ऐगला काजमे

देरी नहि करू। नइ तँ गाम-सँ-बाहर धरि हँसारैत करैत रहब।”

सुवोध भाय बजला-

“मनोहरकेँ नहि देखै छिऐन?”

सोहन-

“ओ आगू टेम्पू पकड़ता।”

मनोहरकेँ आगू टेम्पू पकड़ब सुनि सुवोध भाय सहैम गेला। सहैम ई गेला जे जेते ऐठाम देरी भेल तेते मनोहरकेँ रोडमे ठाढ़ भेल-भेल बीतल हेतैन। एक तँ ओहिना गाड़ी-सवारीक प्रतीक्षा जनमारा होइए, ऐठाम तँ सहजे कीर्तिगत कर्मक समय छी दोखी तँ हमहीं हएब। मुदा संगिये ने संगबुझो होइ छैथ।

यएह सोचि पाँचो गोरे टेम्पू पकैड़ हरिपुर विदा भेलौं।



शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017

जारैनक दुख मेटा गेल

सरस्वती पूजाक परात–माने माघक तेसर सप्ताहक अन्तिम दिन–चिन्तामग्न भुल्ली काकी गुमसुम भेल घूर लग बैसल छेली। बगलमे बारह बर्खक बेटी–मरनी–सेहो बैसल छेलइ। मने-मन भुल्ली काकी विचारि रहल छेली जे आइ भरि–माने राति तक–तँ जारैन चलत मुदा काल्हिसँ की हएत! कोनो गरे ने देखा पड़ि रहल छेलैन जे केना जारैनक दुख मेटाएत।

ओना मरनीक जन्म ओहन परिवारमे भेल छल जइ परिवारमे बिनु जोत-कोर कएल खेत जकाँ बाल-बच्चाक बुधि परती बनल रहिते अछि। रहबो केना ने करतै, एक दिस गाममे स्कूल नहि जे धिया-पुताक लाट पकैड़ बच्चा गामोक स्कूल धरिक शिक्षा प्राप्त करत, आ ने ओहन विस्तारित परिवार जइमे बहुआयामी कारोबार रहने बुधिक विस्तार होइए। तँए बाल-बच्चाक बुधि सकुचा कऽ थकुचा जाइते अछि। आ ने ओहन परिवारक संग सम्बन्ध रहैए जइमे परिवारजन अपने जिनगीसँ समाजक जिनगी आ समाजक जिनगीमे अपन परिवारक जिनगी देखनिहारो आ बुझि कऽ बुझौनिहारो रहैए।

ओना, आन दिन भुल्ली काकी दुनू माइ-धी जखन घूर लग बैसे छेली तखन अपन बीतल जिनगीक बेथा-कथाक संग भुल्ली काकी राजा-रानी, रजनी-सजनी, फुलकुमारी-फुलटुस्सीक संग फुलिया-फलियाक खिस्सा सेहो मरनीकेँ सुनैबते छेली। भुल्ली काकीकेँ गामोक लोक खिस्सकैर बुझिते छैन जइसँ केते गोरे 'खिसनी काकी' सेहो कहिते छैन।

अचेत बालबोध तँ सहजे घूर पजैरते चारूकात बैस खिस्सो सुनैए आ आगियो तपिते अछि। यएह ने भेल जिनगी जे जाड़क दुख मेटबै-ले आ जड़ाएल हथियारक आक्रमणकेँ रोकैले घूरक आगिकेँ हथियार जकाँ उपयोग करैए। जखने दुखक आक्रमण कमैए तखने ने ओते देहमे सुखक आगमन होइते अछि। जखने देह सुखाएत–माने देहमे सुख हएत–तखने ने सुखक सुख बुझि पड़त। दुनियाँमे के एहेन अछि जे सुख नहि चाहैए। भलेँ केते भेटल वा नइ भेटल ई दीगर बात भेल, मुदा केकरो सुखक खगता नइ छै ई बासी-मुहेँ झूठ बाजब नीक थोड़े हएत।

माइक खसल मन देखि मरनी बाजल-

"माए, मन किए एना खसल छौ?"

बेटीक बात सुनि भुल्ली काकीक मनमे अपन जिनगी आ अपन परिवार नाचि उठलैन। ओना केते गोरेकेँ परिवारक संग समाजो कहियौ आकि परिवारसँ बेसी समाजेक कहियौ, मनमे नचै छैन मुदा से भुल्ली काकीकेँ नहि भेलैन। हेबो केना करितैन। ओ तँ समाजक बीच बसल रहितो परिवारेक चिन्ता–माने परिवारक भरण-पोषण–सँ आगू नहि बढ़ि सकल छेली, मुदा तँए कि भुल्ली काकी समाजक काजसँ सोल्होअना हटले रहली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। समाजमे केतौ बिआहे-दान भेल आकि आने नमहर कोनो काज, तइमे नइ जा अपन भाँज पुरबै छेली सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। से तँ पुरैबते छेली। मुदा तेकरा लोक थोडे समाजक काज–माने समाज सेवा–बुझैए। ओ तँ तेहेन चलनसारि अछि जे काजक हकार पबिते लोक अपन भागीदारी उपस्थित करिते अछि।

मरनीक बातसँ भुल्ली काकीक मनमे ईहो तँ एबे केलैन जे कमसँ कम एते तँ बेटीक जिज्ञासा जगबे कएल जे खसल मन देखि बुझैक जिज्ञासा केलक। मुदा जे जिज्ञासा केलक ओ अखन–जाड़क मासमे–थोड़े एकरा बुते पुरौल हएत। तेहेन समय अछि जे जारैनक खर्च बेसी रहनौं

माने भानससँ घूर तक, आमदक रस्ता बन्न अछि। ओना, सूर्यक रौदसँ काँचो लकड़ी वा गाछक पातो सुखि कऽ जारैन भऽ जाइए मुदा सूर्य तँ अपने तेना जाड़ो आ शीतलहरियोक ज्वरसँ आक्रान्त छैथ जे मुहों देखब कठिन अछि, तैठाम जारैनक सुख केना भेटत?

भुल्ली काकीक मन जारैनसँ जरनबाह दिस बढ़लैन। जरनबाह दिस मन बढ़िते नजैर पतिपर पड़लैन।

पतिपर परिते मोन पड़लैन केना पतिक संग बेरू पहरमे सभ दिन जारैन आनए जाइ छेलौं। आगू-आगू कान्हपर लग्गी नेने ओ रहै छला आ पाछू-पाछू अपने जाइ छेलौं। अम्बोह गाछी-कलम गाममे अछिए, निच्चासँ जे लग्गीसँ पबै छला सेहो तोड़ै छला आ जे नइ पबै छला तेकरा गाछपर चढ़ि कऽ तोड़ै छला। जइसँ दुनू साँझक जारैनक ओरियान तँ भइये जाइ छल जे किछु-ने-किछु उगैरियो जाइत रहए जेकरा जाड़-बरसात-ले ओरिया कऽ घरमे रखै छेलौं।

चारि साल पूर्व झलिमा कक्काक मृत्यु गाछेपर सँ खसने भेल छेलैन। जामुनक गाछपर सँ जारैन तोड़ैकाल झलिमा काका खसि पड़ला। गाछक ऊपर चढ़ि कऽ जारैन तोड़ै छला, भारी लग्गी छेलैन्हे जे सम्हारमे नइ रहलैन, बेसम्हार होइत खसि पड़ला।

भेल ई जे एकटा मोटगर जामुनक डारि सुखल छेलै, जइमे लग्गी लगा जे अपन सभ बल तोड़ैमे लगौलैन जइसँ बल ऊपर बढ़ने पएर ढील भऽ गेलैन! जारैन तँ टुटि गेल मुदा लकड़ियेक आसमे लगियो रहबे करै, जेकरा दुनू हाथसँ झलिमा काका पकड़ने रहैथ, ओही आसमे खसि पड़ला। लग्गियो हाथेमे रहैन डारिपर सँ डारिपर खसैत निच्चाँ खसला। ठनक जमीन रहबे करै चुरम-चुर भऽ गेला। घन्टा भरिक भीतरे प्राण छुटि गेलैन। जे भुल्ली काकी अपन आँखिक सोझमे देखने छेली।

ओना आजुक परिवेशो नहियेँ छेलैन जे भुल्ली काकीक मनमे गैसक

चुल्हि वा गैसकेँ जारैन बुझितैथ...। लगले भुल्ली काकीक मनमे बेटीक प्रश्नक जवाब फुरलैन। जवाब फुरैक कारण भेलैन जे जहिना घरमे बाइस-बेरहट नइ रहने भुखाएल बच्चाकेँ माए प्रवोधैत किछु आन वस्तु दैत वा मुहसँ कोनो-कोनो बात कहैत तहिना भुल्ली काकी बजली-

"बुच्ची, आइये भरि जारैन चलत। काल्हिसँ कथी लऽ कऽ भानस करब आ कथी लऽ कऽ घूर करब। समय तेहेन अछि जे जान बँचब कठिन अछि।"

ओना मरनी बाध-बोनसँ गोबरो बीछि-बीछि आनै छल, जइसँ गोइठा-चिपरी सेहो पाथि जारैनक ओरियान करै छल आ गाछियो-बिरछी आ बँसवारिसँ सुखल पात खड़ैर अनिते छल। मुदा जारैन-ले तँ अखन मासे कुमास अछि। भरि दिन सौनक झिसी जकाँ शीतो आ गाछपर सँ टप-टप पानिक बून जकाँ ओसो खसिते अछि।

अदहा अगहनसँ जे शीतलहर पनपल ओ रसे-रसे बढ़िते गेल। पूस चढ़ैत-चढ़ैत एहेन विकराल रूप बनि गेल जे लोकक दैनंदिनक काजेटा प्रभावित नइ भेल, जीबो दुभर हुअ लगलै। जइसँ बँचैक एकमात्र सहारा आगिये रहल। भरि-भरि दिन लोक आगि पजारि कहुना-कहुना दिवस गुदस करए लगला।

जखने अगियासीक विरधी हएत तखने जारैनक खर्च बढ़बे करत। तहूमे बैसाख-जेठक अगियासी नहि जइमे समैयो संग दइए। एक तँ ओहुना जाड़क मासमे ठंढक प्रकोपसँ आगियोक शक्ति कमि जाइए, तैपर अधिक शक्तिक खगता भेने जारैनक अधिक खर्च होइते अछि। ओना भुल्ली काकी आने-सालक (पाछूक साल) अटकारि कऽ जारैनक ओरियान करि कऽ रखने छेली, मुदा खर्च बढ़ने ओ माघक तेसर सप्ताह बीतैत-बीतैत ओरा गेलैन।

ओना अचेतन मन मरनीक रहने माइक प्रश्नक उत्तर लगले सूरे दैत

बाजल-

"जारैन की कोनो खाइक वौस छी जे काज नइ लागत–माने बोइन बुत्ता नइ हएत–तँ लोककेँ भुखसँ परान छुटि जेतइ। जारैन तँ बाधसँ बोन धरि भेटैए। दुनू माइ-धी आनि लेब।"

ओना बेटीक बात सुनि भुल्ली काकीक मन जुड़ेबे केलैन। जुड़ाइक कारण भेलैन जे जखन केकरो बेटा-बेटी जिनगीक विकट घड़ी कटैले फाँड़ बान्हि तैयार हएत तँ जरूर ओ ओइ विकट घड़ीकेँ टपबे करत।

मुदा लगले भुल्ली काकीक मनमे भेलैन जे एक तँ गाछ चढ़ै-जोकर नइ अछि, शीतसँ तेना भीज कऽ पीछड़ाह बनि गेल अछि जे ओइपर चढ़ि जरनवाहि करब दुसकर भऽ गेल अछि। तैपर ईहो तँ ऐछे जे गाछपर पुरुख-पात्र ने चढ़ि कऽ जरनवाहि करै छैथ, मरनी केना गाछपर चढ़ि जरनवाहि काए सकैए? ई तँ विचारक वेगमे भँसि, माइक बेथाकेँ कम करैक क्रममे बाजि गेल। हँ एते संभव अछि जे छोट लग्गीसँ छोट-छोट गाछक सुखल ठौहरी तोड़ि आनि सकैए। मुदा हमरेटा संगे शीतलहरीक प्रकोप अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। सभकेँ छै, तँए छोट-छोट सुखल ठौहरी छोट-छोट गाछमे आब थोड़े हएत ओकरा तँ कहिया ने लोक तोड़ि कऽ जरा नेने हेतइ।

गाछक सुखल ठौहरीपर सँ उतैर भुल्ली काकीक मन गाछक पातपर पड़लैन। पातपर पड़िते मन कलियाएल फूल जकाँ कलियेलैन। कलियेलैन ई जे गाछेक पातटा नहि, बँसवारिमे बाँसोक पात तँ धरतीपर खसिते अछि। एक बेर बहुत नहि, मुदा थोड़बो-थोड़ तँ हेबे करत जे अपनो दुनू माइ-धी आनि सकै छी। खुशीक दशांश खुशी भुल्ली काकीक मनमे उठलैन। बजली-

"बेटी, जेहेन बेर-बिपैत पड़ैबला अछि ओकरा मेटेबहक केना?"

बजैक क्रममे मरनी समस्याक–माने प्रश्नक–नाँगैर पकैड़ तँ बाजि गेल छल मुदा पड़ाइतकेँ ने नाँगैर पकैड़ पकड़ल जा सकैए, मुदा जे–माने पैछला दू मासक शीतलहरी–असथिर भेल अजेगर जकाँ थुसकुनियाँ मारि बैसल अछि ओकरा केना पकैड़ सकैए। माइक प्रश्न सुनि मरनी जारैनक मरम दिस जखन नजैर उठौलक तखन मर्माहत हुअ लगलै। मनमे रंग-रंगक प्रश्न उठए लगलै। बाध-बोधसँ चराटी गाए-महींक गोबर बीछि-बीछि अनै छेलौं, ओकर गोइठा-चिपरी पाथै छेलौं, से ने आब गाए-महींस चड़ैले–ठंढ दुआरे–जाइए आ ने अपने ओइ कनकनीमे टहैल-बुलि पाएब। तखन गोबर केतए-सँ आनब। जखन गोबरे ने रहत तखन गोइठा कथीक बनाएब...?

फेर लगले मरनीक मन तरैप गेलइ। तरैपते उठलै जे रस्तो-पेरापर दू-चारि चोत गोबर भेटिये जाएत, जेकरा आनि कऽ पाथबो करब तँ ओ सुखाएत केना? काँच गोबरक जारैन केहेन हएत? गोबरोक जारैन बनबैक तँ मासो आ मौसमो होइ छइ किने। कम्मो-सम्म रौद भेने पातर गोइठा बनौलो जाइए आ सुखि-सुखि जरनो बनैए। मुदा सेहो नहियेँ अछि। जेना-जेना रौदक धाह बढ़ैत जाइए तेना-तेना ने गोबरो-गोइठाक आकारोमे बढ़ोत्तरी होइ छइ। जेठुआ रौद गोरहाक होइते अछि। जे रायफल जकाँ जाड़सँ रक्षा करिते अछि, सएह ने सठि गेल।

मरनीक मन आगू बढ़ि गाछक सुखल ठौहरी आ निच्चाँमे खसल पातपर पड़लै। पातपर पड़िते मन औना गेलइ। औना ई गेलै जे अखन तँ गाछक पातो खसब बन्न अछि। ओकरो पतझाड़ होइक समय होइए। ओहो तँ बारहो मास एके रंग नहियेँ खसैए। तखन सुखल पात केतए-सँ खड़ैर आनब?

दुनू माए-बेटी–माने भुल्ली काकी आ मरनी–घूर लग बैसल आगूक जिनगीक संग जीबैक आशा ताकि रहल छेली। कोनो आशा नजैरक सोझ आबिये ने रहल छैलैन। जखने केकरो जिनगी जीबैक आशामे

विकट संकट उपस्थित भऽ जाइए तखने ने ओइ संकटकेँ भगबैमे मनो आ मनक मथनो ढाही मारि-मारि चूरम-चूर होइए, से तँ दुनू माए-बेटीकेँ भइये रहल छल, तही काल तेरह-चौदह बर्खक करनी सेहो पहुँचल।

मरनी आ करनीक बीच सात-आठ बर्खसँ बहिना लगल छइ। जेहने मरनीक परिवार बोनिहारिनीक अछि तेहने करनीक परिवार सेहो अछि। ओना करनीक परिवार मरनीसँ नमहर अछि मुदा जीबैक–माने परिवार चलैक–आशा दुनूक एक्के रंग छइ।

लगमे करनी अबिते घूर लग बैसैत बाजल-

“बहिना, तोरा ऐठाम तँ अगियासियोक ओरियान छह, हमरा तँ दिनमे भानसो हएब कठिन अछि।”

करनीक बात सुनि मरनीक मनमे एते तँ आशा भइये गेल जे हमरा आइ भरिक–माने रौतुका भानस करै तकक–जारैन अछियो मुदा बहिनाकेँ तँ सेहो ने छइ। जखन ओकरा आइयो भरिक जारैन नइ छै, तखन ओ केना जारैनक दुख मेटाएत?

तँए करनीक जुक्ति–माने जारैन ओरियान करैक विधि–केँ मरनी अखियाइस कऽ सुनए चाहि रहल छल। कोनो बेमारी साए गोरेकेँ आकि हजारे गोरेकेँ किए ने हौउ, मुदा जँ सभकेँ एकरंग बेमारी रहत तँ ओकर दबाइयो एक्के हएत किने। ओना, दुनू-गोरेक मनमे गंभीर समस्यो छल आ ओकर समाधानक गंभीर विचारो चलिये रहल छेलै, मुदा तेकरा मरनी पतझाँप दऽ बाजल-

“बहिना, तोंहू भरि दिन झूठे-फूसेक परसादी बँटने फिरै छह?”

मरनीक बात सुनि करनीक मनमे जोरक धक्का लागल। धक्का लगिते मनमे फुरलै जे दुनियाँक तँ यएह सभसँ पैघ बेमारी अछि जे कियो केकरो दुख-बेथा नइ पतियाइत अछि आ जँ पतियेबो करैए तँ ओकरा हँसी-चौलमे उड़ा दइए।

कहू, जे जारैनक दुआरे एहेन समयमे भानस बन्न छै आ बहिना भऽ कऽ कहैए जे 'भरि दिन झूठे-फूसेक परसादी बँटै छह।' मुदा छी तँ बहिन किने, ईहो तँ भइये सकैए जे हँसी-चौलमे दुखे बिसरा दियए। मनमे रहने ने दुख देहो आ मनोकेँ दुखबैए आ मन बहैल गेने तँ दुखो ने बहैल जाइ छइ। मनकेँ असथिर करैत करनी बाजल-

"बहिना, तोरा सन पथराएल लोककेँ जाबे आँखिसँ नइ देखा देब, ताबे अहिना अनका दुखकेँ सुनि-सुनि हँसबो करबह आ चौलो करबह।"

करनीक बात सुनि मरनी ठमकल। मुदा लगले जहिना जिनगी चीत-सँ-पट वा पट-सँ-चीत नइ होइए, रसे-रसे करोटिया होइत-होइत माने करोट बदलैत-बदलैत बदलैए तहिना मरनियोंक विचार केना लगले उनैट जाइत। ओना मने-मन मरनी अपन अबैबला दुखकेँ जरूर देखि रहल छल मुदा गपो-सप्पक तँ अपन दुनियों अछि आ दुनियाँदारी सेहो अछिए...।

दुनू बहिनाक बीच विचारक बेवधानकेँ–माने बीचक दूरीकेँ–सामंजस करैत भुल्ली काकी बजली-

"बुच्ची, अखन अहाँ दुनू गोरे बच्चा छी, तँए जेते बुझला पछाइत–माने बुधि भेला पछाइत–जिनगीमे गति अबैए से अखन नइ आएल अछि। तँए नीक जकाँ जइ ढंगसँ बुझक चाही से नइ बुझि पेब रहल छी।"

भुल्ली काकीक विचार सुनिते करनी जेना अपन विचार व्यक्त करैमे सह पौलक तहिना मुँहक रूखि बदललै। बदैलते मरनी दिस तकैत बाजल-

"बहिना, तोरा तँ दू गोरेक परिवार छह तँए हल्लुक सवारी पेब घोड़ा जकाँ फौद खेलाइ छह मुदा हमरा तँ छह गोरेक परिवार अछि, कहुना-कहुना तोरासँ दोबर-तेबर जारैनक खर्च अछि!"

करनीक बात सुनि भुल्ली काकी बजली-

"करनी बुच्ची, एहेन समयमे जारैनक ओरियान केना करब?"

भुल्ली काकीक बात सुनिते करनीकेँ अपन माइक सिखौल बात मोन पड़लै। मोन पड़िते बाजल-

"काकी, अखन तँ ने गोइठा-चिपरीक ओरियान भऽ सकैए आ ने जारैन-काठीक, गाछ-बिरीछक पातो नहियेँ भऽ सकैए, तखन तँ एकटा उपाय ऐछे जे गाछ-बिरीछ ने शीत-पाला बीता कऽ पात छोड़ैए मुदा बाँस तँ ओसक आगमन होइते पात छोड़ए लगैए, तँए बँसबिट्टीक बिच्चोमे आ कातोमे पात झड़िते अछि, ओहीमे सँ खड़ैर कऽ आनब।"

करनीक विचार सुनि भुल्ली काकीक मन सहमलैन। सहैमते बजली-

"बुच्ची, अपना सभ सन-सन लोक-ले राजा आ दैव दुनू बेपाट अछि, तखन तँ अपनो सभ मनुक्खे छी ई तँ बुझए पड़त किने।"

भुल्ली काकीक बात सुनि करनी बाजल-

"काकी, 'राजा-दैव' नइ बुझलिऐ?"

करनीक प्रश्नसँ भुल्ली काकीक मनमे खुशी उपकलैन। खुशी उपैकते मुस्की दैत बजली-

"बुच्ची जहिना राजा मदारी छी जे परजाकेँ बानर बुझि नचबैए तहिना दैव मदनारी भेल जे दैव सभकेँ डोर पकैड़ नचबैए।"

भुल्ली काकीक बात जहिना करनी सुनलक तहिना मरनियोँ सुनलक मुदा बुझलक दुनूमे सँ कियो ने। तँए भुखल बच्चा जकाँ दुनू गोरे भुल्ली काकीक मुँह दिस बकर-बकर ताकए लगल। जे भुल्ली काकी सेहो बुझली। ओना भुल्ली काकीकेँ मनमे ई कुवाथ नहि भेलैन जे किए ने हमर बात दुनू बुझलक। मनमे ई भेलैन जे अखन तँ दुनू बच्चा अछि तँए

दुनियाँदारीक बात नइ बुझैए। मुदा बुझै-जोकर तँ भइये गेल अछि। आब कहिया बुझत। बारह-चौदहबर्खक दुनू ऐछे, किछु दिनमे बिआह-दान हेतइ, सासुर बसत, परिवारक भार पड़बे करतै। से नहि तँ दुनूकेँ दोसर ढंगसँ बुझौनाइ नीक हएत।

दोसर ढंगसँ बुझबैत भुल्ली काकी बजली- "बुच्ची, जहिना देखै छहक किने जे एक दिस बरखाकेँ बहन्ना बना राजा गाछ-बिरीछ लगबै पाछू बेहाल अछि तँ दोसर दिस आन-आन देशसँ तेलो आ गैसो कीन-कीन, धुआँ-धुकुरक बहन्ना बना घरे-घर पसारि रहल अछि।"

भुल्ली काकीक बात करनियोँ आ मरनियोँ बुझलक। बुझैक कारण भेलै जे आँखिक सोझमे गामेमे देखि रहल अछि। ईहो देखि रहल अछि जे भानस करैमे सुविधाजनक सेहो अछिए। मुदा लगले एकटा प्रश्न मनमे उठलै- तखन भुल्ली काकी किए 'बहन्ना' कहै छथिन..! करनी बाजल-

"काकी, अहाँ एकरा बहन्ना किए कहै छिऐ?"

करनीक जिज्ञासु प्रश्न सुनि भुल्ली काकी गंभीर भऽ गेली। गंभीर होइक कारण भेलैन जे जेहेन उपयोगी विचार अछि तेकरा जँ ऊपरे-झापरे किछु कहि बुझा देबै से नीक नहि। तँए प्रश्नक गंभीरताकेँ देखि गंभीर होइत बजली-

"एते जे गाममे गाछ-बिरीछ अछि, जे गामक सम्पैत छी, जँ एकर उपयोग नइ हएत तँ हएत की? देखिते छहक जे लकड़ीक काज जे अछि ओ धीरे-धीरे लोहो आ प्लाष्टिको पकैड़ रहल अछि, तखन गामक-गाम जे लकड़ीक बोन अछि, ओ की हएत?"

भुल्ली काकीक बात सुनि करनी मुड़ी डोलबैत बाजल- "हँ, से तँ भइये रहल अछि।"

विचारमे सहमति देखि भुल्ली काकी बजली- "छोड़ह दुनियाँदारीक गप, अखन जइ दुखसँ दुखी छह तेकर निमरजना केना हएत, से गप

करह।”

भुल्ली काकीक बात सुनि करनीक मन एकाएक बैसए लगल। मनमे नाचए लगलै जे भानस बिनु जरने केना हएत? तोहूमे जैठाम छी तिनको नहियेँ छैन जे मुहोँ खोलब–माने मंगबो करबैन–तँ मुँह भरत?

पाछू उनैट करनी तकलक तँ माइक बात मोन पड़लै। मोन पड़िते बाजल-

“काकी, बँसबिट्टी सभमे तेते पातो आ सुखल कड़चियो सभ खसल अछि जे जँ ओकरा खड़ैर आनब तँ जारैनक ओरियान भऽ जाएत।”

करनीक बात भुल्ली काकीकेँ सोहंतगर लगलैन। बजली-

“तखन ते जारैनक दुखे मेटा जाएत। समैयोमे देखै छी जे दिनो-दिन (कुहेस) कमले जा रहल अछि। सरस्वती पूजा भइये गेल। वसंतक आगमन सेहो भइये रहल अछि। गाछो-बिरीछ पतझाड़ लेबे करत।”

हँसैत मरनी बाजल-

“तखन तँ जारैनक दुखे मेटा जाएत किने?”



शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017

पढ़ल सुगा बौक

भिनसुरका उखड़ाहाक नअ बजे, ललित काकाकेँ अपन फलित फल देखि मने-मन कूहसँ कूही हुअ लगलैन। बेर-बेर मनमे उठि रहल छैन जे की केलौं? केकरा-ले केलौं..? आ लगले मन घुमि ईहो कहै छैन जे अपन कर्तव्य बुझि परिवारमे सभ किछु केलौं मुदा अपना-ले की केलौं? अपन कर्तव्य अपना लेल की हेबा चाही से केते दूर धरि केलौं..?

ललित कक्काक जन्म मध्यम किसान परिवारमे भेल छैन। ओना, मध्यम किसानक कोनो निसचित सीमा नै अछि।

दस बीघा जमीनबला सेहो मध्यम किसानक श्रेणीमे अबै छैथ आ बीस-तीस-चालीस-पचास बीघा जमीनबला सेहो अबिते छैथ। ओना, जमीन-जमीनक मोल सेहो अछिए। कोनो गाममे नीक माटि रहने नीक उपज सेहो होइए, जखन कि कोनो गाममे दब माटि रहने उपजो दब होइते अछि जइसँ एक रंग रकबा–जमीनक–रहितो उपजमे कमी-बेसी भेने जीवनमे सेहो अकास-पतालक अन्तर होइते अछि।

ललित कक्काक जन्म राधोपुर पंचायतक बेलबारी गाममे भेल छैन। राघोपुर पहिने तँ नमहर पंचायत छल मुदा हालक जे पंचायतिक सीमांकन भेल तइमे चारि गाम कटि दोसर पंचायत बनने राधोपुर पंचायतक सीमा छोट भऽ गेल, जइसँ अदहा-अदही जनसंख्यो आ जमीनो भऽ गेल मुदा तैयो जे पंचायतक जनसंख्या निर्धारित अछि तइसँ सबैयासँ किछु बेसीए जनसंख्या राधोपुर पंचायतमे अखनो अछिए। बेलबारी राधोपुरक

बगलेक गाम रहने ओही पंचायतमे अखनो अछिए।

बेलबारी साए घरक गाम। ओना राजस्व गाम (Revenue Village) सेहो छीहे, मुदा गामक अधिकांश जमीन आन-आन गामबलाक छिऐन। गामक अदहासँ बेसी परिवार–माने पैंसैठ परिवार–छेहा बोनिहारक परिवार छी, बाँकी पैंतीस परिवार किसानक परिवार अछि। ओना, ओहो पैंतीस परिवारमे ने एकरंग जमीन अछि आ ने जनसंख्ये। तीन बीघासँ पचीस बीघा धरिक परिवार अछि। कहैले तँ पैंतीसो परिवार किसाने-परिवार छैथ आ किसानीए जिनगियो छैन, मुदा एक-दोसरक बीच दूरी नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

गाममे तीन परिवार ओहन अछि, जइमे मनोहरक परिवार सेहो छैन, जे खेतीक संग छोट-छीन महाजनियोँ–अन्न-पानिक–करै छैथ आ गाइयो-महींस पोसने छैथ। मुदा अपना हाथे ने खेतियेक कोनो काज करै छैथ आ ने माले-जालक।

मनोहर गामे नहि चरि-कोसीमे इमानदारो आ प्रतिष्ठित सेहो मानल जाइत रहला। आन महाजन जकाँ–माने रतिकान्त आ मुनेसर जकाँ–मनोहरकेँ कियो खौदका बेइमान नइ कहलकैन। रतिकान्त आ मुनेसरकेँ लोक ई कहि बेइमान कहै छेलैन जे कर्ज आपस केलाक पछाइतो ई दुनू कहिते रहै छेलखिन जे अदहा जे बाँकी रहल ओ अछिए। रतिकान्तो आ मुनेसरो जेहने कचहरिया–माने केश-फौदारी लड़ैबला–तेहने समंगरो, तँए बेइमानी केलाक बाबजूदो लोक हुनका सोझमे डरे किछु ने बाजि पबै छल, आ जे कहै छेलखिन से लोक दइते छेलैन।

ओना कर्ज लेनिहार केते गोरे केतेक बेर कर्ज चुकौला पछाइत सप्पतो खाइ छला जे 'एहेन महाजनक कर्ज आब कहियो नइ लेब।' मुदा लेब वा नइ लेब मात्र वैचारिकेटा तँ छी नहि, परिवारक भरण-पोषण करैले सभ कथुक खगता पड़िते छइ। भूख लागत अन्ने खाएब। जँ अपना

नइ रहत तँ अनकासँ माँगहि पड़त। आनो ओहन केतए-सँ दऽ सकैए जेकरा अपने नइ छइ। तखन तँ जे कारोबारी छैथ, हुनके ऐठाम ने जाए पड़त।

गामसँ लऽ कऽ परोपट्टा धरिमे रतिकान्त आ मुनेसरसँ विपरीत परिचय मनोहरक रहलैन। तीन पुश्तसँ कबीर-पंथसँ जुड़ल वैष्णव परिवार रहलैन। साले-साल साए मुरतीक भनडारा सेहो करिते छला आ हराएल-भोथियाएल माने अपरिचितो अभ्यागतक सेवा सेहो करै छला। माने ई जे दूर-दराजक जे वेपारियो आ गाम-गमाइत जाइबला राहियो-बटोहीकेँ जँ अबेर भऽ जाइ छेलैन आ मनोहरक दरबज्जापर आबि जाइ छला तँ रहैयोले आ खाइयो-पीबैले दइते छेलखिन।

ओना, गामो आ आनो गामक भीखमंगाकेँ भीखो दइते छेलखिन। महाजनियोँमे मनोहर एते धर्म टेकने छला जे सूदि-सवाइमे सेहो कनी-मनी छोड़-छाड़ करिते छला आ जइ साल रौदी-दाही भेल तइ सालक सूदिमे अदहा-अदही माफ कऽ दइ छेलखिन।

मनोहर तेहेन पढ़ल-लिखल–माने स्कूल-कौलेजक सर्टिफिकेटधारी नहि छला मुदा ‘रामायण’, ‘महाभारत’ आ कबीर दासक ‘अनुराग सागर’, ‘मन्सूर’ आ ‘बीजक’ रखनौं छला आ नित्य साँझू पहर पढ़ितो छला। नाम-गाम लिखब, जोड़-घटाउ-गुणा-भागक संग-संग जमीनक धूर-कट्ठाक हिसाब सेहो अबिते छेलैन।

पचीस बीघा जमीनक मालिक रहितो मनोहरक परिवार बेसी नमहर नइ छेलैन। ओना परिवार तँ साले-साल घटिते-बढ़िते रहैए, मुदा तैयो छह गोरेसँ कम आ दस गोरेसँ बेसीक परिवार मनोहरक कहियो ने बनलैन।

सुभ्यस्त किसान परिवार रहने मनोहर मालक सेवा करैले नोकर आ खेती करैले हरबाहक संग जन-बोनिहार सेहो रखने छला।

मनोहरकेँ चारि सन्तान। तीन बेटा आ एक बेटी, जइमे ललित चारू भाए-बहिनमे सभसँ छोट माने दू बेटाक पछाइत तेसर बेटी आ चारिम ललित। जेठ दुनू बेटा मिडिल स्कूलसँ आगू नहि पढ़ि सकल। तहिना बेटियो नाम-गामसँ लऽ कऽ चिट्ठी-पत्री धरि पढ़ली।

तीन बर्खक जखन ललित भेल, तखन एकटा कबीरपंथी-महात्मा मनोहर ऐठाम भनडारा पूरए एला। परिवारक परिचय लैत मनोहरकेँ ओ महात्मा कहलकैन-

"जइ हिसाबे लछमीक बास अछि तइ हिसाबे सरोसत्तीक नहि, तँए..!"

महात्माजीक विचारसँ मनोहरक हृदय विदीर्ण भऽ गेलैन। जेना सत्यसँ भेँट भऽ गेल होनि तहिना मनोहरक मन पसीज गेलैन, पसीजते बजला-

"गोसाँइ साहैब! अपनेक विचार तँ शिरोधार्य अछि, मुदा हएत केना?"

ओना, एकोटा शिक्षण संस्था गाममे नहि रहने पढ़ै-लिखैक वातावरण सेहो नहियेँ जकाँ छेलैन। दूर जा पढ़ैले तँ खर्चो ओते हेबे करै छै, राधोपुर पंचायतमे मिडिल स्कूलसँ आगू नहियेँ अछि। साढ़े तीन कोस हटल–माने दस किलोमीटरसँ बेसीए हटि कऽ–हाइ स्कूल आ पचीस किलोमीटर हटि कऽ कौलेज, राघोपुर पंचायतसँ तहियो छल आ अखनो अछि। इंजीनियरिंग कि एग्रीकल्चर आकि मेडिकल कौलेज तँ अखनो सपनेमे अछि। ओना, दस किलोमीटर हाइ स्कूल आ पचीस किलोमीटर कौलेज, बहुत दूर नइ भेल जँ रोड-सड़क आ गाड़ी-सवारीक सुविधा रहए। मुदा से तँ बरसात मासमे एकटा नदी टपैमे भरि दिन समय लगि जाइए जेकर दूरी कोसो भरि नइ रहैए।

मनोहरक विचार सुनि महात्माजीक मन मोमबत हुअ लगलैन।

जहिना इजोरिया परवक तृतीया चानक लाली आ अन्हरिया परवक तृतीया चानक लालीक ललपनमे जमीन-अकासक अन्तर होइए तहिना महात्माजीक मनमे उठलैन। उठिते विचारए लगला जे अखन जे परिस्थिति मनोहरक परिवारमे पढ़ै-लिखैक अछि, जँ ऐ गतिये रहत तँ तेसर पीढ़ीमे हाइ स्कूल पहुँचत, आ जखन हाइये स्कूल पहुँचैमे तीन पुश्त लागत तँ परिवारमे पुस्तक केना औत आ पुस्तकालय केना बनत। तेहेन बनैमे पाँचो पुश्त लगि सकैए। तँए अखन परिवारजनक संग मनोहरो आ तीन बर्खक ललितोक मनमे शिक्षाक ओहन बीजवपन करी जे बिना एको क्षण गमौने परिवार सरस्वतीक धारमे प्रवेश करइ। मुदा से हएत केना?

महात्माजी कबीरपंथी छैथ जइसँ जिनगी आ जिनगीकेँ प्रभावित करैबला विचारो आ कर्मोकेँ खाली वैचारिके रूपमे नहि, बेवहारिक रूपमे सेहो अंगीकार केनहि छैथ तँए महात्माजीकेँ अपन अनुकूल विचार दइमे केतौ बाधा नहि बुझि पड़ै छैन, मुदा जहिना नव भूमिमे–जैठाम कोनो नव वस्तुक खेती नइ भेल अछि–कोनो नव वस्तुक खेती करैमे सभ किछुमे नवपनक खगता होइ छै तहिना ओइ वस्तुक खेती-ले ओइठामक वातावरणोक पहचान करब तँ जरूरीए अछि। ओना वातावरण प्रकृति स्वरूप अछि मुदा कृत्रिम ढंगसँ सेहो बनौले जा सकैए...। महात्माजी तजबीज करए लगला। तजबीज करिते मनमे उठलैन- जइ काज-ले जे विचार मनमे उठि रहल अछि ओकरा जाबे दृढ़तासँ नइ पकड़ब ताबे ओ बाल-बोधक दीक्षा स्वरूप हएत। जे सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, अखनो होइए आ आगूओ ताधैर होइत रहत जाधैर कर्मक संगी विचार आ विचारक संगी कर्म नहि बनत...।

मुदा लगले महात्माजीक मनमे ईहो विचार जागि जानि जे जैठामक विचार करए चाहै छी तैठामक वैचारिक रूप की अछि..?

वैचारिक रूपपर महात्माजीक नजैर पहुँचते रूपे कुरूप बुझि पड़ैन। कुरूप दिस जखन नजैर दैथ तँ आँखिक सोझमे देखैथ जे अखनो गाम-

घरमे हाथक रेख देखि रेखा गणितक हिसाबसँ रेखांकन करैबला रेखाकार सभ छथिए..! मुदा हुनकर रेखा गणित गड़बड़ केतए भऽ जाइ छैन आ किए भऽ जाइ छैन तैपर नजैर अँटकौलैन। बाल-बोधकेँ शिक्षाविद् वा कर्मशील बनै-बनबैक रस्तामे हाथो तँ महतपूर्ण अंग छीहे, तँए जँ कर्ताक मनमे ओ विचार रोपल जाए तँ ओ अधला केना भेल। मुदा ईहो तँ होइते अछि जे गाम-समाजक नकारात्मक दिशाक विचार सेहो कहिते अछि जे 'फल्लाँ अभागल अछि', 'फल्लाँक हस्तरेखा किछु कहिते ने छै' वा कहबो करै छै तँ ई कहै छै जे 'एकरा भागमे ने विद्या छै आ ने धन..!'

सामाजिक परिस्थितिकेँ अँकैत महात्माजी अपन आँगुरसँ ललितकेँ देखबैत मनोहरकेँ वचन देलखिन-

"ई बच्चा ज्ञानवान हएत..!"

ओना महात्माजीक विचार ज्ञानक विराट रूपमे रहैन, मुदा से मनोहर नइ बुझि सकला। मनोहर खाली एतबे बुझि सकला जे बच्चाकेँ विद्या लिखैए। ओना, ज्ञानवानक विराट रूप होइ छै, खाली किताबे पढ़ि कऽ कोनो बात बुझबे-टा नहि अछि। दुनियाँमे जे किछु अछि ओ ज्ञान स्वरूप सिर्फ देखबेटा मे नहि, कर्म स्वरूप जिनगीक संग चलबोमे अछि।

मनोहर मनमे रोपि लेलैन जे जाबे तक ललित अपने नइ जवाब देत जे आब आगू नइ पढ़ब ताबे तक ओकरा पढ़ैक खर्चमे कहियो कोताही नइ करबै। जखन भागमे विद्या ब्रह्म रेखामे लिखल छै। तखन नइ किए हेतइ। जरूर हेतइ। ओना ललित तीनियेँ बर्खक छल मुदा महात्माजीक विचार मनोहरक मनमे रोपा गेलइ।

बेलबारी सैये परिवारक गाम अछि, मुदा बास अनेको जातिक तँ छइहे। अनेको जातिक बास रहने अनेको रंगक बेवसायसँ जुड़ल गाम अछिए। पैंतीस परिवार जे किसानक अछि ओइमे गामक अदहासँ बेसी जातिक लोक किसान छैथ। जइसँ गाममे बारहो विरहिणीक खेती सेहो

होइते अछि। खेतियोमे जातिक गुणसँ खेती नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खेतक उपजा एक रहितो किसान एक-दोसरसँ अपन दूरी बनौने आबियो रहला अछि आ अखनो अछिए।

गाममे खाली तीनियेँटा किसान ओहन छैथ जे अपना हाथे किछु ने करै छैथ। बाँकी बत्तीस परिवार ओहन छैथ जे दस बीघा खेतसँ निच्चाँबला छैथ। ओना तहूमे किछु किसान नोकरी सेहो करै छैथ जइसँ अपने नोकरीक कमाइ करै छैथ आ खेती जन-बोनिहारक हाथे होइ छैन।

बेवसायक रूपमे जे परिवार छैथ ओहो समाजसँ जुड़ल बेवसाय सेहो करै छैथ आ आनो-आनो गाम टहैल-टहैल करिते छैथ। ओना परोपट्टाक आन गामसँ पछुआएल गाम बेलबारी अछिए। जे आनो गामक लोक बुझै छैथ आ बेलबारीबला सेहो मानिते अछि। मानबो किए ने करत, भरि गाममे मात्र सोलह-गो परिवार ओहन अछि जइमे पढ़ै-लिखैक चलैन पकड़ने छै, बाँकी चौरासी परिवारक बच्चा अखन तक स्कूलक मुँह-आँखि नहि देखलक अछि।

तीन मास पहिनहि ललित पाँचम बर्खमे प्रवेश केलक। ललितकेँ संग केने मनोहर राघोपुर मिडिल स्कूल पहुँच नाओं लिखा देलखिन। एक तँ ललितक मनमे सेहो विद्याधनक जोग नचिते छेलै, तैसंग मतो-पिता आ भाइयो-बहिनक जोग पड़िये रहल छल। माता-पिताक मनमे ललितक विद्याक जोग रहने अपन बेवहारिक जोगसँ सेहो दुनू अपन विचारकेँ मजगूतीसँ जोड़लैन। ओना, जेठ दुनू भाँइक बेवहार सेहो अनुकूल बनैत गेलैन। अनुकूल बनैक कारण दुनू भाँइक मनमे ई जनमिये गेल छलैन जे हमरा सबहक रेखमे विद्या नहि छल तँए नइ पढ़ि सकलौं। जँ रहैत तँ बिनु साधनोक तँ केते गोरे पढ़ि-लिखि कऽ विद्वानो बनला आ पैघ-पैघ अफसरो तँ बनबे केलाह। तँए दुनू भाइक मनमे ई कहियो नै उठलैन जे पढ़ैबलाकेँ अभिभावको आ पढ़ै-लिखैक खरचो पढ़ैसँ बाधित करैए। ओना दुनू भाँइक विचारमे एकभग्गूपनक मात्रा जरूर छेलैन मुदा

उदाहरण स्वरूप गामो आ परोपट्टोमे देखबे करैथ जइसँ विचारमे मजगूती बढ़िते गेलैन।

लोअर प्राइमरी स्कूल हुअ कि हाइ स्कूल आकि कौलेज, सभ पढ़निहारकेँ एकेरंग अनुकूल वातावरण भेटैए, ई आँखि मूनि नहियेँ कहल जा सकैए। अनुकूलो वातावरण भेटैए आ प्रतिकूलो वातावरण भेटते अछि। अनुकूल आ प्रतिकूल सेहो एकेरंग नहियेँ अछि। अनुकूलोमे अनुकूल अछि आ प्रतिकूलोमे प्रतिकूल अछि। अनुकूलमे अनुकूल भेल- जे परिवारमे अगुआएल-पछुआएल पढ़निहारक संग पढ़ौनिहारो रहला आ प्रतिकूलमे प्रतिकूल भेल- जैठाम एक नहि अनेक बाधा एकसंग उपस्थित रहल।

ओना समाजो गनगुआरि साँप जकाँ दू-मुहाँ अछिए। माता-पिताक सोझमे वा तेहालाक बीचमे सभकेँ सभ पढ़ै-लिखैक विचार दइते अछि, मुदा तरे-तर पढ़ाइ रोकैक बाधा उपस्थित नइ करैत अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। करिते अछि। शासनो-सूत्र अदौसँ ओहने रहल।

ओना आइ धरिक जे इतिहास रहल ओ सोल्होअना तेहने रहल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, नीको रहल आ नीकोमे नीक रहल। नीकमे नीक ई भेल जे समाजमे एहनो-एहनो कूलपूज्य बेकती भेला अछि जे अपन परिवारक अतिरिक्त आनो-आनकेँ अपन देख-रेखमे–माने अपना दिससँ खेबा-खर्चा दऽ कऽ–पढ़ैक प्रेरणो दैत रहथिन आ पढ़निहारकेँ अभावक पूर्तियो करैत रहथिन, करैबला अखनो कइये रहला अछि। मुदा आब ओ बिरल अछि।

मिडिल स्कूलमे नाओं लिखौला पछाइत जहिना ललित पढ़बकेँ अपन प्रमुख काज बुझलक तहिना मनोहरो अपन दायित्वकेँ प्रमुख काज बुझलैन। ओना मनोहर बहुत पढ़ल-लिखल लोक नहि, मुदा जहिना 'एकाएक' सँ 'बीसकान' तक खाँत अबैत रहैन जइसँ जोड़-घटाउसँ गुणा-

भाग तक कऽ लैथ, तहिना ‘अ’-‘आ’ सँ ‘कब्बीरकाने’ तक सेहो अबिते रहैन जइसँ रामायण, महाभारत, कबीर साहित्य–अनुराग सागर, बीजक, मन्सूर–सेहो धुर-झाड़ पढ़ि लैथ, मुदा धुर-झाड़ बुझि नहि पबैथ।

खाएर जे रहैथ मुदा ललित स्कूल आएब-जाएब शुरू केलक आ मनोहर सेहो ‘अ’-‘आ’ सिखाएब शुरू केलैन। छबे मासक पछाइत ललित अपन संगतुरियामे अगुआ गेल आ शिक्षकोक नजैरमे बसि गेल।

पहिले वर्गसँ ललित प्रथम स्थान प्राप्त करए लगल। जे सातमा तक करैत रहल। बेटाक लगन आ मेहनत देखि मनोहर नीक हाइ-स्कूलमे दाखिला दिएबाक विचार मनमे रोपि लेलैन। ओना दस किलोमीटरसँ बीस किलोमीटरक बीच तीनटा हाइ स्कूल अछि, मुदा तइमे एक्केटा स्कूलक पढ़ाइ नीक छइ। जइमे नियमित शिक्षको छैथ आ नियमित विषयोक पढ़ाइ होइए। मुदा बाँकी दूटामे एकटा राजनीतिक अड्डा बनल अछि आ दोसर जाइतिक अड्डा बनल अछि। तीनूक दशा देखि मनोहर पहिल हाइ स्कूलमे ललितक नाओं लिखा होस्टलक भार उठा लेलैन। बेटाकेँ होस्टलमे सुपूर्द करैत होस्टल सुपरीन्टेडेन्टकेँ कहलखिन-

“मास्सैब, अखन धरि ललितकेँ अपना देख-रेखमे रखलौं आब अहाँक भेल।”

बेवहारिक जिनगी जीनिहार सुपरीन्टेन्डेन्ट, जवाब देलखिन-

“पचाससँ ऊपर विद्यार्थी होस्टलमे अछि। हम ते एके निगाहे ने सभकेँ देखब।”

चारि बर्खक पछाइत ललित फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलक। गाममे–माने बेलबारीमे–ललित पहिल विद्यार्थी छल जे प्रथम श्रेणीमे पास केलक।

एक तँ नीक रिजल्ट, दोसर पढ़ैक लग्न ललितकेँ चढ़िये गेल छेलै जइसँ आगू पढ़ैक लिलसा आरो बढ़ए लगलै।

आगू पढ़ैक लिलसा जहिना ललितक मनमे हुमैड़ कऽ जोर मारै छल तहिना बेटाक सफल परीक्षा देखि मनोहरक मनमे सेहो हुमरिये रहल छेलैन। कहलो गेल छै जे 'महींस-पर्डुक मिलान ठेहुनो पानि दुहान।' दुनू बापुतक विचारमे केतौ राहु-केतुक दरस नहियेँ छल। सी.एम. कौलेजमे ललित, विज्ञान विषयसँ आइ.एस-सी.मे नाओं लिखौलक।

आइ.एस-सी. आ बी.एस-सी. मिला कऽ चारि बर्खक कोर्स रहितो ललितकेँ बी.एस-सी. करैमे छह बर्ख समय लगलै। छह बर्ख लगैक कारण ललितकेँ फेल करब नहि छल, किएक तँ फेल केने साल बेसिया जाइए कारण छल विश्वविद्यालयक बेवस्था। दू साल बिलमसँ परीक्षा चलि रहल छेलै, तँए ललितकेँ बी.एस-सी. करैमे छह बर्ख लागल। ओना किलास समाप्त भेला पछाइत ललित दरभंगासँ गाम आबि गामेमे दू साल धरि परीक्षाक तैयारी केलक। गाममे रहने ललितकेँ पढ़ै दिससँ कनी-मनी मन सेहो उचटए लगल छेलइ। उचटैक कारण रहै जे जे काज दू बर्खमे पूरा कएल जा सकै छल तइमे चारि बर्ख लागब। तैसंग ईहो जे केते नोकरीक उम्र निर्धारित जे बैसले-बैसल बहि जाइए।

बी.एस-सी. केलाक पछाइत ललित पिताकेँ कहलक- "बाबू, आगू नइ पढ़ब।"

ललितक विचारकेँ मनोहर मानि ऐ दुआरे लेलैन जे अपन संकल्प केने छला जे जाबे तक ललित पढ़ए चाहत ताबे तक खर्चक कोताही नइ हुअ देब। से तँ भइये रहल अछि।

छह मास बैसला पछाइत माने बी.एस-सी. केलाक पछाइत ललितकेँ हाइ स्कूलमे विज्ञानक शिक्षकक पदपर नोकरी भेल। ओना स्कूलो हाले-सालमे खुजल छेलै मुदा पँचकोसीमे दोसर हाइ स्कूल नइ रहने चलैक संभावना रहबे करइ। परोपट्टामे हाइ स्कूल खुजने गौंआँ-घरूआसँ लऽ कऽ विद्यार्थियो आ शिक्षकोक बीच इच्छा छेलै जे कहुना

स्कूल चलइ। चलैक कारणो भेल, कारण भेल जे विद्यार्थी सभकेँ माहवारी पढ़ाइक फीस लगै छल। ओना मोटा-मोटी तीन रंगक बेवस्था हाइ स्कूलक छल। किछु हाइ स्कूल छल जेकर सोल्होअना देख-रेख सरकारी छल, ओना विद्यार्थीकेँ फीस सेहो लगिते छेलइ। दोसर तरहक किछु स्कूल एहेन छल जेकर मान्यता तँ सरकारी छेलै मुदा खर्चक भार सरकार नइ उठौने छल। सहायताक रूपमे सालमे एकबेर किछु दऽ दइ छेलइ। आ तेसर तरहक ओ हाइ स्कूल छल जेकर मान्यता तँ सरकारी छेलै मुदा सहायता किछु ने भेटै छेलइ। ओना तहूमे दू रंगक स्कूल छल। एक रंगक छल जे खास बेकती अपना नामे स्कूल खोलने छला आ दोसर छल जे जनसहयोगसँ माने सामाजिक स्तरपर खुजल छल।

जइ स्कूलमे ललित शिक्षक बनला ओ जनसहयोगसँ खुजल छल। ओना दुनू तरहक स्कूलक शिक्षकक बीच वैचारिक दूरी सेहो बनिते अछि। पहिल दूरी अछि जे किछु खास बेकतीक काज, आ दोसर अछि अपन काज बुझि जनसमूहक सेवा करब। ई ओहन जगह छी जैठाम इमान-बेइमानक दूरी लग पहुँच जाइए।

हाइ स्कूलक नोकरी केना ललितकेँ दस बर्ख भेलैन तखन पिता मरि गेलखिन। अखन तक परिवार मनोहरेक देख-रेखमे चलै छल, जइसँ तीनू भाँइ ललितकेँ अपन परिवारक कोनो चिन्ता-फिकिर नइ छेलैन। मुदा पिताक मुइलाक पछाइत ललित अपन दरमाहाकेँ अपन कमाइ बुझि भैयारीक बीच–माने दुनू जेठ भाइक बीच–नइ राखि फुटा कऽ राखए लगला।

मुदा जेठ दुनू भाँइ जे खेती-पथारीसँ जुड़ल छला ओ अपन कमाइ फुटा कऽ नइ बुझै छला। ओना माए जीवित रहथिन, मुदा ओ परिवारक आमद-खर्च बुझबे ने करै छेली। तहूमे जखन पति मरि गेलैन आ बेटा-पुतोहुक बीच जिनगी एलैन, तखन मनमे किछु-किछु कचोट जरूर हुअ लगलैन। मुदा माइयो तँ माइये थिकी किने जे देहपर बच्चाकेँ गन्दा केलाक

पछातियो पानिसँ धोइ अपनाकेँ पूर्वबत बुझैत रहली। संजोग एहेन भेल जे छह मास बीतैत-बीतैत माइयो मरि गेली।

माइक श्राद्धक क्रिया-कर्म समाप्त होइते तीनू भाँइक बीच मनभेद मतभेदक रूपमे बदलए लगल जइसँ मास समाप्त होइत-होइत ललितक तीनू भैयारीक परिवार अलग-अलग भऽ गेल।

अपनाकेँ ललित सद्विचारी शिक्षकक रूपमे स्थापित केने छला। सद्विचारी ई जे आन शिक्षक जकाँ पाइ लऽ कऽ ने ट्युशन पढ़बै छला आ ने कहियो पाइ लऽ कऽ केकरो एको नम्बर परीक्षाक कॉपीमे बढ़ौलैन। ओना विद्यालयमे नियमित शिक्षकक रूपमे सेहो बुझले जाइत रहला। समयपर विद्यालय एनाइ-गेनाइक संग किलासो नियमित करिते रहला। अपन डेरा रखने छला, अपने हाथे भानसो-भात करै छला।

गामसँ बाहरक विद्यालयमे रहने ललित अपन हिस्साक सभ जमीन बटाइ लगा लेलैन। ओना दुनू जेठ भाय खेतिहरे छेलखिन मुदा अपन भैयारीकेँ खेत नहि दऽ तेहालाक हाथे ललित बटाइ लगा लेलैन।

तेहालाक हाथे बटाइ लगौने दुनू भाँइक मनमे भीतरिया चोट लगलैन। भीतरिया चोटक कारण छेलैन जे जइ खेतकेँ महींसिक गोबरसँ गोबरा गोरसार बनौने छेलौं जइसँ आन किसानसँ सबैया-ड्योढ़ा उपज बेसी होइए ओ खेत दोसराकेँ किए बटाइ देने छैथ! जँ अपने दुनू भाँइ ओकरा जोतितौं तँ खेतक उपजो घरेमे रहैत आ आन कियो ईहो ने बुझि पबैत जे तीनू भाँइक बीच कोनो तरहक मन-मतान्तर अछि। मुदा सभ विचार ओतए अन्त भइये जाइए किने जेतए लोक अपन विचारकेँ सम्पैत नहि मानि हिस्साकेँ सम्पैत बुझि विचारक सम्पैत लुटबैए।

दुनू भाँइक मनमे रंग-बिरंगक वैचारिक तरंग सेहो तरंगित होइते रहैन। विचार उठिते देह सिहैर जानि जे की अही आशासँ छोट भाएकेँ बेटा जकाँ बुझि सेवो केलौं आ पढ़ेबो-लिखेबो केलौं..! भिनौज भेने

अपन-अपन कमाइ जँ अपन परिवारक भरण-पोषणमे लगबै छी तँ ओ परिवारेक सेवा भेल मुदा अपन पैतृक सम्पैत–जमीन–केँ जे अपन इज्जत-आबरू बुझि सेवो करैत आबि रहल छेलौं आ नीक फलो पबै छेलौं ओ तँ बाल-बच्चाक जिनगीमे कटान भेबे कएल। हम दुनू भाँइ खेती करै छी, खेतीक जे दशा-दिशा अछि ओ ओते नीक नहियेँ अछि जेते हेबा चाही। मुदा ओइमे, जहिना किछु गलती लोहाक आ किछु गलती लोहारक भेने नीक औजार नहि बनि पबैए तहिना किछु गलती अपनो आ किछु गलती शासनोक तँ ऐछे जइसँ किसानी जिनगी मेटाएल जा रहल अछि। जइसँ किसानो परिवारक नव पीढ़ी आँखि मूनि अपन श्रम बेचैपर मजबूर भऽ गेल अछि।

मनोहरकेँ अपना जीविते महाजनी समाप्त भऽ गेल छेलैन। तेकर कारण भेल जे एक दिस पढ़ै-लिखैक खर्च बढ़ल तँ दोसर दिस अनिसचित किसानक जिनगी छल जइसँ आमदनीक निसचितता नहि, आ तेसर भेलैन सूदि-सवाइकेँ भारी हएब, माने बेसी सूदि-सवाइ हएब। जइमे बैंकक आगमनसँ धक्का लगबे कएल। ओना गाम-गामक लोककेँ बजार दिस काज करैले बढ़ने, आमदनी सेहो बढ़बे कएल जइसँ गामक महाजनीमे धक्का सेहो लगबे कएल।

ललितकेँ चारि सन्तान, दू बेटा दू बेटी। ओना गामक बगलक गाममे–माने राधोपुरमे, जइ पंचायतमे बेलबारी सेहो अछि–हाइ स्कूल खुजल। जइसँ पढ़ै-लिखैक सुविधा बढ़ल। शुरूहेसँ ललित अठबारे छुट्टीसँ लऽ कऽ पाबैन-तिहार वा कोनो आनो अवकाश गामेमे बितबैत आबि रहल छला। लगमे हाइ-स्कूल खुजने माने हाइ स्कूल तकक शिक्षाक बेवस्था भेने शुरूहेसँ ललित बेटा-बेटीपर धियान रखि पढ़बै-लिखबै दिस मुश्तैद रहबे करैथ। दुनू बेटीकेँ मैट्रिक केलाक पछाइत बिआह-दान कए कऽ नोकरीक तीसम बर्खमे निचेन भऽ गेला।

ललितक दुनू बेटा–मोहन आ सोहन–जेहने पढ़ैमे जहिनगर तेहने

परिवारक आर्थिक आमदनी रहने कहियो कोनो बाधा नइ बुझलक। ओना दुनू भाँइक बीच चारि बर्खक अन्तराल रहने जखन मोहन हाइ स्कूल छोड़लक तखन सोहन हाइ स्कूलमे प्रवेश केलक। चारि बर्खक दूरी रहने दुनू भाँइक पढ़ाइक खर्चमे सेहो अन्तर छेलैहे। आइ.एस-सी केलाक पछाइत मोहन मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखौलक।

चारिम बर्खक अन्तिम छोरपर जखन मोहन पहुँचल तखन सोहन सेहो नाओं लिखौलक।

नोकरीक शुरूमे ललितकेँ कम्‌मे दरमाहा रहैन मुदा सरकारीकरण भेने बीस सालक पछाइत माने नोकरीक बीस साल, नीक दरमाहा सेहो भेटए लगलैन, जइसँ बेटाकेँ पढ़बैमे कहियो कोनो असोकर्ज नइ भेलैन।

डॉक्टर बनला पछाइत मोहन विदेश चलि गेल। एक तँ ओहुना लोक विदेश जा पढ़ब आ नोकरी करबकेँ प्रतिष्ठाक रूपमे बुझिये रहल छैथ, जे ललितो अपनाकेँ बुझलैन। मोहनकेँ विदेश जेबाकाल ललितक मुहसँ एकोबेर नइ निकललैन जे बौआ, जे माए-बाप तोरा अपन जिनगीक भविस देखि नीक फलक गाछ लगबैक ओहन परियास केलक जइमे खून-पसेना एकबट्ट बहैए। दुनियाँमे बच्चासँ चेतन धरि के एहेन अछि जे जिनगीक रूपकेँ सोझामे नइ देखैए। सभ देखैए जे बच्चाक जन्मसँ लऽ कऽ मृत्यु धरि जिनगीक धार केना बहैए...।

मुदा से ललितक मनमे जगबे ने केलैन। भरिसक तेकर कारण विज्ञान शिक्षकक जिनगी हएब छेलैन। हँसी-खुशीसँ ललित अपनो दुनू परानी आ लग-पासक जे कुटुम-परिवार रहैन सभ मीलि मोहनकेँ विदा करैले दिल्ली हवाइ अड्डापर पहुँचल छला।

जहिना गाम-घरक लोक जे मनचोभिया नाच सभ दिन देखैत आएल रहैए आ एकाएक जँ मनभोगिया नाच देखैए तँ ओकर मन वौला जाइत अछि, तहिना मोहनोकेँ भेल। तहूमे भौंटरो लिस्टसँ आ सर्टिफिकेटोसँ अपनाकेँ वयस्क बुझि अपन भविसक निर्माण करैक

अधिकारी सेहो बनियेँ गेल छल। अविवाहितो छेलाहे। विदेश गेला पछाइत सालक आखिरी मासमे मोहन गाम आएल।

चरिमसिया मौसमसँ एकमसिया मौसम पाबि मोहनक देहक रंग सेहो बदैल गेल। जे पहिने कनी स्यामी छल ओ बदैल कऽ ओते बदामी भइये गेल छल जेते पहिने स्यामी छल।

ललितकेँ डेढ़ साल नोकरी बँचले रहैन। तैबीच गाम एला पछाइत दोसर खेपमे जे मोहन विदेश गेल ओ दोहरा कऽ गाम नइ आएल। खोप-तोप ननहि चिड़ै जकाँ मोहन उड़ि गेल। जेतए नोकरी करै छल तेतै बिआहो कऽ लेलक।

भाय जखन बिआह केलौं तँ रहैले–माने जिनगी जीबैले–घरो ने चाही। आ जखन घर भऽ जाएत तँ ओही निच्चाँमे घराड़ियो ने रहिते छइ। आ जखन घराड़ीए बदैल जाएत तखन लोक अपन घर-घराड़ी छोड़ि लोक अनेरे वौआएत सेहो नीक थोड़े हएत। दोहरा कऽ मोहन गाम नइ आएल।

डॉक्टरी पास केलाक पछाइत सोहनकेँ सेहो दिल्लीक अस्पतालमे नोकरी भेल। नीक अस्पताल, रहैयो-सहैक नीक बेवस्था।

पैंतीस बर्ख नोकरी केलाक पछाइत ललित दरबज्जापर बैस अपन जिनगी दिस निहारि रहला अछि। तीन मास सेवा निवृत्तिक भऽ गेलैन। ओना ललितकेँ गाममे कियो 'ललित काका', तँ कियो 'ललित बाबा', तँ कियो 'ललित भाय', तँ कियो-कियो 'मास्सैब' सेहो कहिते छैन। मुदा आइ ललित अपनाकेँ परिवारे-समाज नहि, जिनगीमे सेहो असगरे पाबि रहल छैथ। मनमे कखनो-कखनो ईहो उठि रहल छैन जे लंका जकाँ कियो ने वंशमे बँचल जे एकनोर कनबो करत।

दमा रोगसँ पीड़ित पत्नी सोहन लग रहि अपन इलाज दिल्लीमे करबा रहली अछि। ओना दुनू परानी सोहनकेँ काजक बोझ एते अछि जे समैपर दवाइयो आ खेनाइयो माएकेँ पुराएब कठिन भइये रहल छैन। भरि दिन

असगरे माए डेराक एकटा कोठरीमे ओछाइन धेने रहै छैथ।

अपनासँ हजारो किलोमीटर हटल ललित अपन पत्नी, बेटा आ पुतोहुक स्वरूप देखि रहला अछि।

अपन तीनू भाँइक भैयारी परिवारक बीच एते दूरी बनि गेल छैन जे एक-दोसरक मुहोँ देखब अशुभ बुझि रहल छैथ। ओना दूरी बनैक कारण ईहो रहल छैन जे अपनो ललित भतीजा-भतीजीकेँ अपन नहि बुझि आन बुझलैन। ने एको दिन पढ़ौलैन आ ने एको पाइ पढ़ै-लिखैमे दऽ भैयारीपन निमाहलैन।

आइ बेर-बेर ललितक मनमे उठि रहल छैन जे की केलौं, एक पढ़ल-लिखल शिक्षक बनि की केलौं? मुदा लगले दोसर विचार मनकेँ धोंपैत कहै छैन जे की अपनो जिनगीक आँट-पेट अपने नइ बुझि पेलौं? आइ जइ अवस्थामे पहुँच गेल छी, तइमे सहयोगीक खगता अछि की नहि, मुदा ओ औत केतए-सँ? अखन तक नोकरीक काजमे अपनाकेँ बहलौने छेलौं, दिन-राति हल्लुक बनि ससैर रहल छल। मुदा आब तँ कटने नइ कटि रहल अछि। हाथसँ काज छीना गेल। खेत-पथार जँ ऐछो तँ जिनगीमे ने कहियो खेती केलौं आ ने ओकर महिरम बुझलिऐ। ने करैक लूरि अछि आ ने बुधि। आब जँ करैक कोशिशो करब तँ लोको हँसत आ अपनो जिनगीकेँ हँसेबे करब। जखने जिनगी हँसिया बनत तखने ने लोक ईहो कहबे करत जे पढ़ल सुगाक बौकपन देखियौ।

❑

शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017

हरवाहि

बैशाख मासक अन्हरिया पख। फागुनेसँ जे बिआह-दुरागमन आ उपनैन-मुड़नक लगन पकड़लक से दिनो-दिन बढ़िते गेल। ओना चैतमे बिआह-दुरागमन रूकल मुदा उपनैन-मुड़न चलिते रहल। चैतक सकराँइत बितते उपनैन-मुड़नक संग बिआहो-दुरागमन जोड़ पकड़लक। जोड़ो किएक ने पकड़ैत, तेते ने लोककैं केराक पौंच जकाँ सखा-सन्तान होइए जे बेटा-बेटीक बाढ़िये आबि गेल अछि। जखने परिवारमे बेटा-बेटीक बाढ़ि औत तँ बिआहो-दुरागमनक बाढ़ि एबे करत।

आन सालक बैशाखसँ ऐ बेरक बैशाखक रोहानी सेहो सोहंतगर बनि गेल। किएक तँ जइ हिसाबे ऐ बेर शीतलहरी नइ भेल आ अगतेसँ सूर्य अपन धाही देखबए लगल तइ हिसाबे बैशाखक धू-धू धधकैत मौसम रहैत मुदा से नइ भऽ वसन्त रीतुक जे उतार मासक मदमस्त मधुर-सत्ता हेबा चाही से भऽ गेल। तेकर कारणो भेल। कारण भेल जे शीत-पालामे आम-जामुनक फूलो आ मोजरो कठुआ-कठुआ झड़ि जाइ छल से नइ झड़ल। तँए अगते फागुनसँ गाछ-बिरीछक डारि-पल्लो फूल-मोजरसँ जमीन दिस लबि-लबि निच्चाँ-मुहेँ भऽ गेल।

सोहंतगर समय पौने गाछ-बिरीछमे दनो-फड़ नीक पकड़लक। जइसँ बैशाख चढ़ैत-चढ़ैत माने जुड़शीतल पाबैन होइत-होइत जहिना आमक गाछ तहिना जामुनक गाछ फड़सँ लदि लटैक गेल। ओना, सुभ्यस्त समय बनैक दोसरो कारण भेल। जहिना फगुआसँ तीन दिन

पहिने तेहेन बरखा भेल जे दोहरा कऽ माघक मेघपनकेँ घुमा अनलक, जइसँ एक दिस सूर्जक प्रखर प्रभा–माने शीत-पालासँ स्वच्छ वायुमण्डल–तँ दोसर दिस माघक मेघपन पौने मौसममे मस्ती आबिये गेल। से खाली फागुनेक बरखा-टासँ नहि भेल। चैतक चढ़ैत प्रखरताक बीच रामनवमीक पराते, तेहेन झमझमौआ बरखा भेल जे बिगड़ैत मौसमक चेहरामे पुन: जुआनी आनि रोहानी भरि देलक।

बैशाख मासक अन्हरियाक सप्तमी तिथि आ जुड़शीतल पाबैनक तेसर दिनक नौत रूपलाल भायकेँ मात्रिकसँ एलैन। ममियौत भाय–अधिकलाल–क पोतीक बिआह छिऐन।

ओना रूपलालक गामोमे–हित अपेछितक ऐठाम–तीन गोरेक बेटीक बिआह छिऐ, मुदा रूपलाल भाय मात्रिक जेबे करता। गाममे दोसरो-तेसरो समांग सम्हारि लेतैन।

रूपलाल भाइक मात्रिक चालीस किलोमीटरक दूरीपर छैन। जाबत किलोमीटरक नाप नइ आएल छल ताबत चौबीस-पचीस माइल बुझै छला, माने बारह कोस, मुदा आब तँ माइल मेटाइये गेल आ कोस सेहो कोसो दूर भेल जा रहल अछि। ओना, पहिने दुनू गाम–माने रूपलाल भाइक गाम- 'सोहनपुर' आ मात्रिक- 'रघुनाथपुर'–दरभंगे जिलामे छल मुदा आब सोहनपुर मधुबनी जिलाक उतरबरिया-पुबरिया आ 'रघुनाथपुर' दरभंगा जिलाक दछिनबरिया-पुबरिया दिगारमे पड़ैए।

बिआहक दिन सबेरे-सकाल रूपलाल भाय जलखै कऽ पोताक संग मोटर साइकिलसँ मात्रिक विदा भेला। ओना दरभंगा जिलाक पुबरिया इलाका–जे धार-धूरक इलाका छी, रस्ता-पेरा नीक नहियेँ छै, मुदा रूपलाल भाय मात्रिक नइ जेता से मन नहि मानि रहल छैन, जेबे करता।

चालीस किलोमीटर जाइमे मोटर साइकिलसँ घन्टो भरिसँ कम्मे समय लगैए मुदा रस्ता-पेराक दुआरे अढ़ाइ-तीन घन्टा लगलैन। साढ़े दस

बजे रूपलाल भाय मात्रिक पहुँचला। बेटीक बिआह छी तँए सभ समांग सभ दिस काजमे लागल छल। ओना, अधिकलाल भाय पचासी बर्ख टपि चुकल छैथ। देह-दशासँ तँ दस बर्ख आउरो जीबे करता मुदा कानसँ तेहेन बहीर भऽ गेल छैथ जे अपनाकेँ अकाजक मानि नेने छैथ। भरि दिन दुआरे-दरबज्जापर रहै छैथ। दरबज्जेपर खेनाइ-पीनाइ-सुतनाइ-बैसनाइ होइ छैन आ दरबज्जाक आगूमे नहाइ-धोइले कलो छेबे करैन। बैसल-बैसल जखन मन अकछा जाइ छैन तँ दरबज्जेक आगूमे टहैलियो-बुलि लइ छैथ। परिवारमे एते सुविधो बेटा सभ देनहि छैन जे समैपर चाह, जलखै आ खेनाइ-पीनाइ सेहो भेट जाइ छैन।

तैबीच अधिकलाल भाय नहाइले कलपर पहुँचले छला कि रूपलाल पहुँचला। रूपलालकेँ पहुँचते अधिकलाल भाय नहाएब छोड़ि कलपर सँ दरबज्जा दिस बढ़ला।

तैबीच मोटर साइकिलसँ उतैर अधिकलाल भाय लग आबि पएर छुबि गोड़ लगलखिन, मुदा बजला किछु नहि। किए तँ रूपलाल भायकेँ सेहो बुझले छैन जे अधिकलाल भाय सोलहन्नी बहीर छैथ। तँए कुशल-समाचार किछु ने पुछलखिन। ओना, अधिकलाल भाय कानेटा सँ बहीर छैथ मुदा बोलियोमे टाँस छैन्हे आ आँखियो नीक रहने देखबो करिते छैथ।

घरे-अँगनामे समांग काज करै छल तँए रूपलाल भाइक नाओं सुनिते एकाएकी सभ दरबज्जापर आबए लगल।

अधिकलाल भायकेँ गोड़ लागि रूपलाल कलेपर पहुँच हाथो-पएर धोलैन आ गरदा-सभ जे देहपर लटकल छेलैन तेकरा अंगपोछासँ झाड़ि लेलैन। दुनू ममियौत-पिसियौत भाय दरबज्जापर आबि बैसला। तैबीच अधिकलालक जेठ बेटा–जीबछ–दरबज्जापर अबिते रूपलाल भायकेँ गोड़ लागि बाजल- “काका, रस्ताक झमारल छी, तहूमे तेहेन रौद अछि जे

तबैध गेल हएब तँए पहिने कनी शरबत पीब लिअ। पछाइत नहाएब-सोनाएब।"

जीबछक बात रूपलाल भायकेँ सोहंतगर लगलैन तँए चुपे रहला। मुदा बिच्चेमे अधिकलाल भाय रूपलालकेँ कहलकैन-

"भाय, गरदा-धूरा सौंसे देह पड़ल छह, तँए पहिने नहा लएह।"

ओना, रूपलाल भाइक मन रहैन जे गरमाएल आएल छी तँए पहिने कनी काल जीरा ली, पछाइत नहाएब-सोनाएब। मुदा तैबीच दोहरा कऽ अधिकलाल भाय बजला-

"भाय, पहिने नहा लएह, पछाइत जे हेतै से बुझल जेतइ।"

अधिकलाल भाइक विचार रूपलाल भायकेँ कनी अधलो बुझि पड़ैन मुदा जेठ भाय दुआरे विचारकेँ रोकबो नीक नइ बुझैथ। एकताले अधिकलाल भाय तेहरा देलखिन-

"भाय, पहिने नहा लएह।"

तैबीच गिलास आ लोटामे शरबत नेने सुशील पहुँच गेल। सुशीलक हाथमे शरबत देखि अधिकलाल भाय आगू बजैसँ दम कसलैन।

रूपलाल भाय शरबत पिबते रहैथ कि पानो आबि गेलैन। पान खा रूपलाल भाय जीबछकेँ पुछलखिन-

"बौआ, केते गोरेक परिवार छह?"

ओना, रूपलाल भाय सालमे एक बेर, दू बेर मात्रिक अबिते छैथ, मुदा टोल जकाँ ममियौतक परिवार बनि गेल छैन। चारिटा बेटा आ तीनटा बेटीक संग पोता-पोती, नाइत-नातीनसँ घर भरल छैन। परिवारो तँ सभ दिन असथिरे नइ रहैए। धियो-पुता बढ़ने तँ परिवार बढ़िते रहैत अछि। ओना, मृत्यु भेने घटबो करैए। मुदा जन्म-मृत्युकेँ जनैमे कनी अन्तर अछिए। माने ई जे बाल-बच्चाक मृत्यु हौउ आकि चेतन-बुढ़क ओ

घटना रूपमे बुझल जाइए तँए ओकर परसार बेसी होइ छै मुदा जन्म तँ से नइ छी, ओ तँ घटनाक घटित नहि वृद्धिक बढ़त छी, तँए ओते नइ पसरैए। तहूमे बहरबैया माने परदेशिया परिवार भेने आरो झँपाएल रहिते अछि। मने-मन परिवारक हिसाब जोड़ैत जीबछ बाजल-

"काका, एकसँ केतेक भेल से कहै छी।"

एकसँ अनेक भेल वा एकसँ एक्कैस भेल ई बात रूपलाल भायकेँ चनका देलकैन। मनमे उठलैन- छिड़ियाएल जगह रहने परिवारक रूप सेहो छिड़िया जाइते अछि मुदा एक विचारधारा रहने परिवारक धारमे केतौ बान्ह पड़ैक संभावना नइ रहै छइ। जेकरा लोक एकसँ एक्कैस मानि चलैए...।

मुदा लगले मनक कूह हटलैन माने रूपलाल भाइक मनकेँ जे कुहेस छाड़ए लगल छेलैन ओ छँटलैन। छँटिते बजला-

"से की बौआ?"

तैबीच जीबछ अपन परिवारक–जैठामसँ रूपलाल भाय फुटला तैठाम तकक–हिसाब मने-मन सेरिया नेने छल। रूपलाल भाइक मुहसँ खसिते जीबछ बाजल-

"काका, हमर परबाबा भेला आ अहाँक नाना। तैठामसँ कहै छी।"

बाँसक बीट जकाँ रूपलाल भाय ममहरकेँ बिटिया कऽ पकड़ेलैन। पकड़ाइते मन असथिर भेलैन। बजला-

"बड़बढ़ियाँ।"

रूपलाल भाइक बात सुनि जीबछ सहैट कऽ परबाबा लग पहुँच सहचेत होइत बाजल-

"परबाबाकेँ दू सन्तान। एक बेटी, जे अहाँक माए आ हमर परदीदी भेली। आ एक बेटा जे अहाँक मामा आ हमर बाबा भेला।"

ओना दीदी तक रूपलाल भाय बुझै छला मुदा भातीजक मुहेँ 'परदीदी' सुनि मनकेँ आरो शान्त केलैन।

शान्त ई केलैन जे बुधि बपजेठ होइए तँए जँ निच्चोँ-खाढ़ीक मुहेँ आबए तँ मानि ली...।

मुड़ी डोलबैत रूपलाल भाय बजला-

"हँ, से तँ भेबे केलाह।"

जीबछ बाजल-

"परदीदीक हिसाबक भार अहाँक भेल आ परबाबाक हमर।"

रूपलाल भाय बजला-

"सेहो बड़बढ़ियाँ।"

जीबछ बाजल-

"बाबाकेँ तीन बेटा आ तीन बेटी। तीनू बेटीक हिसाब छोड़ि दइ छी। तीनू भाँइसँ हमर तेरह भैयारी अछि। तेरहो भाइकेँ बाबन-तीरपनटा सन्तान अछि।"

जीबछक बात सुनि रूपलाल भाइक मुहसँ मखानी लाबा फुटए लगलैन, मुदा मने-मन अपनो परिवारपर नजैर खिरौलैन तँ बुझि पड़ैन जे ओइसँ हमरे कोन कम अछि। भलेँ अखन अठारहे गोरेक परिवार किए ने हुअए मुदा छी तँ टपले। मनुक्खक बाढ़ि कि अल्लू-कोबी जकाँ होइए जे कोबीमे एकटा फल हएत आ अल्लूमे कमसँ कम आठटा फड़ हेबे करत। भलेँ छोट हुअ कि पैघ खाली रोगहा गाछ छोड़ि कमसँ कम आठटा फड़बे करैए।

मुदा मनुक्खक वंश तँ से नहि अछि केतौ दर्जनो फड़त आ केतो एकोटा फड़त आ केतो नागा सेहो हेबे करत।

ओना अधिकलाल भायकेँ मने-मन दुनू गोरेक बीचक–माने जीबछ

आ रूपलालक–गप-सप्पसँ खुशियो होनि आ तामसो उठैत रहैन। तामसक कारण रहैन जे अधिकलाल भाय पएरे सोहनपुर अबै-जाइ छला तँए चलैक थकान आ थकानक-भुखान केहेन होइए से अपन अंगेजल रहबे करैन। तँए होनि जे पहिने रूपलाल नहा कऽ खा लैथ पछाइत निचेनसँ गप-सप्प हेतइ। ओना दस बर्खसँ अधिकलाल भाय सोहनपुर नइ आएल छला। तँए बान्ह-सड़क आ गाड़ी-सवारी मनमे नइ उठै छेलैन।

हलाँकि रूपलाल सेहो गप-सप्प करैसँ बर्जित करए चाहै छला। तेकर कारण मनमे रहैन जे बेटी-बिआहक दिन छी, रंग-रंगक अनेको काजक बाढ़ि तँ परिवारमे आबिये गेल अछि, तँ जँ ओकरा छोड़ि गप-सप्प करब तँ काज पछुए-बे करत। जे अनुचित तँ भेबे कएल। अखन तँ ओतबे समय गप-सप्पमे गमेबा चाही जेते काजक दौड़क अछि, माने काजसँ जुड़ल अछि। परिवारक ऐतिहासिक गप तँ पछाइतो निचेन भेलापर कएल जा सकैए। मुदा जखन घरबैये ओइ महतकेँ मानि नइ दऽ रहल अछि, तखन...।

मुदा लगले रूपलालकेँ अपने मनक विचार उत्प्रेरित केलकैन। उत्प्रेरित ई जे जइ काजे आएल छी आ सोझमे बाधित भऽ रहल अछि तैठाम मुँह बन्न राखब–माने नइ बाजब–विचारक चोरि तँ भेबे कएल। ओना परिस्थितिवश अनेको खण्डन-मण्डन अछि मुदा से अखन नहि। ‘बहिरा नाचे अपने ताले’ जीबछक संग रूपलाल गप-सप्प करै छला आ अधिकलाल भाय मने-मन अपन जिनगीक इतिहासक पन्ना उनैट रहल छला।

उनटैत-उनटैत एकटा ओहन जगह आबि गेलैन, जैठाम अधिकलाल भाइक मन फुटि पड़लैन। फुटिते आँखिमे नोर लबालब भरि गेलैन। जे रूपलालो, जीबछो आ परिवारक आनो-आनो देखए लगला। देवालयक देव जकाँ अधिकलाल भाइक सुरता मुरत बनि गेलैन।

टकटकी लगा सभ अधिकलाल भायकेँ देखए लगला।

समयक अवसर पाबि अधिकलाल भाइक विचार मनकेँ उद्वेलित केलकैन। उद्वेलित होइते मनमे उठलैन- डारिक चुकल बानर आ अवसरक चुकल मनुक्ख, दुनू बरबैर! कमसँ कम अखन एते तँ हेबे करत जे पाँच बर्खक बच्चा माने ओहन बाल-बोध जेकर बुधि अखन अँकुरिये रहल छै, आ अस्सी बर्ख आगूक जिनगी नेने ठाढ़ अछि, तैठामसँ लऽ कऽ सियान धरिक बीच जँ अपन इतिहास नइ लिख लेब तँ परिवारक इतिहास केना गढ़ल जाएत। के एहेन दाता-दिनानाथ छैथ जे हमरो सन लोककेँ ऐ धरतीपर देखता।

पचासी बर्खक अधिकलाल भाय सत्तैर बर्खक पिसियौत भाएकेँ कहलखिन- "रूपलाल, तोरा ऐठाम बीस बरख हरवाहि केने छी।"

अधिकलाल भाइक बात मुहसँ खसिते सौन-भादोक बदरियाएल मेघ जकाँ वातावरण बनि गेल। रूपलालक मनमे अधिकलाल भाइक बात विस्तारसँ बुझैक जिज्ञासा जगलैन।

जिज्ञासु रूपलाल बाजल-

"से की भाय?"

'से की' सुनिते अधिकलाल भाइक दुनू आँखिसँ दुखक ओ नोर जे सुखि कऽ सुखिया-सुखिया पचासी बर्खक नयन-कोणसँ टघरैत प्रेमिल धार बनि निच्चाँ उतरए लगलैन।

ओना बचपनक देखल रूपलालो भायकेँ छेलैन्हे, मुदा ऐठाम तँ परिवारक निच्चासँ ऊपरक खाढ़ीक नजैर नजरा देलकैन, तँए अपनो ओही रूपकेँ पकड़ैत रूपलाल पुछलखिन-

"से कहिया भाय साहैब?"

'से कहिया' सुनिते अधिकलाल भाइक मनमे एकाएक ओ समय छड़ैप कऽ आबि गेलैन जइ समय दस बर्खक बच्चा छला, मोन पड़लैन-

पिताक तीनू भाँइक भैयारीमे भिनौजी भऽ चुकल छल। नबे बर्खक रही तहिये बाबू मरि गेला। ओही बेर पूबसँ कोसीक पलाड़ी आ पच्छिमसँ कमलाक पलाड़ी आबि रघुनाथपुर सहित केतेको गामकेँ बाढ़िक इलाका बना देलक। एक जोड़ बरद आ सात बीघा खेत अपन हिस्सामे छल। माए बच्चेसँ मेहनती छेली।

ओना, भार पड़ने कोढ़ियोकेँ पानि चढ़िये जाइ छै मुदा से नहि, छेहा किसानक बेटी छेली, तँए किसानी जिनगीक सभ अनुभव छेलैन। माल-जाल पोसैसँ लऽ कऽ खेती-पथारीक सभ लूरि सीखनौं छेली आ करितो छेली। पिताकेँ मुइला पछाइत माए कहलक- 'अधिकलाल, किछु भेलौं तँ हम जनिजातिये ने भेलौं। हर जोतब तँ लोक हँसबो करत आ खिदहाँसो करत। आब तँ तोहूँ गोठगो भेलह। अपन काज छी, नइ एक दिने तँ दू दिने चाहे तीन दिने कए तँ सकबे करै छह। बाँकी सभ काज हम सम्हारि लेब।' नबे-दस बर्खक रहबे करी, हरवाहि करब शुरू केलौं...।

अपन जिनगीक अनुभवकेँ हथियार बना अधिकलाल भाय बजला- "भाय, तहिया हम बारह बर्खक छेलौं, गाममे छहमसिया बाढ़ि पकैड़ लेलक। माने शुरू जेठसँ कातिक तक बाढ़िक पानिसँ गाम डुमए लगल, जइसँ छह मासक खेतीए दहा गेल। माए कहलक- 'बौआ, अपना लूरि छह, दीदीए ऐठाम जा हरवाहि करह।' अपनो नीक बुझि पड़ल, किए तँ बाढ़िक पानि लगने गाछी-कलम तँ सुखिये गेल जे गामक उजार सेहो शुरू भऽ गेल। ओइ समय कमला धार गामसँ कोस भरि पच्छिम आ कोसी तीन कोस पूबमे बहैत रहइ।"

ओना रूपलालकेँ माए सेहो सभ बात कहने रहथिन, बुझले रहैन। मुदा ऐठाम तँ मात्रिकोक परिवार आ कुटुमो परिवारक लोक सभ छैथ, जिनका सभकेँ नइ बुझल छैन, जँ बुझलो हेतैन तँ मनसँ हटने बिसैर गेल

हेता, तँए सभकेँ बुझब जरूरी बुझि रूपलाल पुछलखिन- “भाय, जखन गामसँ माने रघुनाथपुरसँ दुनू धार हटले छल तखन केना..?”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भायकेँ जेना मोन पड़लैन तहिना बजला-

“भाय, गाम केना उपटल से पछाइत कहबह। पहिने ओइसँ पैछला सुनि लएह। शुरूहे जेठमे जखन धार फुलाएब शुरू होइ, तखने जोड़ो भरि बरद नेने तोरा गाम–सोहनपुर–चलि जाइ छेलौं।”

बिच्चेमे रूपलाल पुछलकैन-

“सोहनपुर जाइमे केते समय लगए?”

अधिकलाल भायकेँ बुझले बात रहैन। बजला- “रातियेमे माए रोटी-तरकारी बना कऽ रखि लिअए आ जखने तीन बजे भोरमे चिड़ै डकए लगै आकि उठा दिअए। उठिते दुनू बरदोकेँ खाइले दऽ दिऐ आ अपनो मुँह-हाथ धोइ कऽ खा ली। जखन रस्ता-पेरा सुझह लागए माने देखए लगिऐ कि संग केने माए तीन कोस आगू रसियारी तक टपा घुमि जाए आ हम भरि दिने तोरा ऐठाम पहुँची।”

बिच्चेमे रूपलाल पुछलकैन-

“रस्ता-पेरामे बरद हरानो करैत रहए?”

एकाएक जेना अधिकलाल भाइक मन अपन सत्तैर-बहत्तैर बर्ख पूर्व कएल काजपर पहुँच गेलैन। पहुँचबो केना ने करितैन। अधला काज थोड़े छी जे पनचैतीक पंचो सभ कहैत जे अखनसँ बिसैर जाउ। जे जिनगीक जीवंन्त इतिहास छी ओकरा केना लोक बिसैर जाएत। अधिकलाल भाय बजला-

“भाय, जइ बरदक संग चौबीस घन्टाक सम्बन्ध रहै छल ओ रस्ता-पेरामे हरान किए करैत, कोनो कि मनुक्ख छल जे सभ किछुकेँ बिसैर पॉकैटमारी कैये लइत। पशु तँ पशु होइए किने।”

गप-सप्पक वृहद रूप देखि रूपलाल भाय जीबछकेँ कहलखिन-

"बौआ, तोहर बेटीक बिआह छिअह, हम अनतैक भेलौं आ भाय बहीरे छैथ, दुनू निकम्मे भेलौं तँए मड़बाक तैयारी तँ तोरे करह पड़तह।"

रूपलालक विचार जीबछ जेना बुझि गेल तहिना बाजल-

"हँ काका, कौल्हुको कएटा काज पछुआएले अछि!"

जीबछकेँ एकाएक उजगुजाइत देखि रूपलाल कहलखिन-

"पछुआएल अछि तँ की हेतै, बिआहक प्रकरणो तँ अखन पछुआएले छह, आ साँझ तक ओरियान-बात करैक समैयो छहे। सभ समांग हाथे-पाथे लगि जाह, लगले काज समटा जेतह।"

काज करैबला सभ काज दिस बढ़ला। खाली आठ-दसटा धिया-पुता आ अधिकलाल भाइक संग रूपलाल दरबज्जापर रहि गेला।

लोकक भीड़ हटिते अधिकलाल भाइक मनमे खुशी एलैन। खुशीक कारण भाइक मनमे जे रहल होनि मुदा अपना बुझि पड़ल जे जेहेन शान्त-चित्तसँ अपन जिनगीक बात अधिकलाल भाय करए चाहै छैथ ओहने शान्ति भेटलैन अछि। धिया-पुताकेँ दमसबैत अधिकलाल भाय बजला-

"चुपचाप शान्तसँ मनुक्खक बच्चा जकाँ बैस कऽ दुनू भैयारीक गप-सप्प सुनै जाइ जो नहि तँ जे जे कच्चर-कुच्चर करमे तेकरा कान पकैड़-पकैड़ भगेबौ।"

मुस्कियाइत अधिकलाल भाय रूपलाल दिस देखए लगला। ओना रूपलालो अपन बदलल जिनगीक विचारे अधिकलाल भाइक बदलल रूपकेँ देखिये रहल छला। जइसँ अधिकलालो भाइक मनमे बिसवास जागिये गेल छेलैन। किए ने जगतैन, जिनगीमे बिसवास तखन जगबे करै छै किने जखन जिनगीक अनुरूप लोक समयक मुकाबला करैत चलैए। से तँ अधिकलाल भायकेँ छेलैन्हे।

जहिना मनक बिसवास जगिते लोक बताह जकाँ बड़बड़ाए लगैए तहिना बड़बड़ाइत अधिकलाल भाय बजला-

"भाय, आइ केहेन शोभा-सुन्दर अछि जे दुनू भाँइ एकठाम बैस घर-परिवारक यज्ञकृत्ति देखि रहल छी!"

अधिकलाल भाइक कान ने बहीर भऽ गेल छैन मुदा जहिना मन निरोग छैन तहिना देहो-दशा चाकर-चौरस छैन्हे।

रूपलाल बजला-

"भाय, आब तँ लोक तीस-चालीस बर्ख धरि केन्सर-सन रोगकेँ देहमे पचबैत जीब सकैए, अहाँ तँ सहजे सोल्होअना निरोग छी, तखन पचास बर्ख आरो किए ने जीब।"

ओना, कानक बहीर अधिकलाल भाय छैथ तँए सोल्होअना नै सुनि सकला मुदा इशारामे पनरहअना तँ बुझबे नहि मानबो केलैन। मानबो किए ने करता- कोन आन्हर अपनाकेँ आन्हर बुझैए आकि बहीरा बहीर बुझैए जे अधिकलाल भाय बुझितैथ। सभ जखन अपने ताले नाचैए तखन अधिकलाले भाय किएक नहि नचता।

नचैत अधिकलाल भाइक मुहसँ निकललैन- "भाय की कहबह आ केते कहबह। हमरे सन अखज लोक अछि जे अखनो तक जीबैए।"

अधिकलाल भाइक बात जेना रूपलालक मनकेँ हिला देलकैन, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत अधिकलाल भाइक कानमे मुँह सटा पुछलकैन-

"भाय साहैब, सोहनपुरमे हरवाहियेटा करै छेलिऐ आकि दोसरो-तेसरो काज?"

कानमे सटि कऽ कहने रूपलालक सोल्होअना बात अधिकलाल भाय सुनि बजला- "भाय माइयक तेते दुलारू बेटा छेलौं जे हरवाहि छोड़ि ने दोसर-तेसर काजे करए दिअए आ ने सीखए देलक। सभ काज अपने

करए।”

बजैत-बजैत अधिकलाल भाइक मुँह मुस्कियाए लगलैन।

भाइक मुस्की देखि रूपलाल बजला-

“एतेटा जिनगी एक्के लुरिये जीब लेलिऐ।”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भाय वेरागी जकाँ बजला-

“भाय, दुनियाँ किछु छी जे अनेरे हाय-हाय करितौं। एकोटा लूरिकेँ जँ बिसवासक संग, माने ओकरे वृहद ज्ञान बनबैत, जिनगीमे उतारि चलैत रही तँ जिनगी कटिते अछि।

ओना वृन्दावनक जंगल-झाड़, बाध-बोन, धार-धुर आ गाछ-बिरीछपर झुलैत रासमे रसियाइत हँसैत-खेलैत राधा-कृष्णक विराट जिनगीक क्रिया-रूप सबहक सोझमे अछिए।”

अधिकलाल भाइक मनक बुलन्दी देखि रूपलाल बजला-

“भाय साहैब, जखन कोस भरि पच्छिम कमला-धार आ तीन कोस पूब कोसी-धार छल तखन गाम केना उजैर गेल?”

रूपलालक बात सुनि अधिकलाल भाय पाछू उनैट साठि-सत्तैर बर्ख पैछला धियान केलैन। धियानमे अबिते बजला-

“भाय, कोसीमे बान्ह बनल, कमला ओहिना छल, माने छहर नइ बनल रहै, उत्तरमे माने तोरा सभ दिस जमीन ऊँच अछि, ओम्हरेसँ धार अबैए। दुनू कातसँ ऊपरका पानि घेराइत अबैत बान्ह तोड़ि देलक आ पच्छिम दिस धारे खुनि देलक, जइसँ सन्मुख कोसी एकेबेर दू कोस पच्छिम घुसैक आएल। तहिना पच्छिमसँ कमला सेहो गाम आबि धार खुनि लेलक, जइसँ गामे उपैट गेल।”

बजैत-बजैत अधिकलाल भाइक मन महाभारतक अभिमन्युक मन जकाँ बेथित हुअ लगलैन। जखन अभिमन्यु चक्रव्यूहमे फँसल छला।

जिनगीमे ओहन अनेको समय अबिते अछि जैठाम जीवन-मृत्यु करीब रहैए आ एहनो तँ ऐछे जैठाम दुनूक दूरीमे अन्तर सेहो रहिते छइ।

अधिकलाल भाइक मन्हुआइत मुँह देखि रूपलालक मनमे उठलैन जे कहिऐन- ‘भाय साहैब! नव घर आ नव घराड़ी सभकेँ ने नीक लगै छै, तइले अहाँ किए मन्हुआइ छी।’ मुदा बजला नहि।



शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस 2017

Notes